तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 10, अंक- 9-10, अगस्त-सितंबर 2022 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

नई पीढ़ी का कौशल विकास एक राष्ट्रीय आवश्यकता है और यह आत्मनिर्भर भारत की नींव है।

-श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री

सरस्वती वंदना

हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
हे विद्यादायिनी, हे वीणापाणि।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
चिंतन का सार रूप, ज्ञान का आधार रूप
श्वेत-वस्त्र धारण कर, अज्ञान का संहार रूप
हे श्वेतांबरी, हे वागेश्वरी।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
मुस्कान से उल्लास बोध, वीणा से भाव संचार
पुस्तक से ज्ञान बोध, माला से ईश-सत्कार
हे ज्ञान प्रदायिनी, हे अक्षरादायिनी।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
वेद की पावन ऋचाओं में, रामायण-महाभारत में
प्रकृति के वरदान में, देव निर्मित धरा में
हे अन्नवती, हे उदकवती।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।
कलम-शब्दसृजन, भाव-अनुपसृजन
शक्ति-सत्यसृजन, नवल-रूपसृजन
हे वेद स्मृति, हे वेदवती।
हे माँ शारदे, हे माँ शारदे।।

मनोज कुमार लाकड़ा
हिंदी अध्यापक
रावमा विद्यालय, बजघेड़ा
जिला गुरुग्राम, हरियाणा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अगस्त-सितंबर 2022

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ.अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

विवेक कालिया
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-II)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"स्किल, रि-स्किल और अप-स्किल के मंत्र को जानना, समझना और इसका पालन करना हम सभी के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

-प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

- व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा ने गढ़े नये कीर्तिमान 5
- दक्ष इन्क्यूबेशन सेंटर लगाएँगे विद्यार्थियों के सपनों को पंख 12
- टूलकिट वितरण : हुनर को मिली और पैनी धार 14
- मीडिया एनिमेशन में है रोज़गार भरपूर 16
- बहुत माँग है पेशेंट केयर असिस्टेंट की 17
- ऑटोमोबाइल-क्षेत्र में अपार संभावनाएँ 18
- अपेरेल एवं फैशन डिज़ाइनिंग बनता जा रहा विद्यार्थियों की पसंद 19
- ब्यूटी एंड वैलनेस स्किल में विद्यार्थियों की बढ़ती रुचि 20
- टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी : गतिशील व्यवसाय 20
- आप नौकरी माँगने वाले नहीं, प्रदान करने वाले बनेंगे 21
- व्यावसायिक शिक्षा- कविता 21
- एनईपी-2020: व्यावसायिक शिक्षा को सशक्त बनाने की पुनर्कल्पना एवं रणनीतियाँ 22
- तिरंगे का सफर 30
- गायन, वादन एवं नृत्य की त्रिवेणी अरमान 31
- Employment perspective in NEP – 2022 32
- Tell me a Story 34
- The Kitchen Clinic 35
- The Gleam 36
- Plantae: our Life 37
- My Kitchen Garden 38
- Counselling and Guidance 40
- The Match 42
- Prison of the Mind 43
- Courses After +2 44
- Amazing Facts 48
- General Knowledge Quiz 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

अकादमिक ज्ञान के साथ-साथ कौशल विकास भी

शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा तब तक अधूरी रहेगी, जब तक उसे रोज़गारोन्मुखी बनाने की बात नहीं होगी। एक सामान्य जन यही सोचकर शिक्षा ग्रहण करता है कि इसके माध्यम से वह आजीविका अर्जन करेगा। जब ऐसा नहीं हो पाता तब उसके भीतर अपार हताशा पनपती है और बेरोज़गारों की एक लंबी पंक्ति दिखाई देने लगती है। ऐसे में शिक्षा-व्यवस्था पर भी उँगली उठना लाज़िमी है। ऐसा नहीं है कि देश में आज़ादी के बाद शिक्षा को रोज़गारमुखी बनाने के प्रयास नहीं हुए। आईटीआई, पोलिटेक्निक तथा अन्य तकनीकी शिक्षण संस्थान लगातार ऐसा कार्य करते रहे हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि व्यावसायिक शिक्षा को चरणबद्ध तरीके से विद्यालय स्तर से ही चलाने व उच्चतर शिक्षण संस्थानों में एकीकृत करने की दिशा में अभी भी काफी काम करने की दरकार है। सरकारी व व्यावसायिक क्षेत्रों में भी आजकल उच्च स्तर के कौशल की माँग जिस प्रकार से बढ़ रही है उसे देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि हर विद्यार्थी के भीतर कुछ कौशल भी विकसित किए जाएँ। विद्यालय स्तर पर ही मुख्यधारा की शिक्षा का सामंजस्य व्यावसायिक शिक्षा के साथ बिठाया जाए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में व्यावसायिक शिक्षा पर काफी बल दिया गया है। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि आरंभिक शिक्षा से ही व्यावसायिक शिक्षा के अनुभव प्रदान करते हुए इसे चरणबद्ध ढंग से विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में मुख्यधारा की शिक्षा के साथ-साथ चलाया जाए। विद्यार्थी बालपन से ही न केवल कुछ व्यावसायिक कौशलों को सीखें बल्कि श्रम के प्रति गरिमा का पाठ भी पढ़ें। हालांकि हरियाणा एनएसक्यूएफ कार्यक्रम के तहत इस दिशा में काफी सराहनीय कार्य कर रहा है जो दूसरे राज्यों के लिए भी एक आदर्श बने हुए हैं।

प्रस्तुत अंक 'विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षण' पर केंद्रित किया गया है। आपके अमूल्य विचारों व सुझावों की हमें हमेशा की तरह प्रतीक्षा रहेगी।

- संपादक

व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में हरियाणा ने गढ़े नये कीर्तिमान

रजनीश शर्मा

प्रारंभ काल से चली आ रही शिक्षा ज्ञान आधारित थी, जिसमें बच्चा आधारभूत ज्ञान जैसे -गणना करना, भाषा में संवाद करना, भाषाई लेखन करना आदि सब सीखता था। लेकिन, जैसे ही वह स्कूली शिक्षा या विश्वविद्यालय की शिक्षा पूरी कर निकलता था तो उसे अपने करियर के लिए आगे बढ़ने के लिए फिर से अन्य कोर्स करने होते थे। उससे यदि पूछा जाता था कि आप क्या कर सकते हैं? तो वह यही कहता था- श्रीमान् मैंने मास्टर डिग्री की हुई है। आप जो भी सिखाएँगे, मैं कर लूँगा, फिर किसी भी संस्था में युवा को पहले 3 से 4 वर्ष वहाँ के कार्य के लिए तैयार किया जाता था। इतने में वह युवा उस संस्था को छोड़ कर किसी अन्य संस्था में कार्यभार ग्रहण कर लेता था। इस कारण संस्थाओं ने और उद्योगपतियों ने यह आवश्यकता महसूस की कि उन्हें

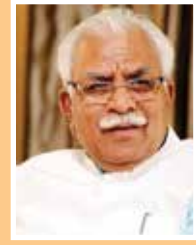

युवाओं के कौशल विकास के लिए सरकार प्रतिबद्ध

हरियाणा सरकार मौलिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के स्तर पर शिक्षा के सार्वभौमीकरण पर बल देते हुए शिक्षा के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन लाकर युवाओं को कौशल प्रदान कर उन्हें रोज़गार योग्य बनाने और कुशल मानवशक्ति के रूप में तैयार करके राज्य की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बदलने के लिए प्रतिबद्ध है। अनुसंधान व नवाचार में जिन श्रेष्ठ कार्यों की ओर अतीत में ध्यान नहीं दिया गया, हम उनकी ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं। शिक्षा के साथ विद्यार्थियों की रोज़गारपरकता को बढ़ाने के लिए अनेक कौशल (रिटेल, एग्रीकल्चर, ऑटोमोबाइल, अप्पेरल फैशन डिजाइनिंग, आईटी/आईटीईएस, सिक्योरिटी, ब्यूटी एंड वैलनेस, पेशेंट केयर असिस्टेंट, फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स, बैंकिंग एंड फाइनेंस सर्विसेज, ट्रेवल एंड टूरिज्म आदि) विषयों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हरियाणा देश का पहला राज्य है जहाँ पर स्कूली स्तर पर एनएसक्यूएफ कार्यक्रम आरंभ किया गया था। आज यह कार्यक्रम बड़ी सफलता के साथ चल रहा है। गत वर्ष तक यह कार्यक्रम 1074 माध्यमिक व वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में चल रहा था जिससे करीब डेढ़ लाख विद्यार्थी लाभान्वित हुए थे। वर्तमान शैक्षणिक-सत्र में 1074 से बढ़ा कर 1186 विद्यालयों में प्रारंभ कर लगभग 2 से 2.5 लाख विद्यार्थियों को नामांकित करने का लक्ष्य है।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

केंद्रित उद्देश्य-

- सभी माध्यमिक/वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा का सामान्य शैक्षणिक शिक्षा के साथ एकीकरण।
- छात्रों की रोज़गार क्षमता और उद्यमशीलता की क्षमताओं को बढ़ाना और काम के माहौल के बारे में समर्थ बनाता है।
- छात्रों के बीच विभिन्न करियर विकल्पों के बारे में जागरूकता पैदा करना ताकि वे अपनी योग्यता, क्षमता और आकांक्षाओं के अनुसार चयन करने में सक्षम हो सकें।
- उन्हें आत्म-निर्भर बनाने के लिए सीखते हुए कमाने का कौशल प्रदान करना।

हरियाणा में वोकेशनल एजुकेशन का कार्यान्वयन-

हरियाणा देश में व्यावसायिक शिक्षा की नींव रखने वाला पहला राज्य था। आइये इसके सफर पर आगे बढ़ते हुए प्रारंभ से अब तक इसके स्वरूप को जानते हैं।

वोकेशनल एजुकेशन परियोजना भारत-सरकार द्वारा आबंटित एक पायलट प्रोजेक्ट के रूप में शैक्षणिक सत्र 2012-13 में हरियाणा राज्य के 40 स्कूलों में 4 एप्लाइड स्किल्स आईटी, रीटेल, ऑटोमोबाइल एवं सिक्योरिटी (प्रत्येक स्कूल में 2 एप्लाइड स्किल्स) में

ऐसे कुशल युवाओं की जरूरत है, जिन्हें उनकी संस्था से संबंधित हुनर का ज्ञान पहले से हो। उन्हें बस दिशा-निर्देश देने की जरूरत हो। इसके साथ-साथ बढ़ती बेरोज़गारी को नियंत्रित करने के लिए ऐसे उपक्रम की आवश्यकता थी, जो उन विद्यार्थियों को स्वावलंबी बनाए जो पारंपरिक शिक्षा को दसवीं या बारहवीं के बाद जारी न रख पाने पर स्वरोज़गार करना चाहते थे, क्योंकि यदि आप कोई भी अपना रोज़गार शुरू करना चाहें तो उसके लिए आपको हुनर के प्रशिक्षण की जरूरत होगी, उसके लिए 2012 में हरियाणा में एक पायलट प्रोजेक्ट की नींव रखी, जिसे एनवीईक्यूएफ का नाम दिया गया। दिसम्बर 2013 में इसका नाम परिवर्तित कर इसे एनएसक्यूएफ का नाम दे दिया गया जो कि देश भर में अब किसी परिचय का मोहताज नहीं है।

नेशनल स्किल्स क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क एक राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत शिक्षा और योग्यता-आधारित कौशल फ्रेमवर्क है जो सामान्य और व्यावसायिक शिक्षा के बीच रोज़गार के कई मार्ग खोलता है। व्यावसायिक शिक्षा शिक्षार्थियों को शिक्षा और कौशल प्रणाली में किसी भी प्रारंभिक बिंदु से उच्च स्तर तक प्रगति करने में सक्षम बनाती है। इसमें कक्षा नौवीं से ही विद्यार्थी अपनी पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक शिक्षा को ग्रहण करने के काबिल बनते हैं और गर्व से अपनी योग्यता को डिग्री के साथ-साथ हुनर के रूप में भी पेश करने के काबिल बनते हैं।

4,840 छात्रों के नामांकन के साथ प्रारम्भ की गई थी, जो प्रतिवर्ष 100 से 250 विद्यालयों को तेज़ी से जोड़ते हुए 2021-22 तक 1074 उच्च/वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में 12 सेक्टर्स (1. आईटी/आईटीईएस, 2. रिटेल, 3. ऑटोमोबाइल, 4. स्किल्स सिक्योरिटी, 5. ब्यूटी एंड वैलनेस, 6. हेल्थकेयर, 7. फिज़िकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स, 8. एग्रीकल्चर, 9. टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी, 10. मीडिया एंटरटेनमेंट, 11. अपैरल फैशन डिजाइनिंग, 12. बैंकिंग, फाइनेंसियल सर्विसेज एंड इन्शुरन्स) तक पहुँची, सत्र 2021- 22 में 1,86,903 विद्यार्थी नामांकित किये गए थे। वर्तमान शैक्षणिक-सत्र में 1074 से बढ़ा कर 1186 विद्यालयों में प्रारंभ कर लगभग 2 से 2.5 लाख विद्यार्थियों को नामांकित करने का लक्ष्य है। यह भी बता दें हरियाणा में इस शिक्षा को हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा सफल बनाने का दिन-रात प्रयास किया जा रहा है।

विद्यार्थियों को बाँटी गईं टूल किट

स्कूली शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत यदि विद्यार्थी पूर्णकालिक या अंशकालिक रूप से किसी रोज़गार के साथ जुड़ना चाहता है या घरेलू आर्थिक हालातों के कारण आजीविका कमाना चाहता है, तो अब उसे कोई कठिनाई न होगी। हमने हर विद्यार्थी को उसके स्किल से संबंधित टूलकिट देने की व्यवस्था की है। शैक्षणिक-सत्र 2022-23 में एनएसक्यूएफ के 5 विषयों- ऑटोमोबाइल, ब्यूटी एंड वैलनेस, हेल्थकेयर, एग्रीकल्चर, अपैरल फैशन डिज़ाइनिंग में अध्ययनरत 10वीं और 12वीं के छात्रों को टूलकिट उपलब्ध कराई गई है। आँकड़ों की बात करें तो प्रदेश के 759 विद्यालयों में 44,151 टूल किट विद्यार्थियों को वितरित की जा चुकी हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हरियाणा सरकार की यह पहल व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन लेकर आएगी और विद्यार्थियों को स्वरोज़गार के लिए प्रेरित करेगी।

कँवरपाल
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

इस सफल योजना के सफर के मुख्य केंद्र बिन्दु-

उपकरणों से सुसज्जित प्रैक्टिकल लैब की व्यवस्था

व्यावसायिक शिक्षा का मुख्य आधार है प्रैक्टिकल ज्ञान, तथ्यों को देखने और समझने से नहीं, बल्कि करने से सीखना। इसके लिए विद्यालयों में सभी मुखियाओं से यह सुनिश्चित किया गया कि विद्यालयों में दो स्किल के प्रैक्टिकल ज्ञान के लिए कक्ष उपलब्ध करवाये जाएँ एवं कुछ विद्यालयों में योजना अनुसार हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा लैब को बनाया गया। हमें यह बताते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि विद्यार्थियों द्वारा व्यावसायिक शिक्षा में रुचि को देखते हुए कई विद्यालयों में तीसरा स्किल विषय भी प्रारंभ कर दिया गया है। लैब में प्रतिवर्ष समय की माँग के अनुसार आवश्यक नवीनतम उपकरण भी विद्यालयों में भेजे जा रहे हैं।

औद्योगिक भ्रमण एवं गेस्ट लेक्चर-

विद्यार्थियों को औद्योगिक गतिविधियों से रूबरू करवाने के लिए और उनकी संबंधित कौशल में रुचि जागृत करने के लिए उन्हें समय-समय पर औद्योगिक भ्रमण के लिए ले जाया जाता है। इसके अलावा विषय से संबंधित संस्थाओं में पहले से कार्यरत अनुभवी एवं प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा गेस्ट लेक्चर का प्रबंध किया जाता है, जिससे विद्यार्थी संबंधित कौशल के विभिन्न आयामों के बारे में अच्छे से जान सकें और बाहरवीं कक्षा तक यह निर्धारित कर सकें कि वे उस कौशल के किस आयाम में अपना हाथ आजमाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए ऑटोमोबाइल सेक्टर की बात करें तो उसमें सेल, सर्विस, प्रोडक्शन एवं इन्श्योरेन्स आदि जिस क्षेत्र में वे कदम रखना चाहें, उसी में शुरुआत कर आगे बढ़ सकते हैं।

विद्यालय में लैब प्रैक्टिकल के साथ ऑन जॉब ट्रेनिंग की व्यवस्था-

विद्यालयों में विद्यार्थी कार्य सीख लेते हैं, लेकिन उन्हें उद्योग के कार्य के अनुसार तैयार करने के लिए कुछ घंटों की ऑन जॉब ट्रेनिंग की व्यवस्था की गई है जिसमें वे पढ़ाई के साथ-साथ व्यावहारिक रूप से उद्योग में प्रवेश करने के लिए तैयार हो सकें। इसके लिए विषय से संबंधित नजदीकी उद्योगों से मैपिंग की जाती है और विद्यार्थियों को समूह अनुसार ट्रेनिंग के लिए ले जाया जाता है। इस प्रशिक्षण से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास में अथाह वृद्धि होती है। इसके लिए उन्हें प्रमाण-पत्र भी दिया जाता है जो भविष्य में उनके रोज़गार चयन में उत्प्रेरक का कार्य करता है।

विशेषज्ञों द्वारा प्रायोगिक मूल्यांकन-

अब तक हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड एवं परियोजना परिषद के संयोजन से सेक्टर स्किल कॉउन्सिल्स से

दक्षता विकास के लिए इन्क्यूबेशन सेंटर

इन्क्यूबेशन सेंटर वे अत्याधुनिक कौशल केंद्र हैं, जहाँ उन्नत उपकरण और कार्यात्मक मशीनरी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है और व्यावहारिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। ये सेंटर सफल उद्यमी बनने के लिए कौशल शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए आगे का एक कदम है। यह कौशल के विकास को हब एवं स्पोक मॉडल की रणनीति पर आधारित है। इसके लिए, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद, नेशनल स्किल्स क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) के अंतर्गत, व्यावसायिक शिक्षा के लिए नई शिक्षा नीति के तहत, स्कूलों में 50 दक्ष (DAKSH-डेवलपिंग एप्टीट्यूड नॉलेज स्किल हॉलिस्टिकली) के रूप में इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित किए गए हैं जिसमें आईटी, रिटेल, ऑटोमोबाइल एवं ब्यूटी और वेलनेस आदि नौ स्किल विषयों को सम्मिलित किया गया है और भविष्य में योजना बनाकर जल्दी ही अन्य विषयों को भी जोड़ दिया जाएगा जिससे व्यावसायिक शिक्षा को बेहतर बनाया जा सके और प्रत्येक छात्र आत्म निर्भर बन सके। यहाँ पर कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए 72 घंटों की इंटर्नशिप का प्रावधान किया गया है जिसका पहला बैच सफलतापूर्वक इंटर्नशिप सम्पन्न करके जा चुका है।

डॉ.महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत विशेषज्ञों के सहयोग से विद्यार्थियों का प्रतिवर्ष प्रायोगिक मूल्यांकन करवाया जाता है। इसी कड़ी में शैक्षणिक सत्र 2021-22 से कक्षा 10वीं और 12वीं के विद्यार्थियों का प्रायोगिक मूल्यांकन सेक्टर स्किल कॉउंसिल्स के स्थान पर राज्य की स्किल यूनिवर्सिटी (श्री विश्वकर्मा स्किल यूनिवर्सिटी हरियाणा) से किया जाना तय किया गया है।

व्यावसायिक अध्यापकों का प्रशिक्षण-

समय-समय पर व्यावसायिक अध्यापकों को परियोजना परिषद एवं पैसिव भोपाल के संयोजन से प्रशिक्षण भी करवाया जा रहा है जिससे वे विद्यार्थियों को और अधिक कुशलता से प्रशिक्षित कर सकें। अध्यापकों को गतिविधि आधारित शिक्षा एवं कौशल संबंधी आधुनिक तकनीकों से अवगत करवा कर समय-समय पर अपडेट किया जाता है, उदाहरण के लिए आज के समय में यदि हम विंडो-98 ऑपरेटिंग सिस्टम के बारे में चर्चा करें तो यह सही नहीं होगा, क्योंकि आजकल हम विंडो-11 के एडवांस दौर में कार्य कर रहे हैं। अतः प्रशिक्षकों को समय-समय पर एडवांस प्रशिक्षण देने से विद्यार्थियों को दक्षता से प्रशिक्षण देने में उन्हें काफी सहायता मिलती है।

कौशल के साथ-साथ अन्य रोज़गार निपुणताओं का समावेश-

उद्योग की दुनिया में केवल कौशल का ज्ञान होना ही काफी नहीं है, उसके साथ-साथ हर विद्यार्थी को समय की माँग के अनुसार कम्युनिकेशन स्किल, सेल्फ मैनेजमेंट स्किल, आईसीटी स्किल, एंटरप्रीनीऑर स्किल एवं ग्रीन स्किल का समावेश करने के लिए एमप्लॉयबिलिटी स्किल्स का ज्ञान भी कराया जाता है। सभी विद्यार्थी उक्त सभी स्किल अपने मुख्य कौशल विषय के साथ-साथ सीखते हैं। इससे उनमें अपनी स्किल को प्रोफेशनल तरीके से पेश करने में सहायता मिलती है।

स्किल हब पहल

हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा स्किल गैप को कम करने के लिए एक और शुरुआत की गई है जिसमें विद्यालय समय के बाद विद्यालयों में उन विद्यार्थियों को कौशल प्रदान किया जा रहा है जो किसी कारणवश अपनी पारंपरिक शिक्षा में वह कौशल प्राप्त नहीं कर पाए या वे पुश्तैनी रूप से इसी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में उन विद्यार्थियों के पास ज्ञान तो होता है, लेकिन उनका हुनर जॉब रोल के अनुसार सर्टिफाइड नहीं होता। इस कड़ी में प्रदेश में 120 विद्यालयों में यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जिसके तहत लगभग 3,500 विद्यार्थी इसका लाभ ले रहे हैं।

हम जानते हैं कि नई शिक्षा नीति में यह लक्ष्य रखा गया है कि स्कूल के लगभग 50 प्रतिशत विद्यार्थियों के पास कम से कम एक स्किल अवश्य हो। जिस तत्परता और मेहनत से हरियाणा प्रदेश व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है, इससे यह आशा की जा सकती है कि देश में सबसे पहले हरियाणा इस लक्ष्य को अर्जित करने में सफल होगा।

डॉ. अंशज सिंह
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद्

राज्य स्तर पर स्किल महोत्सव का आयोजन-

विद्यार्थियों में प्रतियोगिता की भावना विकसित करने के लिए कुछ समय पहले पंचकूला में स्किल महोत्सव का आयोजन किया गया। पहले खंड, फिर ज़िला और उसके बाद राज्य स्तर पर विद्यार्थियों ने अपने-अपने मॉडल प्रदर्शित किए। विद्यार्थियों ने इस उत्सव में जोश के साथ भाग लिया। भविष्य में ऐसे आयोजन को राष्ट्रीय स्तर पर करवाने का प्रयास रहेगा।

रोज़गार मेला (जॉब फेयर)-

12वीं पास आउट विद्यार्थियों को जिनकी उम्र 18 वर्ष की होती है और जो नौकरी करने के इच्छुक होते हैं, उनके लिए प्रत्येक वर्ष रोज़गार मेला (जॉब फेयर) लगाया जाता है। इसमें प्रदेश को ज़ोन अनुसार विभाजित किया जाता है। इसमें संस्थाएँ रोज़गार के इच्छुक विद्यार्थियों का साक्षात्कार लेती हैं एवं चुने हुए कक्षा 12वीं के विद्यार्थी उसी समय रोज़गार के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। यदि आँकड़ों पर नज़र डालें तो सत्र 2013-14 से अब तक करीब 1100 विद्यार्थी प्लेसमेंट का लाभ ले चुके हैं एवं इसके अतिरिक्त अन्य विद्यार्थी उच्च शिक्षा में भी इसी कौशल को जारी रख कर इसका लाभ विभिन्न रूप में ले रहे हैं। एनएसक्यूएफ विषयों से उत्तीर्ण युवाओं को रोज़गार का अवसर प्रदान करने के लिए हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् ने एचसीएल स्टाफिंग सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड व कुछ अन्य संस्थाओं के साथ एमओयू किया है। अब ये संस्थाएँ एनएसक्यूएफ के विद्यार्थियों को रोज़गार के अवसर प्रदान कर रही हैं।

युवा हुनर की दिशा में भी आगे बढ़ने का प्रयास करें

हमारे विद्यालय में आईटी एवं ऑटोमोबाइल दो विषय चलाये जा रहे हैं जिसमें कक्षा नौवीं एवं ग्याहरवीं से काफी संख्या में विद्यार्थी बड़े ही चाव से इन विषयों को चुनते हैं, बच्चों के इन विषयों को चुनने के कई कारण हैं। इस विषय के क्षेत्र में तो वे करियर तो बना ही सकते हैं, लेकिन इसके साथ अन्य पारंपरिक विषयों में भी वे इन विषयों को एक मज़बूत सहायक हथियार के रूप में इसके साथ आगे बढ़ते हैं। हमारा विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में आता है। यहाँ पर काफी विद्यार्थी निम्न-मध्यमवर्गीय परिवारों से आते हैं। उनके लिए हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद की ऑटोमोबाइल की टूल किट की मुहिम आने वाले समय में काफी हितकर सिद्ध होने वाली है। इससे विद्यार्थी अपने आसपास के क्षेत्र में अपने हुनर और इन उपकरणों से अपनी कुछ आमदन भी कमा सकेंगे। इससे वे निश्चित रूप से आत्मनिर्भर होंगे और प्रधानमंत्री जी का **आत्मनिर्भर भारत** का सपना साकार होगा। हमें यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमारे विद्यालय के एक छात्र का दाखिला स्किल यूनिवर्सिटी में हुआ जिसमें वह ऑटोमोबाइल विषय की स्नातक की डिग्री ग्रहण कर रहा है और पढ़ाई के साथ-साथ ट्रेनिंग के दौरान हीरो जैसी राष्ट्रीय कंपनी में 11,000 रुपये का मानदेय भी पढ़ाई के साथ-साथ ग्रहण कर रहा है। काफी अच्छा महसूस होता है जब विद्यार्थी स्कूल स्तर से ही अपने करियर को पहचान कर उसमें पूरी रुचि दिखाते हुए आगे बढ़ते हैं। आने वाले समय में इस क्षेत्र में विद्यार्थी खूब नाम कमाने वाले हैं।

सरोज देवी
प्रधानाचार्या
राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
रायपुररानी, पंचकूला

नौकरी माँगने वाले नहीं, नौकरी देने वाले युवक विद्यालयों से निकल रहे हैं

विद्यालय स्तर पर छात्र-छात्राओं को पढ़ाई के साथ कमाई के लायक बनाने के लिए एक साथ विद्यालय में सरकार की पाँच योजनाएँ क्रियान्वित करते हुए गौरवान्वित महसूस हो रहा है जिससे हम स्कूली स्तर पर कई माध्यम से विद्यार्थी को इस कदर सक्षम बनाने में प्रयासरत हैं कि वह खुद भी विकसित हो और समाज के विकास में भी योगदान दे। इन योजनाओं में व्यावसायिक शिक्षा, पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा, इनक्यूबेशन सेंटर और स्किल टूल किट आते हैं। योजना कोई भी हो जितना प्रयास सरकार, हरियाणा स्कूल परियोजना शिक्षा परिषद और जिले स्तर पर परियोजना अधिकारियों का होता है, उसमें उत्प्रेरक का कार्य करके फलदायी उद्देश्य से गुणवत्ता से धरातल पर उतारने में हमेशा से मेरा प्रयास रहता है। पहले नौकरी की तरफ भागने वाले युवाओं की फौज मिलती थी और अब जल्द ही समय आने वाला है कि नौकरी देने वाले और खुद का रोज़गार सृजन करने वाले युवा स्कूल की कर्मभूमि से निकलेंगे। बस इसी आशा के साथ हम व्यावसायिक शिक्षा के विकास में अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभा रहे हैं। बस इसी उम्मीद के साथ कि कागज़ के जहाजों से खेलने वाले बच्चे अब वास्तव में खुद के सपनों के जहाज में सवार हों। व्यावसायिक शिक्षा के किसी न किसी स्किल का प्रशिक्षण लेने वाले सभी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

रजनीश सचदेवा
प्रधानाचार्य
रावमा विद्यालय सैक्टर-6, पंचकूला

उच्च शिक्षा में डिप्लोमा एवं बी.वॉक (B.VOC) के क्षेत्र में अवसर-

उच्च शिक्षा की बात करें तो यदि स्किल विषय का विद्यार्थी चाहे वह किसी भी संकाय से बाहरवीं कक्षा पास करता है तो यदि वह संबंधित विषय में तीन वर्षीय पोलीटेक्निक डिप्लोमा में प्रवेश लेता है तो उसे सीधे द्वितीय वर्ष में प्रवेश मिलता है और वह इसे पूर्ण कर लेवल 05 सर्टिफाइड हो जाता है। यदि वह वोकेशनल में स्नातक करता है, इसके लिए हरियाणा के विभिन्न में विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषयों में कार्यक्रम प्रारंभ कर दिए गए हैं और इसी कड़ी में हरियाणा के पलवल जिले में देश की पहली स्किल यूनिवर्सिटी की स्थापना की गई

विद्यालय ने दिखलाई रोज़गार की राह

मेरा नाम साहिल शर्मा है, मैंने रायपुररानी जिला पंचकूला के आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय से 2020 में कक्षा 12 वीं कॉमर्स संकाय से ऑटोमोबाइल वोकेशनल विषय के साथ की है। 2020 में मैं चिंतित था कि किस विषय में आगे जाऊँ कॉमर्स में या वोकेशनल में। चूंकि मैं एक साधारण किसान परिवार से हूँ तो मुझे कुछ ऐसे कोर्स की तलाश थी जिसमें भविष्य भी सुरक्षित हो और ज्यादा कोर्स का बजट भी न हो, फिर मेरे व्यावसायिक अध्यापक ने मुझे बी-वॉक ऑटोमोबाइल विषय के साथ करने के लिए प्रेरित किया। मेरे लिए ये कोर्स एक नए नाम की तरह था, लेकिन अब मैंने इस कोर्स के लिए आवेदन किया और इंटरव्यू पास करने के बाद मेरा चयन मैकेट्रॉनिक्स में हुआ। पहले मैं इस कोर्स को लेकर संशय में था, लेकिन स्किल यूनिवर्सिटी हरियाणा का मैं आभारी हूँ, क्योंकि मेरी विचारधारा यहाँ आने के बाद बिल्कुल ही बदल गयी क्योंकि यहाँ पर 6 महीने पढाई और 6 महीने ऑन जॉब ट्रेनिंग फिर छह महीने पढाई फिर छह महीने ऑन जॉब ट्रेनिंग इस प्रकार से तीन साल में डेढ़ वर्ष पढाई और डेढ़ वर्ष प्रैक्टिकल और उस ट्रेनिंग के दौरान सीखने के साथ-साथ मुझे लगभग 10,000 रुपये मासिक मानदेय भी मिलता है, जिससे मैं खुद के दम पर ही इस डिग्री को कर रहा हूँ, इससे मेरे घर वालों पर आर्थिक बोझ बिल्कुल भी नहीं है, हीरो जैसी उच्च स्तर की कंपनी में उच्च मानक के साथ ट्रेनिंग करना अपने आप में एक उपलब्धि है, इसमें आने वाले वक्त की तकनीक रोबोटिक्स और ओटोमेशन का भी अच्छे से ज्ञान ले रहा हूँ, इसके लिए मैं हरियाणा सरकार का इस अद्भुत मुहिम को प्रारम्भ करने के लिए, अपने विद्यालय मुखिया का इस कोर्स को विद्यालय में चुनने के लिए और अपने व्यावसायिक अध्यापक का भविष्य के लिए मार्ग दर्शन के लिए दिल से आभारी हूँ। मैं अपनी मेहनत से इस 07 लेवल की डिग्री को लेकर अच्छे पद पर कार्य करके अपने परिजनों का नाम रोशन करके दिखाऊँगा।

साहिल शर्मा
12 वीं कक्षा उत्तीर्ण
राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रायपुररानी, पंचकूला

जिसमें बी.वॉक के साथ-साथ एम.वॉक को भी प्रारंभ कर दिया गया है।

सेकेंडरी परीक्षाओं के पास फार्मूले में अनिवार्य विषय के स्थान पर कौशल विषय -

शैक्षणिक-सत्र 2021-22 से राज्य बोर्ड ने सेकेंडरी कक्षा के पास फॉर्मूले में अनिवार्य विषयों (गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान) के स्थान पर कौशल विषयों को सम्मिलित करने का निर्णय लिया है। जो विद्यार्थी पूर्वोक्त विषयों में अनुत्तीर्ण हो जाता है, तो उस विद्यार्थी के स्किल विषय के पास होने पर उस अनुत्तीर्ण विषय के परिणाम को स्थानांतरित कर उसे पास घोषित कर दिया जाएगा। इससे कौशल विषयों के प्रति विद्यार्थियों का रूझान और बढ़ा है।

दिव्यांग छात्रों के लिए समावेशी शिक्षा का व्यावसायिक शिक्षा में अभिसरण (कन्वर्जेन्स)

शैक्षणिक-सत्र 2021-2022 से आईईडी छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के लिए विस्तृत कार्य योजना और दिशा-निर्देश विद्यालयों को जारी किए गए हैं जिससे दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए सामाजिक समावेशन में बाधाओं को दूर किया जा सके और वे उद्योग की जरूरतों के अनुसार कौशल को विकसित करने के साथ देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था में योगदान करने में मदद कर सकें। इस योजना से भविष्य में दिव्यांग विद्यार्थी भी व्यावसायिक शिक्षा का पूर्ण लाभ ले सकेंगे और अपने सामर्थ्य अनुसार कौशल को ग्रहण कर सकेंगे।

नई शिक्षा नीति के अनुरूप पूर्व व्यावसायिक शिक्षा की आधारशिला-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा (प्री-वोकेशनल एजुकेशन) के तहत कक्षा छठीं से आठवीं तक के विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा देने का प्रावधान किया गया है। इसके लिए प्लानिंग अप्रूवल बोर्ड (PAB) 2020-21, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने 110 विद्यालयों में पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के लिए स्वीकृति प्रदान की है। इसके बाद हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् ने एनएसक्यूएफ संचालित 1,074 में से चयनित 110 विद्यालयों में पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा प्रारंभ करने के लिए सम्बंधित जिलों के जिला परियोजना संयोजकों तथा विद्यालय मुखिया को आवश्यक दिशा-निर्देश के साथ ही 15,000 रुपये प्रति विद्यालय की रीशि भी जारी की है।

इन विद्यालयों में पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा सुचारु रूप से संचालित करने के उद्देश्य से अपर प्राइमरी अध्यापकों की ट्रेनिंग करायी जा चुकी है, जो काफी लाभकारी सिद्ध हो रही है।

प्रोग्राम मैनेजर
एनएसक्यूएफ,
एचएसएसपीपी, पंचकूला

'दक्ष' इन्क्यूबेशन सेंटर लगाएँगे विद्यार्थियों के सपनों को पंख

अनुज कुमार पुंडीर

विद्यालय शिक्षार्थियों की विभिन्न आकांक्षात्मक आवश्यकताओं और शैक्षिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और विज़न प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित शिक्षण-अधिगम के लिए एक वातावरण प्रदान करते हैं। व्यावसायिक शिक्षा उन व्यावहारिक विषयों या पाठ्यक्रमों को शामिल करने को संदर्भित करता है, जो छात्रों के बीच कुछ बुनियादी ज्ञान, कौशल और स्वभाव उत्पन्न करें, जो उन्हें कुशल श्रमिक या उद्यमी बनने के बारे में सोचने के लिए तैयार करते हैं। एनएसक्यूएफ सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के बीच जुड़ाव लाने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है। इसे शैक्षिक अवसरों के विविधीकरण प्रदान करने, व्यक्ति की रोज़गार क्षमता बढ़ाने और व्यक्ति को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए एक सेतु के रूप में देखा जा सकता है।

वर्तमान में जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा कौशल बनाम नौकरी की आवश्यकता के कारण आर्थिक गतिविधियों में शामिल नहीं हो पा रहा है। यह न केवल अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है, बल्कि बड़े पैमाने पर समाज के लिए गंभीर परिणाम देने वाला भी है। देश व प्रदेश के लिए कौशल चुनौती तीव्र होती जा रही है, युवा आबादी को भारतीय अर्थव्यवस्था को जनसांख्यिकीय लाभांश देते हुए उत्पादक कार्यबल में परिवर्तित किया जा सकता है।

हरियाणा सरकार ने युवाओं के कौशल को बढ़ाने के लिए काफी प्रयास किए हैं, वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण भी सरकार द्वारा उठाए गए उपायों में से एक है। हरियाणा इस कार्यक्रम को लागू करने वाला पहला राज्य है। प्रारंभिक स्तर की नौकरी के लिए गृह नगर से प्रमुख शहर में स्थानांतरण हरियाणा में ज्यादा पसंद नहीं है जिसके परिणामस्वरूप रोज़गार के रुझान वांछित के रूप में संतोषजनक नहीं हैं।

साथ ही उद्योग 18 वर्ष से कम आयु के उम्मीदवारों के लिए इंटर्नशिप की अनुमति नहीं देता था और इंडस्ट्री में छात्रों को मशीनरी का उपयोग करने की भी अनुमति नहीं दी जाती थी। कई बार इंडस्ट्री का समय स्कूल के समय से अलग-अलग होने के कारण वे छात्रों को उचित समय भी नहीं दे पाते, जिससे छात्रों को व्यावहारिक प्रशिक्षण की कमी का सामना करना पड़ता था। यह सभी समस्याएँ समय-समय पर विद्यालय के माध्यम से संज्ञान में आती रहीं।

इसका कारण यह है कि वर्ष-प्रतिवर्ष कौशल शिक्षा देने के लिए विद्यालयों की संख्या और विद्यार्थियों की संख्या में इजाफा होता जा रहा है और समीप में उपलब्ध उद्योग संस्थाओं की संख्या सीमित है जिसके कारण विद्यार्थियों को इंडस्ट्री का पर्याप्त अनुभव लेने के लिए समस्याएँ भी बढ़ती जा रही थीं।

इन सभी समस्याओं को समाप्त करने के लिए विभाग ने गंभीरता से विचार किया कि क्यों न राज्य के कुछ चयनित विद्यालयों को एक ऐसे केंद्र के रूप में विकसित किया जाए, जहाँ अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित उपकरण हों जिनके माध्यम से विद्यार्थियों के व्यावहारिक व्यावसायिक ज्ञान को और तीक्ष्ण किया जाए और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रेरित किया जाए।

इस सन्दर्भ में राज्य के सभी स्टेकहोल्डर्स जो व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े थे, उनको भी पत्र के माध्यम से अवगत कराया गया और उनसे सुझाव माँगे गए कि किस तरह की मशीनरी और उपकरण इन केंद्रों में लगाए जाएँ जो विद्यार्थियों को वास्तविक इंडस्ट्री का अनुभव कराएँ और स्वावलम्बी बनाने में भी सहायक हों। समय-समय पर राज्य के विभिन्न सैक्टर्स के वोकेशनल अध्यापकों के

साथ कई दौर की बैठकें हुईं।

ऑटोमोबाइल के वोकेशनल अध्यापक ने सुझाव दिया कि ऑटोमोबाइल के सेंटर में दो-पहिया और चार-पहिया वाहन का माइनर सर्विस सेंटर विकसित किया जाए, जिसे विद्यार्थी सीखने के बाद उस केंद्र पर और अपने आस-पड़ोस में सर्विस के मुख्य कार्य एवं व्हीकल ब्रेकडाउन की सेवाएँ दे सकें। साथ ही साथ टायर चेंजर, मोटरसाइकिल, दो पहिया हाइड्रॉलिक रैंप, व्हील बैलेंसिंग, स्पार्क प्लग क्लीनर, वैक्यूम क्लीनर, बैटरी चार्जर, बैटरी टेस्टर आदि आधुनिक मशीनरी और उपकरण उपलब्ध कराए जाएँ जिससे कि एक विद्यार्थी कम से कम 10 से 12 दिन का प्रशिक्षण लेने के बाद एक ऑटोमोबाइल सर्विस सेंटर में प्रथम दिवस से आसानी से काम सँभालने में सक्षम हो सके या अपना स्वयं का सर्विस सेंटर प्रारंभ कर सके।

एग्रीकल्चर स्किल के वोकेशनल अध्यापक ने सुझाव दिया की कुछ विद्यालयों में ग्रीनहाउस बना कर नर्सरी की बारीकियाँ बताई जाएँ, वर्मीकम्पोस्ट का हुनर बच्चों को दिया जाए, जिससे जैविक खेती के प्रति उनको प्रेरित किया जाए। साथ ही साथ विभाग की तरफ से कुछ मशीनरी भी उपलब्ध कराई जाएँ जैसे कि टोमेटो केच-अप की मशीन आदि, जिससे विद्यार्थियों को विद्यालय में ही टोमेटो केच-अप बनाना सिखाया जाए और उन्हें यह पता चले कि किस तरह वे अपने कृषि उपज को प्रक्रिया के तहत गुजार कर अपने टमाटर की फसल का कई गुना ज्यादा भाव ले सकते हैं।

इसी क्रम में ब्यूटी एवं वैलनेस स्किल की वोकेशनल अध्यापक ने सुझाव दिया कि एक वातानुकूलित अत्याधुनिक ब्यूटी पॉर्लर बनाया जाए जिससे बच्चे हेयर कटिंग, फेशियल, मैनीक्योर, पैडीक्योर आदि कार्य प्रोफेशनल मशीनों के प्रयोग से पेशेवर की तरह कर सकें। इतना ही नहीं उन्हें सौंदर्य से संबंधित ऑर्गेनिक उत्पाद तैयार करने का भी हुनर दिया जाए।

रिटेल स्किल के लिए सुझाव आया कि रिटेल के विद्यार्थियों को रिटेलिंग के साथ-साथ उन्हें स्टार्टअप की भी जानकारी दी जाए जिससे वे अपना उत्पाद बनाकर मार्किटिंग करें। इसके लिए उन्हें अगरबत्ती बनाना, हैंडवाश बनाना सिखाया जाए। ऐसे उद्योग घर में भी लगाए जा सकते हैं और इनकी खपत स्थानीय बाजार में आसानी से हो जाती है।

वर्तमान समय में हेल्थ केयर असिस्टेंट की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हेल्थकेयर स्किल के वोकेशनल अध्यापक ने केंद्र को दो बेड का हेल्थ केयर सेंटर बनाने का सुझाव दिया जहाँ हेल्थ केयर के विद्यार्थियों के रोगियों की देखभाल करने के आधुनिक कौशल सिखाये जाएँ। इससे ये विद्यार्थी अपने घर से ही नजदीक रोज़गार कर सकें, साथ ही कम्युनिटी में भी इन स्किल्स के माध्यम से दूसरों की सहायता कर सकें।

आईटी/आईटीईएस स्किल के विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन/ऑफलाइन डॉक्यूमेंट केंद्र के तौर पर सेंटर

को विकसित करने का सुझाव आया। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को ऑनलाइन सेवाओं की भी बारीकियाँ बताई जाएँ जैसे- ऑनलाइन टिकट बुकिंग, ऑनलाइन फॉर्म सबमिशन आदि। इसी क्रम में टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी सेक्टर के वोकेशनल अध्यापक ने सेंटर को ट्रेवल एजेंसी की सेवाएँ तथा रेस्टोरेंट और हॉस्पिटैलिटी सेवाएँ देने के तौर पर विकसित करने का सुझाव दिया।

वर्तमान समय में डिजिटल मीडिया जैसे प्रोफेशनल की अत्यंत आवश्यकता हो रही है, इसलिए मीडिया एंड एंटरटेनमेंट के विद्यार्थियों को डिजिटल मीडिया प्रोडक्शन, सोशल मीडिया डिज़ाइन और मार्केटिंग जैसे स्किल देने का प्रावधान करने का सुझाव दिया गया।

आजकल सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर सिक्योरिटी कैमरा एवं अन्य सिक्योरिटी उपकरण की मॉनिटरिंग के लिए प्रोफशनल की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए सिक्योरिटी स्किल के विद्यार्थियों को सुरक्षा प्रशिक्षण के लिए फ्रंट ऑफिस कम रिसेप्शन, कंट्रोल रूम 24X7 घंटे, विजिटर व्हीकल मैनेजमेंट ऑफिस, स्टाफ बायोमेट्रिक चेक-इन और चेक-आउट ऑफिस आदि स्किल की आवश्यक स्किल देने का प्रावधान दिया गया।

उपरोक्त सुझावों को अमलीजामा पहनाने के लिए यह निर्णय लिया गया कि 45 चिह्नित विद्यालयों में कौन-कौन-सी स्किल चलायी जाए। साथ ही इन केंद्रों की लागत पर भी विचार हुआ।

मुख्यालय से लेकर विद्यालय स्तर पर सभी ने युद्धस्तर पर कार्य किया। सभी 45 विद्यालयों में 50 केंद्र के लिए कमरों का नवीनीकरण मुख्यालय द्वारा तैयार डिजाइन (लेआउट) के अनुसार किया गया। राज्य परियोजना निदेशक ने इन इन्क्यूबेशन सेंटर्स का नामकरण करते हुए कहा कि अब ये सभी सेंटर दक्ष (Developing Aptitude Knowledge Skill Holistically) नाम से संचालित किये जायेंगे। वास्तव में इस नाम से ही इसके उद्देश्य का बोध होता है। इसके लिए विभिन्न विषयों के केंद्र खोलने से पहले विषय विशेषज्ञों से इसके लिए औजार एवं उपकरण की सूची तैयार की गई। लगातार मंथन के परिणामस्वरूप उपकरणों को उच्च गुणवत्ता एवं उचित दाम पर खरीदने के लिए गवर्नमेंट ई-मार्केट प्लेस (Gem) पोर्टल पर इसके लिए ऑनलाइन बोली द्वारा इसे खरीदा गया। इसके समांतर इन सेंटर्स में विद्यार्थियों में कार्य कुशलता बढ़ाने के लिए ट्रेनिंग प्रोवाइडर्स के चयन की प्रक्रिया भी पूरी की गयी। वर्तमान में 4 ट्रेनिंग प्रोवाइडर्स प्रदेश में विद्यार्थियों को 9 सेक्टर्स में पारंगत कर रहे हैं।

प्रथम बैच में लगभग 1837 प्रशिक्षार्थियों ने कौशल शिक्षा पूरी कर ली है। प्रशिक्षण के उपरांत विद्यार्थियों में एक अलग उत्साह देखने को मिला। वे नयी तकनीक से अवगत हो रहे हैं और स्वरोज़गार के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

ये दक्ष इन्क्यूबेशन सेंटर आज पूरे देश के लिए मॉडल हैं। पिछले दिनों सेंट जोंस स्कूल चंडीगढ़ की प्रधानाचार्या श्रीमती कविता दास ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर 6, पंचकूला में स्थापित दक्ष इन्क्यूबेशन सेंटर का दौरा किया और इसकी कार्य प्रणाली को करीब से देखा। उन्होंने सराहना करते हुए कहा कि ये प्राइवेट स्कूलों के लिए भी रोल मॉडल हैं, ये केंद्र विद्यार्थियों को कौशल शिक्षा और स्वरोज़गार के लिए प्रेरित करेंगे। इसके अतिरिक्त उत्तराखंड विद्यालय शिक्षा विभाग के एक प्रतिनिधि मंडल ने कुछ दिनों पहले हरियाणा के दो विद्यालयों में स्थापित ऑटोमोबाइल और हेल्थ केयर के दक्ष इन्क्यूबेशन सेंटर की व्यवस्था को देखा और इस परियोजना को देख कर वे अत्यंत उत्साहित हुए। उन्होंने इसकी सराहना करते हुए कहा कि कौशल के क्षेत्र में धरातल पर स्वावलंबी बनाने की दिशा में यह केंद्र भी एक अद्भुत प्रयास है।

इन 50 स्थापित केंद्रों पर अब तक लगभग 18 करोड़ की लागत आ चुकी है और भविष्य में भी इसे और हाई-टेक बनाने का प्रयास तीव्र गति से जारी है।

अतः कहा जा सकता है कि ये इन्क्यूबेशन सेंटर्स आने वाले समय में विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभकारी होंगे और उनको आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होंगे।

कोऑर्डिनेटर
एनएसक्यूएफ
एचएसएसपीपी, पंचकूला

टूलकिट वितरण : हुनर को मिली और पैनी धार

सत्येन्द्र कुमार तिवारी

जैसे नमक के बिना स्वादिष्ट व्यंजन भी स्वादहीन हो जाता है वैसे ही एक टेक्निकल व्यक्ति बिना औज़ार के अधूरा होता है। यद्यपि एनएसक्यूएफ संचालित प्रत्येक विद्यालय में संबंधित कौशल की पूर्ण सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं, जहाँ सभी आवश्यक उपकरण उपलब्ध हैं जिनकी मदद से विद्यार्थी व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर करते हैं।

किन्तु यह कार्य तो सिर्फ विद्यालय में रह कर ही किया जा सकता है, क्योंकि उपकरण तथा औजार तो प्रयोगशालाओं में पहले से उपलब्ध हैं। अब, जब बच्चे घर पर होते हैं और विद्यालय मे जो कुछ सिखाया गया है उसको व्यावहारिक तौर पर करना चाहते हैं तो उनके पास उपकरण ही नहीं होते। ऐसे में वे कुछ नया नहीं कर पाते तथा अगले दिन विद्यालय खुलने का इंतज़ार करते हैं। विद्यालय एक सीमित समय के लिए होता है।

एक सीमित समय में किसी कार्य में पारंगत होने की संभावना न के बराबर ही होती है क्योंकि किसी कार्य को बार-बार करने से ही कार्य मे निपुणता आती है और यह तभी संभव है जब बच्चा विद्यालय के अलावा घर पर

भी कुछ अभ्यास करें।

व्यावहारिक तौर पर यह देखा गया है कि जब तक मनुष्य किसी तकनीकी कौशल को सीख रहा होता है या उस कार्य को कर रहा होता है तब तक उसका अभ्यास बना रहता है। जैसे ही वह कार्य कुछ दिनों तक नहीं करता फिर उसकी गुणवत्ता मे कमी आनी प्रारंभ हो जाती है, और एक समय तो ऐसा हो जाता है जब वह उस कार्य को करने मे पूर्णतया असमर्थ हो जाता है।

अब वोकेशनल शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थी निकट भविष्य में भी अपने कौशल को बनाए रखें और जो कुछ भी सीखा है, उसे अपने जीवन मे उतारें। इसके लिए यह आवश्यक था कि उन्हें एक टूलकिट दी जाए जिससे विद्यार्थी विद्यालय के बाहर भी अपना हुनर निखार सकें और अपने परिवार के लिए आजीविकोपार्जन भी कर सकें। इसको दृष्टिगत रखते हुए हरियाणा सरकार और हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद ने एनएसक्यूएफ के तहत आटोमोबाइल, ब्यूटी एण्ड वेलनेस, हेल्थकेयर, अपैरल फैशन और ऐग्रिकल्चर स्किलस में अध्ययनरत कक्षा 10वीं और 12वीं के विद्यार्थी को एक ऐसी टूलकिट देने का निर्णय लिया। ये सभी वे स्किल्स हैं जिसमें टूल के बिना कार्य करना बहुत कठिन हो जाता है।

टूलकिट लिस्ट की तैयारी

अब आवश्यकता यह थी कि उपरोक्त स्किल्स में किस तरह की टूलकिट दी जाए, उसमें क्या-क्या औजार हों जो बच्चों को सीखने मे मदद करें। इतना ही नहीं वे इस टूलकिट से अपनी आजीविकोपार्जन भी करें। इसके लिए इन विषयों के जानकारों से सुझाव माँगे गए और उपकरणों एवं औजारों की अंतिम सूची तैयार की गई।

टूलकिट में ऐसे औज़ार शामिल किए गए जो विद्यार्थियों के लिए लाने एवं ले जाने मे आसान हों, जैसे- ऑटोमोबाइल स्किल के टूलकिट मे जैक, पाइप रैंच-पाना, स्क्रू ड्राइवर, छोटी हथौड़ी, टायर मे हवा भरने की मशीन, मल्टीमीटर, इन सबको रखने के लिए एक मजबूत बैग आदि।

ब्यूटी एण्ड वेलनेस स्किल की टूलकिट में इलेक्ट्रिक बॉडी मसाजर, पेडीक्योर मैनिक्योर किट, फेस स्टीमर, वैक्स हीटर, इलेक्ट्रिक हेयर स्ट्रेटनर एवं कई प्रकार की कॉस्मेटिक क्रीम्स, इन औज़ारों को रखने के लिए बैग आदि।

ऐसे ही हेल्थकेयर के विद्यार्थियों के लिए पल्स ऑक्सीमीटर, स्टेथोस्कोप, थर्मल स्कैनर, बीपी ऑपरेटर, टूलकिट बैग, फर्स्ट-एड किट आदि देने का प्रावधान किया गया, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी हेल्थकेयर असिस्टेंट का कार्य आसानी से कर सकें। अपैरल फैशन के टूलकिट मे सिलाई मशीन, कपड़ा काटने वाली कैंची, कपड़े नापने वाला टेप, कई प्रकार की सुइयाँ, चाक, टैलरिंग कर्सिव स्केल, हाथ की कढ़ाई के धागे आदि। ऐग्रीकल्चर स्किल में प्रूनिंग नाइफ, स्ट्रैंड हॉसेर, मिश्र धातु इस्पात से बनी खुर्पी और बडिंग एवं ग्राफ्टिंग चाकू, बागवानी किट, हाथ आरी, गार्डन रेक जाली, नायलॉन के उपकरण बैग आदि को शामिल किया गया।

टूलकिट की खरीद

किट के सभी औजार उच्च गुणवत्ता के हों और इनकी आपूर्ति विद्यालयों तक शीघ्रता से हो, यह किसी चुनौती से कम नहीं था। इसलिए विभाग ने सभी टूलकिट को गवर्नमेंट ई-मार्केट प्लेस (GeM) से खरीदने का निर्णय लिया। फिर क्या था अनुमोदन होते ही जेम पोर्टल पर टेंडर की प्रक्रिया शुरू कर दी गई जिसमें लगभग दो सप्ताह का समय लगा। इसके बाद टेक्निकल तथा फाइनैन्शल मूल्यांकन के बाद नमूना जाँच और फिर सफल बोलीदाता को टूलकिट आपूर्ति करने का आदेश दे दिया गया कि वे टूलकिट को सभी 22 जिलों में समय से पहुँचाएँ। जिले में किट मिलते ही विभाग के आदेशानुसार सभी जिला परियोजना समन्वयकों ने इसे विद्यालय तक पहुँचाना सुनिश्चित किया।

टूलकिट का वितरण

आखिरकार 27 मई, 2022 का वह दिन भी आया, जब ये किट विद्यार्थियों को बाँटी गई। इसके लिए प्रदेश के 759 एनएसक्यूएफ संचालित विद्यालयों में टूलकिट वितरण का भव्य आयोजन किया गया। विद्यार्थियों में टूलकिट प्राप्त करने के लिए भरपूर उत्साह साफ दिख रहा था। विद्यार्थी से लेकर स्कूल के मुखिया सभी वितरण समारोह को यादगार बनाने के लिए पूरी ताकत लगाए थे। परिषद के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए विद्यालय मुखिया ने टूलकिट वितरण के लिए अपने-अपने विद्यालय में गणमान्य अतिथियों को आमंत्रित किया। कार्यक्रम की शुरुआत राजकीय मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल जगाधरी, यमुनानगर में माननीय शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल जी द्वारा किया गया। उन्होंने टूलकिट वितरण किया और इसके माध्यम से छात्रों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया और जिले के अन्य विद्यालयों में डीसी, एसडीएम, सीजेएम आदि गणमान्य व्यक्ति मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।

पंचकूला के सार्थक विद्यालय सैक्टर-12ए में व्यवसायिक विषय के छात्रों को टूलकिट आबंटित की गई जिसमें लगभग 2000 परिजनों ने इस महायोजन में हिस्सा लिया और इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधानसभा स्पीकर श्री ज्ञान चंद गुप्ता एवं अतिरिक्त निर्देशक संस्कृति स्कूल श्रीमती अमृता सिंह के द्वारा कक्षा 10वीं एवं 12 वीं के विद्यार्थियों को हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद् की मुहिम के तहत ब्यूटी एवं वेलनेस की स्किल टूल किट आबंटित की गई और श्री ज्ञान चंद गुप्ता ने इस मुहिम की सराहना की और कहा कि भविष्य में इससे बच्चों को आत्मनिर्भर बनने में सहायता मिलेगी एवं बच्चे घर पर प्रैक्टिकल कर अच्छा अभ्यास कर सकेंगे।

श्रीमती अमृता सिंह, अतिरिक्त निदेशक, (मॉडल संस्कृति स्कूल्स) ने भी इस मुहिम की अत्यंत सराहना करते हुए बताया कि बेटियों को हुनर की उड़ान भरने में यह एक अद्भुत प्रयास है एवं यह भविष्य में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

इसके अतिरिक्त अन्य जिलों में भी समारोह धूमधाम से मनाया गया, जिसमें संबंधित जिले के डीसी, एडीसी, सीईओ, जिला परिषद, सीएमओ आदि गणमान्य व्यक्तियों के साथ-साथ शिक्षा विभाग के अधिकारी भी मौजूद रहे। इस प्रकार बड़े धूमधाम से राज्य के 759 विद्यालयों में 44,151 टूलकिट का वितरण समारोह संपन्न हुआ।

कोऑर्डिनेटर, एनएसक्यूएफ
एचएसएसपीपी, पंचकूला

मीडिया एनिमेशन में है रोज़गार भरपूर

एनएसक्यूएफ के अंतर्गत हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में मीडिया एंटरटेनमेंट एंड एनीमेशन स्किल 18 स्कूलों में चलाई जा रही है। यह कोर्स कक्षा 11वी में लिया जा सकता है व राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में यह कोर्स कक्षा 9वीं में भी लिया जा सकता है। मल्टीमीडिया वास्तव में तकनीक और कला का मिश्रित रूप है। मल्टीमीडिया ने अब कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के विकास के साथ एक पेशे का रूप ले लिया है। मल्टीमीडिया में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के माध्यम से निर्मित विभिन्न प्रकार के शक्तिशाली अनुप्रयोग हैं, मनोरंजन फिल्मों से शैक्षिक ट्यूटोरियल तक, ग्राफिक्स, एनिमेशन, ऑडियो और वीडियो जैसे घटकों के उचित संयोजन के माध्यम से, वीडियो और साउंड एडिटिंग से लेकर स्पेशल इफेक्ट्स, एनिमेशन, गेम्स, इंटरेक्टिव मल्टीमीडिया प्रोग्रामिंग और वेब कंटेंट डेवलपमेंट में इस हुनर की माँग है।

इस स्किल में विद्यार्थियों को एनीमेशन से संबंधित जानकारी व एनीमेशन बनाने वाले सॉफ्टवेयर के बारे में बताया जाता है। सॉफ्टवेयर में 3डी एनिमेशन सीखने के लिए ऑटोडेस्क माया, ऑटोडेस्क मैक्स 2-डी एनीमेशन सीखने के लिए एडोब फ्लैश, मोशन ग्राफिक्स के लिए एडोब ऑफ्टर इफेक्ट वीडियो एडिटिंग के लिए एडोब प्रीमियर प्रो, ग्राफिक्स के लिए फोटोशॉप, कोरल ड्रा आदि सिखाए जाते हैं।

1. एनीमेशन कोर्स का क्रेज-

आज के युवाओं में एनीमेशन कोर्स का क्रेज दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। आपको प्रसिद्ध हॉलीवुड फिल्म गॉडज़िला याद होगी, जिसमें न्यूयॉर्क की सड़कों पर आग से उठने वाले गॉड़ज़िला को दर्शाया गया है। यह मल्टीमीडिया टीम का एक चमत्कार है।

मल्टीमीडिया में वेबसाइट डिजाइनिंग, एनीमेशन, विशेष प्रभाव और डिजिटल वीडियो उत्पादन शामिल हैं। आज देश में यूटीवी, यशराज फिल्म्स, रिलायंस बिग एंटरटेनमेंट, साउथ मूवीज में गोल्डमाइन जैसे प्रोडक्शन हाउस में बाहुबली जैसी मूवीज़ उसके अलावा बहुत सारी साउथ मूवी अभी तक बनाई गई हैं, जिनमें एनीमेशन और विज़ुअल इफेक्ट आदि का बहुत प्रयोग किया गया है। इनके कारण मूवीज देखने में बहुत ही प्रभावशाली लगती है। इसके अलावा बड़े प्रोडक्शन हाउस पहले ही ड्रीम इंटरनेशनल, वॉल्ट डिज़नी और पिक्चर एनिमेशन जैसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ मिलकर इस क्षेत्र का विस्तार करने की अपनी योजना की घोषणा कर चुके हैं। यह स्पष्ट रूप से एक आशाजनक क्षेत्र है, जो रोज़गार से भरा है। इसी कारण होनहार युवा स्टूडेंट इस ओर अपना रुख कर रहे हैं। इसका एक मुख्य कारण ये भी है कि आज सभी वर्ग के लोगों को एनीमेशन फिल्म बेहद पसंद आती हैं। ये सभी का भरपूर मनोरंजन करती हैं। इसी बढ़ती हुई रुचि को देखते हुए हम ये कह सकते हैं कि भविष्य में एनीमेशन कोर्स की जबरदस्त माँग है।

2. एनीमेशन है क्या?

कुछ बताने से पहले हम ये जान लेते हैं कि एनीमेशन क्या होता हैं? पेंटिंग या ड्राइंग की एक ऐसी सम्मिलित प्रक्रिया है जिसमें चाल व गति के साथ-साथ संचालन का आभास प्रतीत होता हे, इसी को हम एनीमेशन कहते हैं। साधारण भाषा में आप इसे ऐसे समझ सकते हैं कि जब बहुत सारी ड्राइंग व पेंटिंग्स अलग-अलग मूवमेंट पर बनी हो और उन्हें देखकर किसी कार्य में गति का आभास होता है, यह प्रोसेस एनीमेशन कहलाता है।

3.एनीमेशन के प्रकार-

इसे कुछ लोग तीन या चार प्रकार के मानते हैं, क्योंकि वे कुछ एनीमेशन को दूसरे के साथ जोड़कर देखते हैं। सही मायने में देखा जाए तो ये पाँच प्रकार के होते हैं- 1.ट्रेडिशनल एनिमेशन 2.वेक्टर बेस्ड एनिमेशन 3. कम्प्यूटर एनिमेशन 4.मोशन ग्राफिक्स 5.स्टॉप मोशन

4. एनीमेशन कोर्स करने के बाद रोज़गार के अवसर-

मल्टीमीडिया उद्योग को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है- मनोरंजन, प्रकाशन, आईटी। हमारे देश का मनोरंजन उद्योग सालाना 20 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। निकट भविष्य में आईटी सेवाओं से संबंधित इंटरैक्टिव डिजिटल मल्टीमीडिया, एनीमेशन और गेमिंग आदि के लिए लगभग कई लाख कुशल पेशेवरों की आवश्यकता होगी। कंप्यूटर, वीडियो और वायरलेस (मोबाइल) खेल विकास क्षेत्र ने भी पिछले कुछ वर्षों के दौरान महत्त्वपूर्ण वृद्धि दर्ज की है।

भारत में एनीमेशन और गेमिंग उद्योग के बढ़ने की काफी संभावनाएँ हैं। वित्तीय मंदी के कारण, कई पश्चिमी देश सक्रिय रूप से भारत जैसे गंतव्यों की ओर देख रहे हैं, ताकि कम बजट के साथ भी अच्छी एनीमेशन सामग्री का उत्पादन किया जा सके। बॉलीवुड और एनीमेशन में क्षेत्रीय सिनेमा उद्योग की रुचि ने भी विकास को बढ़ावा दिया है। भारतीय एनीमेशन उद्योग पूरी तरह से अपतटीय मॉडल से सह-उत्पादन मॉडल की ओर बढ़ रहा है। ये कोर्स पूरा करने के बाद एनिमेटर, वीडियो एडिटर, मीडिया चैनल में मोशन ग्राफिक्स डिज़ाइन, विज्ञापन, वेब डिज़ाइनिंग व गेम बनाने संबंधी काम मिल सकते हैं। इसकी पढ़ाई करके आप सरकारी या प्राइवेट इंस्टिट्यूट में नौकरी भी कर सकते हो।

5 . मल्टीमीडिया में रोज़गार के अवसर-

मल्टीमीडिया क्षेत्र से संबंधित पेशेवर कौशल प्राप्त करके, आप एक संपादक, सामग्री प्रदाता, एनिमेटर, डिज़ाइनर, ग्राफिक कलाकार, इलस्ट्रेटर, ऑपरेटर, मल्टीमीडिया, डेवलपर, मल्टीमीडिया सिस्टम विश्लेषक, निर्माता, प्रकाशक, प्रोग्रामर, प्रोजेक्ट मैनेजर, साउंड टेक्नीशियन, वीडियो विशेषज्ञ मल्टीमीडिया पेशेवर कई तरह से काम कर सकते हैं।

यदि वे चाहें तो प्रिंट मीडिया, वेब प्रकाशन और प्रसारण मीडिया में रोज़गार पा सकते हैं। इसके अलावा, विज्ञापन, खुदरा डिज़ाइन, मल्टीमीडिया और वेब डिज़ाइन, एनीमेशन, इलेक्ट्रॉनिक और समाचार मीडिया और फिल्मों में क्षेत्र से जुड़े पेशेवरों के लिए रोज़गार के विकल्प उपलब्ध हैं। आप चाहें तो फ्रीलांसर के रूप में भी अपनी सेवाएँ दे सकते हैं।

6. वेतन-

मल्टीमीडिया में आप शुरुआत में 20 से 25 हज़ार रुपये वेतन प्राप्त कर सकते हैं, यदि आप इस काम में अधिक अनुभवी हैं और एक अच्छी कंपनी में काम कर रहे हैं, तो आप आसानी से 30 से 40 हज़ार रुपये कमा सकते हैं।

अशीष रोहिल्ला
वोकेशनल टीचर
मीडिया एंटरटेनमेंट एंड एनीमेशन
राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक
विद्यालय कैंप, यमुनानगर, हरियाणा

बहुत माँग है पेशेंट केयर असिस्टेंट की

नैशनल स्किल्स क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क के तहत हरियाणा के विद्यालयों में जो ट्रेड चल रहे हैं, उनमें से एक है- पीसीए, यानी पेशेंट केयर असिस्टेंट। पीसीए एक ऐसा प्रोफेशन है जो मरीजों के स्वास्थ्य की देखरेख से जुड़ा है, इसका दूसरा नाम जीडीए भी है। वर्तमान में मेडिकल का कोई भी क्षेत्र हो हर जगह पेशेंट केयर असिस्टेंट की जरूरत है। पेशेंट के एडमिशन से लेकर डिस्चार्ज तक पीसीए की जरूरत है।

आम लोगों में स्वास्थ्य और फिटनेस को लेकर दिनों दिन सजगता बढ़ रही है, इसलिए देश में होम नर्सिंग, ट्रॉमा नर्सिंग, ट्रैवल नर्सिंग जैसी फील्ड का ट्रेंड बढ़ रहा है। बड़ी संख्या में विदेशी नागरिक मेडिकल सेवाओं के लिए भारत का रुख कर रहे हैं, जहाँ हर जगह पेशेंट केयर असिस्टेंट की जरूरत है। यह प्रोफेशन मानव सेवा से जुड़ा है। आज के युवाओं में ये बेसिक स्किल होना चाहिए, ताकि वे हर क्षेत्र में लोगों की सहायता कर सकें। इस स्किल से छात्र अपने परिजनों की भी आपातकालीन स्थिति में सहायता कर सकते हैं।

पीसीए की जरूरत आज देश में ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत है। देश में दिनों दिन खुल रहे हॉस्पिटल, नर्सिंग होम, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में इनकी जरूरत है। इसके अलावा पीसीए के लिए क्लीनिक, अनाथालय, वृद्धाश्रम, ऑक्यूपेशनल हेल्थ नर्सिंग, इंडस्ट्रियल हाउसेस, कारखानों, रेलवे, सरकारी स्वास्थ्य विभाग आदि में भी अवसर हैं।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय निसिंग में पीसीएस स्किल 2013-14 में शुरू हुआ था, तब से छात्राओं में यह विषय लेने का काफी रुझान है, हमारी कई छात्राओं का 12वीं के बाद प्लेसमेंट भी हुआ। हमारी कई छात्राएँ हेल्थ केयर में आगे जीएनएम/एएनएम कोर्स कर रही हैं। उनका कहना है कि पीसीए विषय चुनने से उनमें मानव सेवा का भाव जागा और इसी को अपना प्रोफेशन बना लिया। हमारी स्कूल की छात्राओं ने जिला कौशल महोत्सव में दूसरा स्थान प्राप्त किया था।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय निसिंग में इनक्यूबेशन सेंटर बनाया गया है, यहाँ पीसीए के छात्र-छात्राएँ अपने विषय से संबंधित ट्रेनिंग लेते है। इससे पहले ट्रेनिंग के लिए अस्पतालों में ले जाया जाता है जहाँ परमिशन लेना और ज्यादा वक्त देना मुश्किल होता था। परंतु अब पूरे जिले के छात्र-छात्राएँ इनक्यूबेशन सेंटर में ट्रेनिंग लेते हैं। यहाँ छात्रों को ट्रेनिंग देने के लिए अलग से ट्रेनर रखे गए हैं। यहाँ छात्र 6 घंटे की ट्रेनिंग प्रतिदिन लेते हैं।

स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में प्लेसमैंट के अच्छे अवसर-

1. कुमारी सोनू पुत्री श्री मंजीत सिंह वर्ष 2018-2019 में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बरवाला पंचकूला से पासआउट हुई है। सबसे पहले उसने पारस अस्पताल पंचकूला में जीडीए के रूप में काम किया, फिर उन्होंने संजीवनी इंस्टीट्यूट ऑफ पैरामेडिकल कोर्सेज चंडीगढ़ में अस्पताल प्रबंधन के स्नातक कोर्स में प्रवेश लिया। अभी वह अपना कोर्स पूरा करने की कगार पर है। साथ ही वह फोर्टिस हॉस्पिटल मोहाली में फ्रंट ऑफिस असिस्टेंट के पद पर कार्यरत है। वह वास्तव में बहुत मेहनती छात्रा है और आगे वह अस्पताल प्रबंधन में अपना करियर बनाना चाहती है। वह हर महीने 13,000 रुपये कमा रही है। वह इसी कमाई से अपने कोर्स की फीस भी भर रही है।
2. कुमारी अनीशा पुत्री श्री अशोक ने वर्ष 2019-2020 में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बरवाला, पंचकूला से कक्षा बारहवीं की परीक्षा पास की, उसने वैकल्पिक विषय के रूप में पेशेंट केयर को लिया और अपनी शिक्षा और पीसीए पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद अब वह फोर्टिस अस्पताल मोहाली में एक सामान्य ड्यूटी सहायक के रूप में काम कर रही है। वह हर महीने 12,000 रुपये कमा रही है।
3. कुमारी रजनी पुत्री श्री बलविंदर सिंह ने राजकीय कन्या वरिष्ठ बरवाला पंचकूला से वर्ष 2018-2019 में बारहवीं पास की हैं। उन्हें लाइफ लाइन अस्पताल जीरकपुर, पंजाब में नौकरी मिली है और जीडीए के रूप में वह काम कर रही हैं। वह हर महीने 13,000 रुपये कमा रही है। वह अपनी नौकरी के साथ स्नातक की पढ़ाई भी कर रही है और आर्थिक रूप से अपने परिवार की मदद कर रही है।
4. कुमारी रजनी पुत्री श्री संजीव कुमार राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बरवाला, पंचकूला से वर्ष 2019-2020 बारहवीं में उत्तीर्ण हुई है। उसे लाइफ लाइन अस्पताल जीरकपुर, पंजाब में नौकरी मिली है और वह जीडीए के रूप में काम कर रही हैं। वह हर महीने 13,000 रुपये कमा रही है। वह अपनी नौकरी के साथ स्नातक की पढ़ाई भी कर रही है और अपने परिवार की आर्थिक रूप से मदद कर रही है।
5. कुमारी पूजा पुत्री स्वर्गीय श्री अशोक कुमार ने पॉलिटेक्निक मोरनी हिल्स, पंचकूला हरियाणा से अपना एमएलटी कोर्स पूरा किया है। अब वह जीरकपुर बस स्टैंड अल्ट्रा सोसाइटी के पास लाल पैथ लैब सिंहपुरा में लैब असिस्टेंट के रूप में काम कर रही है और प्रति माह 12,000 रुपये कमा रही है। वह आगे लैब टेक्नीशियन के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती है।
6. कुमारी कोमल पुत्री श्री राजबीर ने कल्पना चावला संस्थान अंबाला में एमएलटी कोर्स में एडमिशन लिया है और साथ ही वह पंकज लैब बरवाला में लैब असिस्टेंट के रूप में काम कर रही है और 10,000 रुपये मासिक वेतन पा रही है।

ममता देवी
वोकेशनल अध्यापक
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय निसिंग
खंड- निसिंग, जिला-करनाल, हरियाणा

ऑटोमोबाइल-क्षेत्र में अपार संभावनाएँ

ऑटोमोबाइल के बारे में हम सब भली भाँति जानते हैं। स्वचालित वाहन ऑटोमोबाइल कहलाते हैं, जैसे- कार, बस, ट्रक, जीप, मोटरसाइकिल, स्कूटर आदि। भारतीय ऑटो उद्योग दुनिया के सबसे बड़े ऑटो उद्योगों में से एक है। देश की जीडीपी में इस उद्योग की हिस्सेदारी 7.1% है। भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में एक सनराइज़ सैक्टर के रूप में उभरा हैं। भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते यात्री कार-बाज़ार व दूसरा बड़ा दुपहिया निर्माता और पाँचवाँ सबसे बड़ा वाणिज्यिक वाहन निर्माता है।

भारत एक प्रमुख ऑटो-निर्यातक भी है। गत वर्षों में इसमें काफी वृद्धि देखने को मिली है और निकट भविष्य में निर्यात में और अधिक वृद्धि की उम्मीद है। ऑटो उद्योग भारत के लिए एक बड़ा रोज़गार जनरेटर है।

ऑटोमोटिव मिशन प्लान-

भारत सरकार और भारतीय बड़े ऑटो उद्योगों ने मिलकर एक पहल की, जिससे भारत टू व्हीलर व फोर व्हीलर वाहनों में सबसे अग्रणी बनने की उम्मीद है और उनकी योजना के अनुसार विभिन्न वाहन, वाहन के कलपुर्जे व ट्रैक्टर उद्योगों को अगले 10 वर्षों में बड़े पैमाने पर विस्तार करना है। इसके अलावा लम्बे समय तक उद्योग की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए हाइड्रोजन और बायो ईंधन जैसे वैकल्पिक ईंधन की शुरुआत को बढ़ावा देना है।

इलेक्ट्रिक व्हीकल-

इलेक्ट्रिक वाहन एक ऑटोमोबाइल वाहन है, जो रिचार्जेबल बैटरी में संग्रहीत ऊर्जा द्वारा संचालित होता है। ऐसे वाहनों को दो भागों में वर्गीकृत किया जाता है- इलेक्ट्रिक व्हीकल, हाइब्रिड इलेक्ट्रिक व्हीकल

नेशनल इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन 2020-

राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा व वाहन प्रदूषण को ध्यान में रखते हुए नेशनल इलेक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन-2020 शुरू किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य 2030 तक भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों में बड़े बदलाव करना और भारतीय सड़कों पर इलेक्ट्रिक वाहन ले कर आना है।

फेम इंडिया योजना-

इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों को फेम-इंडिया योजना के तहत ई-वाहन के प्रयोगकर्ता और निर्माता को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

हरियाणा के संदर्भ में-

हरियाणा जीडीपी में 28% भागीदारी उद्योगों की रही है। देश में उद्योगों को तीन समूहों में बाँटा गया है, जिनमें से एक उत्तरी समूह हरियाणा है। देश का सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री हब भी हरियाणा है। इसका श्रेय गुरुग्राम की 1200 माइक्रो, स्मॉल और मीडियम इकाइयों को भी जाता है, जो देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति, होंडा और हीरो जैसी टू-व्हीलर कंपनियों के लिए सभी जरूरी ऑटो पार्ट्स तैयार करती हैं। वहीं सोहना गुरुग्राम का इलेक्ट्रॉनिक मैनुफैक्चरिंग क्लस्टर बनाना एक बड़ी उपलब्धि है।

सेंटर ऑफ एक्सीलेंस-

ई-मोबिलिटी के क्षेत्र में शोध एवं विकास के लिए राज्य में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस खोले जा रहे हैं और बहुतकनीकी संस्थानों में भी रिसर्च सेंटर आरंभ किए जा रहे हैं।

हरियाणा इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी-

सरकार दुपहिया, तिपहिया और चौपहिया ई-व्हीकल्स को प्रोत्साहित करने पर बल दे रही है। प्रदेश सरकार की योजना है कि 2022 में राज्य में ई-व्हीकलों की भारी तादाद हो। प्रदेश सरकार का प्रयास है कि ई-व्हीक्ल के लिए बनाई जा रही पॉलिसी पूरे देश में सर्वोत्कृष्ट हो।

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल-निर्माण की पुनर्कल्पना-

भारत सरकार का विज़न युवाओं को ट्रेनिंग देना है, ताकि उद्योगों को स्किल्ड मैनपॉवर मिल सके और युवाओं को रोज़गार व स्वरोज़गार के अवसर मिल सकें। हम 2013 से ही ट्रेडिशनल शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा देने की ओर कदम बढ़ा चुके हैं, जो कि एनएसक्यूएफ के तहत हरियाणा से ही आरम्भ किया गया है और आज विभिन्न विद्यालयों में यह प्रशिक्षण सफलतापूर्वक चल रहा है। उच्च शिक्षा के लिए भारत का एकमात्र विश्वविद्यालय श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय भी हरियाणा के पलवल में स्थापित किया गया है।

व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों की संख्या में हम कुछ विकसित व विकासशील देशों की तुलना में काफी पीछे हैं, परन्तु नई शिक्षा नीति-2020 देश में व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा परिवर्तन लेकर आएगी। एनईपी के अनुसार कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा दी जा सकेगी और कम से कम 50 फीसदी शिक्षार्थियों के पास 2025 तक व्यावसायिक अनुभव होगा।

प्रत्येक बच्चे से यह अपेक्षा की जाती है कि वह कम से कम एक व्यावसायिक कौशल सीखे और कई अन्य व्यवसायों से सामान्य रूप में परिचित हो, ताकि वह स्कूली शिक्षा या उच्च शिक्षा पूरी करते ही रोज़गार पा सके और स्वयं को व देश को आर्थिक मज़बूती प्रदान कर सके, जिससे कि मानव विकास सूचकांक में सुधार हो और बेरोज़गारी कम की जा सके।

सुनील कुमार
व्यावसायिक प्रशिक्षक, ऑटोमोबाइल
रावमा विद्यालय नागपुर, फतेहाबाद, हरियाणा

अपेरेल एवं फैशन डिज़ाइनिंग बनता जा रहा विद्यार्थियों की पसंद

पूजा शर्मा

वर्तमान युग फैशन का युग है। जैसा कि हम जानते हैं हमारे राजकीय विद्यालयों में विद्यार्थी पढ़ाई संग कौशल के क्षेत्र में खुद को तराश रहे हैं और तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। इन सब में एक कौशल है- वस्त्र निर्माण एवं फैशन डिजाइनिंग। यह कोर्स एक ऐसा कोर्स है जिसका प्रचलन आज के युग में बहुत अधिक है। इस बदलते युग में फैशन एवं वस्त्र निर्माण के प्रति एक नया प्रारूप बन चुका है। फलस्वरूप इस क्षेत्र में करियर के बेहतरीन मौके बनते जा रहे हैं। कहा जाता है कि बिना रुचि के कोई भी काम नहीं होता। इसलिए जरूरी है कि हमारे करियर का चुनाव हमारी अपनी रुचि के अनुसार हो ताकि हम और भी अधिक लगन के साथ इस दिशा में कार्य कर सकें और करियर की बुलंदियों को छू सकें।

इस कौशल के अंतर्गत विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की ट्रेनिंग दी जाती है जैसे वस्त्रों की कटाई, पेटर्न मेकिंग, सैंपल निरीक्षण, कढ़ाई करना इत्यादि। बच्चे अपनी इच्छानुसार कागज़ एवं कपड़ों पर डिजाइन बनाते हैं और रोचक ढंग से उस डिजाइनिंग को उचित प्रारूप प्रदान करते हैं। भविष्य में इस क्षेत्र में रोज़गार की बहुत अधिक संभावनाएँ दिखाई देती हैं, जैसे आप इसमें बतौर डिज़ाइनर अपना स्वयं का कार्य शुरू कर सकते हैं। न केवल स्वरोज़गार अपितु एक व्यावसायिक ड्रेस डिजाइनर के तौर पर भी आप अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। अगर हम आर्थिक सुरक्षा की बात करें तो इस नज़रिए से भी यह क्षेत्र करियर का बहुत अच्छा विकल्प है। आज के फैशन के युग में करियर का यह विकल्प सर्वोत्तम विकल्पों में से एक माना जा सकता है। इस क्षेत्र में आप विभिन्न प्रकार के पदों के लिए स्वयं को सक्षम बना सकते हैं जैसे फैशन डिजाइनर, वस्त्र निर्माता, फैशन प्रबंधक, गुणवत्ता निरीक्षक, फैशन सहायक, फैशन समन्वयक, फैशन शो प्रबंधक एवं निर्मित वस्तुओं के व्यापारी के तौर पर भी आप अपनी सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं। अगर हम बात करें तो इस क्षेत्र में कैरियर की अपार संभावनाएँ हैं।

हरियाणा राज्य में अगर हम विशेषतः अंबाला जिले की बात करें तो चार विभिन्न विद्यालयों राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भुरेवाला, सोंटा, कड़ासन एवं सपेरा में एनएसक्यूएफ के अंतर्गत वस्त्र निर्माण एवं फैशन डिज़ाइनिंग कौशल के अंतर्गत प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इससे संबंधित रोज़गार की असीम संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जिला परियोजना समन्वयक एवं सहायक परियोजना समन्वयक अंबाला के कुशल निर्देशन में गत वर्ष 21 अगस्त को विश्व फैशन दिवस को उक्त 4 विद्यालयों के संबंधित सभी विद्यार्थियों द्वारा धूमधाम से मनाया गया एवं विभिन्न गतिविधियों के आयोजन के द्वारा उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इस दिवस पर संबंधित वोकेशनल अध्यापकों की कुशल देखरेख में फैशन शो, रैंप वॉक, फैंसी ड्रेस मेकिंग, कढ़ाई प्रतियोगिता एवं डिजाइन मेकिंग आदि गतिविधियों का सफल संचालन किया गया। डीपीसी कार्यालय अंबाला द्वारा संबंधित विद्यालयों में इन प्रतियोगिताओं के आयोजन का मुख्य लक्ष्य अधिक से अधिक विद्यार्थियों का इस क्षेत्र में रुझान पैदा करना एवं इस क्षेत्र को रुचिप्रद बनाना था। विद्यार्थियों द्वारा इस में बढ़ चढ़कर भाग लिया गया एवं उत्साह दिखाया गया।

इसके अतिरिक्त हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद की राज्यस्तरीय एनएसक्यूएफ टीम के कुशल मार्गदर्शन एवं निर्देशन में संबंधित कौशल के सभी विद्यार्थियों को टूलकिट्स वितरित की गई। यह सरकार द्वारा उठाया गया बेहतरीन कदम साबित हुआ, क्योंकि इसमें बच्चों को उनके प्रशिक्षण के दौरान काम आने वाला सारा सामान जैसे सिलाई मशीन, कपड़ा, बैग, विभिन्न टूल, रील, सुई, रिबन इत्यादि काफी सामान उत्तम क्वालिटी का दिया गया ताकि बच्चे इस कोर्स के पूरा होने के उपरांत स्वरोज़गार शुरू कर सकें। यह कदम अन्य विद्यार्थियों के लिए भी बहुत प्रेरणाप्रद एवं रुचिकर रहा।

वस्त्र निर्माण एवं फैशन डिजाइनिंग में अगर विद्यार्थी की रुचि है तो निश्चित रूप से वह इस क्षेत्र में अपना करियर बना सकता है।

सहायक
परियोजना समन्वयक
अंबाला, हरियाणा

अंबाला जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भूरेवाला की दसवीं कक्षा की छात्रा नेहा के अनुसार, उसे बचपन से ही इस क्षेत्र में रुचि रही है। परंतु जब उसे पता चला कि अपने विद्यालय में ही वह इसे विषय के रूप में पढ़ सकती है और करियर के रूप में भी अपना सकती है तो उसे बहुत खुशी हुई। उसकी वोकेशनल अध्यापिका नेहा रानी भी बहुत अच्छे से उन्हें पढ़ाती हैं। नेहा के अनुसार टूल किट में जितना भी सामान विभाग की तरफ से दिया गया है वह बहुत ही अच्छा है और प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु बहुत ही उत्तम साधन है।

जिला परियोजना समन्वयक, श्रीमती मीना राठी के अनुसार, नेशनल स्किल क्वालीफिकेशन फ्रेमवर्क समग्र शिक्षा का अहम घटक है जिसके अंतर्गत अंबाला जिले में कुल 13 कौशलों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अन्य कौशलों के साथ-साथ वस्त्र निर्माण एवं फैशन डिज़ाइनिंग एक बहुत ही रुचिकर एवं लाभप्रद कौशल है। अगर विद्यार्थी की इस क्षेत्र में रुचि है तो वह न केवल अपने सपने सच कर सकता है अपितु एक अच्छी नौकरी प्राप्त करके आर्थिक सुरक्षा भी प्राप्त कर सकता है।

ब्यूटी एंड वैलनेस स्किल में विद्यार्थियों की बढ़ती रुचि

अनुराधा कटारिया

नई शिक्षा नीति के तहत सरकार द्वारा वोकेशनल एजुकेशन को काफ़ी बढ़ावा दिया जा रहा है, जैसे 6वीं से 8वीं कक्षा में भी सामान्य शिक्षकों के सहयोग से प्री-वोकेशनल एजुकेशन शुरू करना, स्कूलों में अलग से एनएसक्यूएफ लैब का होना, अलग अलग ज़िलों में सभी ट्रेड के इंक्यूबेशन सेंटर को शुरू करना तथा 10वीं व 12वीं कक्षा को उनके विषय के अनुसार स्टूडेंट टूलकिट का वितरण करना। इसके अतिरिक्त कई स्कूलों में स्किल हब परियोजना के तहत स्कूल के बाहर के बच्चों को कोर्सेज करवाए जा रहे हैं, जिससे उनकी कला व कौशल को निखारा जा सके। विभिन्न वोकेशनल विषयों की तरह ब्यूटी एंड वैलनेस विषय में भी विद्यार्थी अपनी काफ़ी दिलचस्पी दिखाते हैं। इस नये सत्र में हर बार की तरह इस बार भी 9वीं कक्षा की छात्राओं में इस विषय को लेकर काफ़ी रुचि नज़र आयी। इस सत्र में ब्यूटी एंड वैलनेस ट्रेड में विद्यार्थियों को दी गई टूलकिट्स से भी उन्हें काफ़ी सहायता मिलेगी, जिससे वे घर पर और अधिक अभ्यास कर सकते हैं व बिना खर्च किए अपना काम शुरू कर सकते हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मज़बूत होगी। इसी प्रकार कुछ पूर्व छात्राएँ अपनी पढ़ाई के साथ-साथ एडवांस कोर्सेज कर के अपना काम शुरू कर रही हैं व आत्मनिर्भर हैं। ख़ुशी होती है जब कोई छात्रा फोन पर या मिल कर बताती है कि वे ब्यूटी एंड वैलनेस से सम्बंधित सर्विस दे कर अच्छी आमदनी अर्जित कर रही हैं तथा वे अपना खर्च खुद निकाल रही हैं।

हरियाणा सरकार के इन्हीं प्रयासों व वोकेशनल अध्यापकों की मेहनत के कारण अब अभिभावक भी वोकेशनल एजुकेशन के महत्त्व को समझने लगे हैं। पहले और अब की तुलना में अभिभावक अपने बच्चों को अब वोकेशनल एजुकेशन के लिए रोकते या टोकते नहीं हैं। गेस्ट लेक्चर, फील्ड विज़िट व इंटर्नशिप के दौरान जिन लोगों के साथ संपर्क बना अब वे भी कुशल बच्चों को नौकरी देने के लिए हमसे संपर्क करते हैं, जिससे यह भविष्य में और अधिक रोज़गार को बढ़ाने जा रहा है।

वोकेशनल अध्यापक (ब्यूटी एंड वैलनेस)
सार्थक विद्यालय
सैक्टर -12 ए, पंचकूला, हरियाणा

टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी : गतिशील व्यवसाय

हॉस्पिटैलिटी व्यवसाय एक तेजी से बढ़ता और गतिशील उद्योग है। टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी में परिवहन, आवास, भोजन, पेय, दर्शनीय स्थल, मनोरंजन और संबंधित उद्योग शामिल हैं। भारतीय टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी उद्योग भारत में सेवा क्षेत्र के बीच विकास के प्रमुख चालकों में से एक के रूप में उभरा है। समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत, पारिस्थितिकी में विविधता, इलाके और देश भर में फैले प्राकृतिक सौंदर्य के स्थानों को देखते हुए भारत में टूरिज्म की महत्त्वपूर्ण संभावनाएँ हैं। कई अन्य देशों की तरह टूरिज्म भारत में विदेशी मुद्रा का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

उभरते हुए रुझानों को देखते हुए टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी में कौशल आधारित पाठ्यक्रमों की अत्यधिक माँग है। हरियाणा राज्य एनएसक्यूएफ के अंतर्गत आने वाले 49 सरकारी स्कूलों में टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र में कौशल आधारित पाठ्यक्रम प्रदान कर रहा है। इन पाठ्यक्रमों के तहत छात्रों को आतिथ्य उद्योग में पारंगत किया जाता है। साथ ही, सोनीपत और करनाल जिले में दो इनक्यूबेशन सेंटर विकसित किए गए हैं। ये दोनों केंद्र होटल उद्योग में आवश्यक नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित हैं। ये केंद्र सेवा उद्योग से संबंधित बुनियादी बातों से लेकर उन्नत स्तर तक का ज्ञान प्रदान करेंगे। वर्तमान परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए ऐसे और भी केंद्र विकसित किए जाएँगे ताकि अधिक से अधिक छात्रों को इसका लाभ मिल सके और नवीनतम और उभरते रुझानों से खुद को लैस किया जा सके।

अंशुल पाराशर
कार्यक्रम समन्वयक
हरियाणा विद्यालय प्राथमिक परियोजना परिषद, पंचकूला, हरियाणा

आप नौकरी माँगने वाले नहीं, प्रदान करने वाले बनेंगे

उद्यमकर्ता एक नई सोच रखने वाले व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। नई सोच, नया आईडिया कहाँ से आता है? ये व्यक्ति एक गुण के धनी हैं कि ये आसपास की समस्याओं को एक अवसर के रूप में सोच कर जोखिम उठा कर कदम बढ़ाते हैं और अपना कोई नया कॉन्सेप्ट लेकर खुद का कोई भी स्टार्ट अप करते हैं, आज की तारीख में एमबीए चाय वाला, ओयो होटल, paytm, imagebazar.com, ola cabs आदि अनेक उदाहरण मिल जाएँगे, जिन्होंने किसी समस्या को आगे बढ़ने के हथियार के रूप में प्रयोग किया। उसके लिए आपको किसी कौशल में स्किल होना पड़ेगा, फिर आप किसी भी सिरे से सोच कर आगे बढ़ सकते हैं।

कुल मिलाकर यह कहना चाहेंगे स्किल्ड और अनस्किल्ड वर्कर में उतना ही अंतर है जितना कि एक सड़क के किनारे पेड़ के नीचे बैठे नाई और सैलून के मालिक में, दोनों के कार्य करने के तरीके और प्रेजेंटेशन में अंतर है, यही अंतर एक सामान्य चाय की दुकान और कैफ़े में, बर्गर की रेहड़ी और फास्ट फूड रेस्तरां (मैक डी, बर्गर किंग इत्यादि), सामान्य पार्लर और एक मानकीकृत महिला सैलून में, टायर पंक्चर की शॉप और टायर केयर सेंटर में, परचून की दुकान और डिपार्टमेंटल स्टोर में, कबाड़ी की दुकान एवं स्क्रैप के व्यापार में है। इनमें कार्य वही है लेकिन आईडिया एवं पेशकश नई है, इसलिए इज्जत वाले काम की शर्त रखकर जीवन में आगे बढ़ने की बजाय आपकी पसंद के काम को नई सोच के साथ पेश कर इसे इज्जत दिलवाएँ।

हम काम को छोटे सिरे से शुरू करने में हिचकिचाते हैं, लेकिन एक उद्यमकर्ता किसी क्षेत्र में वहाँ की समस्या को देखता है वह वहाँ के लिए वो उत्पाद और सेवाएँ अपने आधुनिक तरीके से करता है। इसीलिए यही कहना है कि सभी युवा खुद का विश्लेषण करें। यदि वे हल्का जोखिम उठाने में भी खुद को सक्षम समझते हैं तो समझिए कामयाबी निश्चित है। आज की बड़ी-बड़ी कंपनी भी कभी शुरुआत में बहुत छोटी थी। आज के बड़े-बड़े शोरूम किसी समय में साधारण दुकानें थी।

सभी उद्यमियों ने इतिहास रचने के लिए पहला पग उठाने का निर्णय लिया और स्वयं ही कामयाबी का कारवां बनता चला गया। आपका कोई भी आईडिया यदि जन सामान्य की समस्याओं का समाधान करने में काबिल होगा तो शुरुआत में हो सकता है संघर्ष करना पड़े, लेकिन अंत में आप इतिहास जरूर रच पाएँगे जो कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक उदाहरण होगा।

अंत में कुछ पंक्तियों से आशय समझाने का प्रयास करते हैं। किसी बड़े कार्य को यह समझ कर मत कीजिए कि काम की वजह से आपको इज्जत मिले, बल्कि हर छोटे से छोटे काम को इतने अच्छे ढंग से कीजिए कि आपकी वजह से काम को इज्जत मिले। इसीलिए यही कहेंगे अब युवा नौकरी पाने वाले नहीं, प्रदान करने वाले बनें।

कृष्ण मलिक
व्यावसायिक शिक्षक ऑटोमोबाइल
राजकीय संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
रायपुररानी, जिला-पंचकूला, हरियाणा

व्यावसायिक शिक्षा

मास्टर जी ने पूरा ज़ोर लगाया
हम सब को हाथ का हुनर सिखाया
तन-मन से हमें काम बताया
अब नहीं माँगनी पड़ेगी हमें रोज़गार की भिक्षा
क्योंकि, हरियाणा के स्कूलों में मिल रही
निःशुल्क व्यावसायिक शिक्षा
निःशुल्क व्यावसायिक शिक्षा

घर अपने जब हम जाएँगे
हुनर अपना सबको दिखलाएँगे
पड़ोसी भी सब होंगे हैरान
करेंगे जब हम कोई ऐसा काम
चार दोस्तों को भी साथ लगाएँगे
बेरोज़गारी को दूर भगाएँगे
सबके होंगें घर अपने
पूरे होंगे सब सपने
भारत का नाम विश्व में चमकाएँगे
अब नहीं करनी पड़ेगी हमें ज्यादा प्रतीक्षा
क्योंकि, हरियाणा के स्कूलों में मिल रही
निःशुल्क व्यावसायिक शिक्षा
निःशुल्क व्यावसायिक शिक्षा

मनदीप सिंह
व्यावसायिक अध्यापक ऑटोमोबाइल
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सैक्टर-6, पंचकूला, हरियाणा

एनईपी-2020: व्यावसायिक शिक्षा को सशक्त बनाने की पुनर्कल्पना एवं रणनीतियाँ

डॉ. विनय स्वरूप मेहरोत्रा

1. परिचय

भारत, जिसकी आबादी 1.4 बिलियन है, दुनिया के सबसे युवा देशों में से एक है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम द्वारा 2019 में किए गए एक अध्ययन के अनुसार 2023 तक 15-59 आयु वर्ग के 70 मिलियन अतिरिक्त लोगों के श्रम बल में प्रवेश करने की उम्मीद है, जिनमें से 59 मिलियन या 84.3 प्रतिशत 15-30 वर्ष की आयु वर्ग के होंगे और इनमें से आधे 15-20 वर्ष की आयु वर्ग से आने की उम्मीद है। भारत की श्रम शक्ति में 30 वर्ष से अधिक आयु के 262 मिलियन लोग हैं, जिनमें से 259 मिलियन वर्तमान में कार्यरत हैं और उन्हें भविष्य के लिए कुशल मानव शक्ति के रूप में तैयार करने की आवश्यकता है।

भारत सरकार ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण, सांस्कृतिक संरक्षण, समान हिस्सेदारी, बेहतर सामर्थ्य, और जवाबदेही को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू की है। एनईपी-2020 के अनुसार 2040 तक भारत के लिए एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होना चाहिए जो कि किसी से पीछे नहीं है। एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जहाँ किसी भी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखने वाले शिक्षार्थियों को सामान रूप से सर्वोच्च गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा विभिन्न सुधारों के माध्यम से शिक्षा संरचना को पुनर्जीवित करने की सिफारिशें की हैं। यह शिक्षा प्रणाली पठन सामग्री पर कम और विद्यार्थियों के वैचारिक सोच, तर्कसंगत विचार और कार्य और उनमें विभिन्न प्रकार के कौशल विकसित करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है, जिसमें जीने का हुनर, जीवन कौशल, 21वीं सदी के कौशल, नए युग के कौशल, तकनीकी और व्यावसायिक कौशल शामिल हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) इन अपेक्षित कौशल की पहचान करेगा और आरंभिक बाल्यावस्था एवं स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचे में उनके व्यवहार के लिए तंत्र शामिल करेगा। एनईपी-2020 द्वारा शैक्षणिक संरचना में परिवर्तन की सिफारिश भी की गई है ताकि शिक्षार्थी-केंद्रित, खोज-आधारित, चर्चा-आधारित, विश्लेषण आधारित, परियोजना-आधारित, आदि जैसी प्रणालियों को स्कूल में समग्र शिक्षा के अंतर्गत और उच्च शिक्षा में भी लागू किया जा सके। प्री-स्कूल से कक्षा 12वीं तक व्यावसायिक शिक्षा सहित गुणवत्तापूर्ण समग्र शिक्षा प्राप्त करने के लिए देश के सभी बच्चों को सार्वभौमिक पहुँच और किफायती अवसर सुनिश्चित करने के लिए एक ठोस राष्ट्रीय प्रयास किया जाएगा (एनईपी 2020; पैरा 3.1)। संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यों-2030 के साथ कौशल विकास से जुड़े विभिन्न पहलुओं को संरेखित किया जाना है, विशेष रूप से सतत विकास लक्ष्य 4.0 (एसडीजी 4.0) को, जिसमें 10 लक्ष्यों को प्राप्त करने की बात कही गयी है। सतत विकास लक्ष्य 4.0 का उद्देश्य समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना है। सतत विकास लक्ष्य 4.0 के टारगेट 4.3 में विशेष रूप से तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण से संबंधित लक्ष्य निर्धारित किये गए हैं। इसका उद्देश्य है कि 2030 तक सस्ती और गुणवत्तापूर्ण तकनीकी, व्यावसायिक और तृतीयक शिक्षा (विश्वविद्यालय तक के लिए), सभी महिलाओं और पुरुषों के लिए शिक्षा समान रूप से सुनिश्चित की जा सके। तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के अलावा, एनईपी-2020 पेशेवर शिक्षा, वयस्क शिक्षा और आजीवन सीखने की कला, भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने, प्रौद्योगिकी के उपयोग और ऑनलाइन

एवं डिजिटल शिक्षा के साथ एकीकरण से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर भी ध्यान आकर्षित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशें व्यावसायिक शिक्षा और सामान्य शिक्षा के एकीकरण के लिए अपनाए जाने वाले तौर-तरीकों, विभिन्न लक्षित समूहों के लिए व्यावसायिक शिक्षा को उपलब्ध कराने की जरूरतों, चरण-वार शैक्षणिक दृष्टिकोणों और मूल्यांकन में लचीलापन आदि पर केंद्रित है। एनईपी-2020 के अनुसार कक्षा 6 से 8 तक व्यावसायिक अनावृत्ति(vocational exposure) और कक्षा 9 से 12 तक व्यावसायिक शिक्षा दी जानी है। उच्च शिक्षा में कुशल मानव संसाधन की मांग और आपूर्ति के बीच बेमेल को कम करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा को सुव्यवस्थित किया जाना है।

स्कूल शिक्षा प्रणाली में संरचनात्मक परिवर्तन लाने के लिए, एनईपी-2020 ने सुझाव दिया है कि 10+2 संरचना को 5+3+3+4 मॉडल के साथ प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए, जिसमें निम्नलिखित चरण शामिल होंगे-

(क)मूलभूत चरणः यह चरण दो भागों में विभाजित होगाः प्रीस्कूल के 3 वर्ष या आँगनवाड़ी एवं प्राइमरी स्कूल में कक्षा 1 और 2 । मूलभूत चरण में 3-8 साल तक के बच्चों को गतिविधि आधारित शिक्षण देने की प्रक्रिया पर जोर दिया जायेगा।

(ख) प्रारंभिक चरणः इसमें कक्षा 3 से 5 के 8-10 वर्ष की आयु के बच्चों को शामिल किया गया है । इस चरण में बोलने, पढ़ने, लिखने, शारीरिक शिक्षा, भाषाओं, कला, विज्ञान और गणित से संबंधित ज्ञान और कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। एनईपी-2020 के अनुसार कक्षा 3 के सभी विद्यार्थियों को मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (Foundational Literacy and Numeracy; FLN) प्राप्त करने के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने वर्ष 2026-27 तक सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता सुनिश्चित करने के लिए निपुण भारत (NIPUN; National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy) अभियान शुरू किया है।

(ग) मध्य चरण : इसमें कक्षा 6 से 8 के 11 से 13 वर्ष की आयु के बच्चों को शामिल किया गया है । इस चरण में सैद्धांतिक ज्ञान के अलावा, भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी के विषयों में ज्ञान और कौशल का अनुप्रयोग पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा, इंटर्नशिप और बैगलेस डेज के माध्यम से दिया जाना है।

(घ) माध्यमिक चरण : इस चरण में कक्षा 9 से 12 के 14-18 वर्ष की आयु के बच्चों को शामिल किया गया है। इसे दो भागों में विभाजित किया गया है, जिसमें कक्षा 9 और 10 पहला चरण अर्थात माध्यमिक 1 और कक्षा 11 और 12 दूसरा चरण अर्थात माध्यमिक 2 शामिल है। इन 4 वर्षों के अंतराल में बहु-विषयक अध्ययन को उपलब्ध कराना है, जिसमें विषयों के कई विकल्प और व्यावसायिक शिक्षा भी शामिल है, जिससे विद्यार्थियों में व्यापक ज्ञान और कौशल विकसित हो सकेगा।

2. स्कूलों के लिए व्यावसायिक शिक्षा की एक व्यापक योजना का निर्माण-

शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग द्वारा गुणवत्ता शिक्षा के माध्यम से छात्रों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए सार्थक (Students and Teachers Holistic Advancement through Quality Education; SARTHAQ) नामक दस्तावेज तैयार किया गया है, जिसे 8 अप्रैल 2021 को जारी किया गया था। यह दो भागों में है और एनईपी-2020 की सिफारिशों में से प्रत्येक से जुड़ी गतिविधियों और कार्यों को परिभाषित करता है, जिससे राज्य/केंद्र शासित प्रदेश द्वारा एनईपी-2020 की सिफारिशों को लागू करने के लिए एक रोडमैप विकसित की जाने में मदद मिल सके। यह एनईपी-2020 की प्रत्येक सिफारिश को 297 कार्यों के साथ-साथ उन्हें लागू करने के लिए जिम्मेदार एजेंसियों, समय-सीमा और इन कार्यों के निर्गम से जोड़ता है। इसमें व्यावसायिक शिक्षा से सम्बंधित गतिविधियों को इस तरह से परिभाषित किया गया है, जो स्पष्ट रूप से लक्ष्यों, परिणामों और समय-सीमा को चित्रित करता है। विभिन्न पहलू जिनके लिए कार्य किए जाने हैं, निम्नानुसार हैं: व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार और सुदृढ़ीकरण, अवसंरचना और निधियों का प्रभावी और कुशल उपयोग, परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना और धन के लिए बेहतर मूल्य प्रदान करना, एक मजबूत सार्वजनिक-निजी भागीदारी ढाँचे के माध्यम से अधिक से अधिक निजी भागीदारी को सुनिश्चित करना, परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम वितरण और मूल्यांकन, उद्योग विशिष्ट कौशलों में शिक्षकों, प्रशिक्षकों और प्रशिक्षणों का क्षमता निर्माण,विकल्प बनाने के लिए मार्गदर्शन एवं व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार करने के लिए ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग और डिजिटल प्रौद्योगिकियों

का उपयोग।

इस लेख में व्यावसायिक शिक्षा के उन पहलुओं को उजागर किया गया है जो शिक्षार्थी को शुरुआती उम्र में ही व्यावसायिक शिक्षा के बारे में जानने एवं उसको शुरू करने के लिए रणनीति एवं व्यापक योजना बनाने के लिए एक दिशा प्रदान कर सके। राज्यों को ऐसी योजना तैयार करनी होगी जिससे सभी विद्यार्थियों को व्यावसायिक अनावृत्ति प्रदान की जा सके और स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के व्यवस्थित कार्यान्वयन के माध्यम से विभिन्न प्रकार के कौशल विकसित किए जा सकें।

स्कूलों में बच्चों का कौशल विकास

2.1. व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार और सुदृढ़ीकरण-

व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में एक पूर्वाभास है कि व्यावसायिक शिक्षा या इंटर्नशिप का अर्थ है सस्ता श्रम और इसको करने से बच्चे की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है यदि वह शारीरिक काम कर रहा है या कामकाजी दुनिया में सीखने जाता है। माता-पिता सहित समाज की इस मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है। व्यावसायिक शिक्षा के प्रति इसी आम धारणा और दृष्टिकोण को बदलने के लिए जागरूकता और संवेदीकरण कार्यक्रमों का राष्ट्रीय, राज्य, जिला और ब्लॉक स्तरों पर आयोजन किया जाना चाहिए। समाज की मानसिकता को बदलने और व्यावसायिक शिक्षा के महत्व के बारे में उन्हें संवेदनशील बनाने के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) और मीडिया अभियानों, विवरणिका / पत्रकों / पैम्फलेट और वीडियो का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाना है।

एनईपी-2020 के अनुसार, 2025 तक, स्कूल और उच्च शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम से कम 50% शिक्षार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा के संपर्क में लाना होगा, जिसके लिए एक स्पष्ट लक्ष्य और समय-सीमा के साथ कार्य योजना विकसित की जानी है, जिसमें हर बच्चा कम से कम एक व्यवसाय सीखेगा और उसे एक से अधिक कार्य करने के लिए भी तैयार किया जाएगा। इससे 'श्रम की गरिमा' और भारतीय शिल्प से जुड़े विभिन्न व्यवसायों पर जोर दिया जायेगा जिससे इन दोनों का महत्व बढ़ेगा। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, एनईपी-2020 ने सामाजिक समावेश, लैंगिक समानता और समावेशी शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के साथ प्री-स्कूल से कक्षा 12 तक कौशल-आधारित गतिविधियों की शुरुआत करने का सुझाव दिया है। व्यावसायिक शिक्षा को अगले दशक तक चरणबद्ध तरीके से सभी माध्यमिक स्कूलों के शैक्षिक प्रस्तावों में एकीकृत किया जाएगा। व्यावसायिक क्षमताओं का विकास अकादमिक या अन्य क्षमताओं के विकास के साथ-साथ होगा। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, माध्यमिक स्कूलों को औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई),पॉलिटेक्निक, स्थानीय उद्योगों आदि से सहयोग लेना होगा। स्कूलों एवं व्यावसायिक शिक्षा के संस्थानों/केन्द्रों को हब एंड स्पोक मॉडल के रूप में विकसित किया जायेगा जिनमें कौशल प्रयोशालाओं को स्थापित किया जायेगा जो अन्य स्कूलों को इस सुविधा का उपयोग करने की सहूलियत देंगीं। इससे व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न मॉडलों को लागू कर सकेंगे और नवाचार को बढ़ावा दे सकेंगे। व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण के लिए एक राष्ट्रीय समिति (National Committee for Integration of Vocational Education; NCIVE) गठित होगी जो व्यावसायिक शिक्षा के विस्तार के लिये राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास करेगी।

आत्म-निर्भर भारत अभियान का मुख्य उद्देश्य उभरते उद्यमियों/स्टार्ट-अप को एक मंच पर लाना, निधि जुटाने, और उद्योगों के विशेष्यज्ञों द्वारा मेंटरशिप प्रदान करके युवाओं को उद्यमिता की ओर आकर्षित करना है। आत्म-निर्भरता विभिन्न ट्रेडों और व्यवसायों से संबंधित उद्यमशीलता कौशलों को बच्चों, युवाओं और वयस्कों के स्किलिंग, अपस्किलिंग और रीस्किलिंग के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। उद्योग की नई और उभरती हुई कौशल माँगों को पूरा करने के लिए नये क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम, जैसे कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स और इंटरनेट ऑफ थिंग्स आदि में तैयार करना होगा जिससे कि स्टार्ट-अप को बढ़ावा दिया जा सके।

2.2. बुनियादी ढाँचे और निधियों का प्रभावी और कुशल उपयोग-

सामान्य शिक्षा की तुलना में व्यावसायिक शिक्षा प्रति विद्यार्थी ज्यादा लागत मांगती है, क्योंकि इसके लिए प्रयोगशाला/कार्यशालाओं, टूल्स, उपकरणों, सामग्रियों और कार्य-आधारित प्लेसमेंट पर व्यय की अधिक आवश्यकता होती है। चुनौती केवल व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए अधिक धन प्राप्त करने के लिए नहीं है, बल्कि विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रभावी ढंग से कुशलतापूर्वक धन का उपयोग करना है। शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता अधिकतम सरकार से आती है और व्यावसायिक शिक्षा के लिए कुल प्रत्यक्ष वित्त पोषण का सही अनुमान लगाना मुश्किल है, क्योंकि यह व्यावसायिक कार्यक्रमों (अवधि, पाठ्यक्रम शुल्क, सब्सिडी आदि में अंतर) के साथ बदलता है। अगर हम फिनलैंड की बात करें तो वहाँ पर 16 साल की उम्र तक शिक्षा अनिवार्य है। इस स्थिति में विद्यार्थी के पास शिक्षा प्राप्त करने के दो विकल्प होते हैं- उच्च माध्यमिक विद्यालय में सामान्य शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करना। सामान्य उच्च माध्यमिक विद्यालय तीन साल तक चलता है और विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए तैयार करता है। स्कूल में व्यावसायिक शिक्षा तीन साल का पाठ्यक्रम होता है जो पॉलिटेक्निक के लिए अग्रणी है। व्यावसायिक शिक्षा का चयन करने वाले विद्यार्थियों को कम से कम छह महीने के अंतःकार्य प्रशिक्षण (On-the-Job-Training; OJT) से गुजरना पड़ता है। व्यावसायिक विद्यार्थियों के लिए कुछ अतिरिक्त अध्ययन के बाद विश्वविद्यालय जाना संभव है। सभी उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों (15-

19 वर्ष) में से 72% व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकल्प चुनते हैं और उनमें से 14% स्कूल और कार्य-आधारित संयुक्त कार्यक्रमों में नामांकित होते हैं। फिनलैंड में व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए खर्च सामान्य शिक्षा की तुलना में अधिक है। उच्च माध्यमिक व्यावसायिक कार्यक्रमों पर प्रति विद्यार्थी खर्च उपकरणों की उच्च लागत, कम छात्र-से-शिक्षक अनुपात और कार्य-आधारित शिक्षा के कारण सामान्य शिक्षा कार्यक्रमों की तुलना में अधिक वित्त प्रदान किया जाता है। व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों में अधिक से अधिक निवेश किया जाता है और प्रभावी कार्यान्वयन भी होता है । इसी कारण फिनलैंड में सामान्य योग्यता प्राप्त 69% लोगों की तुलना में उच्च माध्यमिक या पोस्ट-माध्यमिक गैर-तृतीयक व्यावसायिक योग्यता प्राप्त 25-34 वर्ष के 80% लोगों के पास रोज़गार है।

एनईपी-2020 स्कूल कॉम्प्लेक्स की स्थापना की सिफारिश करता है, जिसमें एक माध्यमिक स्कूल के आस पास अन्य सभी स्कूल शामिल होंगे, जिसमें क्लस्टर में संसाधन और प्रबंधन को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से 5-10 कि.मी. के दायरे में आँगनवाड़ी भी शामिल होंगे (एनईपी 2020)। स्कूल कॉम्प्लेक्स की स्थापना से संसाधनों और सुविधाओं को साझा करने में मदद मिल सकती है, जिसमें स्कूलों में पर्याप्त संख्या में शिक्षक और स्कूल कार्यकर्ता/परामर्शदाता शामिल हैं। यह न केवल शिक्षक सहयोग को प्रोत्साहित करेगा और पेशेवर सीखने वाले समुदायों का निर्माण करेगा, बल्कि स्कूल-समुदाय संबंध को भी मजबूत करेगा। स्कूल कॉम्प्लेक्स विकलांग बच्चों के एकीकरण, उनके प्रशिक्षण के लिए विशेष शिक्षकों की भर्ती और विशेष रूप से गंभीर दिव्यांग बच्चों के लिए संसाधन केंद्रों की स्थापना के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करेंगे। माध्यमिक स्कूलों को कौशल विकास के लिए अन्य संस्थानों जैसे औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों, टूल रूम, पॉलिटेक्निक, प्रधानमंत्री कौशल विकास केंद्र स्थानीय उद्योग और विभिन्न फाउंडेशन के कौशल प्रशिक्षण केंद्र, आदि के साथ सहयोग करना होगा। स्कूल कौशल विकास के लिए विद्यार्थियों की अधिकतम भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए जटिल स्तर पर संयुक्त रूप से विद्यार्थी-केंद्रित गतिविधियों जैसे बाल मेला, खेल और सांस्कृतिक बैठक, साहित्यिक उत्सव, कौशल प्रतियोगिता, ग्रीन कौशल प्रतियोगिता, फोटोग्राफी प्रतियोगिता, हस्तशिल्प प्रतियोगिता, पाक कला प्रतियोगिता, रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता आदि का आयोजन करना होगा। पाठ योजनाओं के सहयोगात्मक विकास, विषयवार और कक्षा-वार गतिविधियों और प्रश्न-बैंकों के विकास आदि पर बैठक के आयोजन से शिक्षण में सुधार करने में मदद मिलेगी।

2.3. बेहतर सीखने के परिणामों पर ध्यान केंद्रित करना-

एनईपी-2020 का उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा में एकीकृत करके इसकी सामाजिक गरिमा को बढ़ाना है। मध्य और माध्यमिक विद्यालय में शुरुआती उम्र में व्यावसायिक अनावृत्ति के साथ शुरुआत करते हुए, गुणवत्ता वाली व्यावसायिक शिक्षा को स्कूल और उच्च शिक्षा में सुचारु रूप से एकीकृत किया जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि विद्यार्थी संज्ञानात्मक, मनोप्रेरणा और प्रभावी विकास से गुजरें और प्रासंगिक कौशल हासिल कर सके, इसके लिए सभी चरणों में पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में एक समग्र सुधार आवश्यक है।

मध्य चरण (कक्षा 6 से 8) में स्थानीय व्यावसायिक शिल्प सीखने में विद्यार्थियों को शामिल कर समुदाय, उद्योग या उद्योग संघ की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से स्वदेशी प्रथाओं पर विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप का आयोजन व्यावसायिक अनावृत्ति प्रदान करने में उपयोगी होगी। विद्यार्थियों की रोज़गार क्षमता में सुधार लाने और उन्हें पेशेवर विकास के अवसर प्रदान करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा में सर्वोत्तम प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में इंटर्नशिप कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। बैगलेस डेज (10 दिवसीय बस्ता-रहित पीरियड) में विद्यार्थियों को व्यवसायों से परिचित करने और कार्यस्थल कौशल की समझ विकसित करने के लिए स्कूलों द्वारा गतिविधियों, जैसे की विभिन्न व्यावसायिक हस्तकलाओं के बारे में सीखना, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यटक स्थल एवं स्मारकों का दौरा करना, स्थानीय कलाकारों एवं शिल्पकारों से मिलना और सीखना, उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों का दौरा करने के माधयम से विभिन्न व्यवसायों के बारे में जानना अदि का आयोजन किया जाना चाहिए। यह विद्यार्थियों को सामान्य विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भाषा, गणित, आदि जैसे अकादमिक क्षेत्रों से जुड़ने में मदद करेगा और इस प्रकार सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के बीच सीमाओं की बाध्यता को कम करेगा। स्थानीय ज्ञान, स्थानीय कौशल और स्थानीय संसाधनों की पहचान की जानी चाहिए और स्थानीय कारीगरों और शिल्पकार को लोक विद्या (स्वदेशी ज्ञान और कौशल) पर विद्यार्थियों को पढ़ाने और प्रशिक्षित करने के लिए शामिल किया जाना चाहिए। जो विद्यार्थी इन पारंपरिक/स्थानीय कौशल के बारे में जानते हैं, उन्हें अपने साथियों को सिखाने में मदद करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। मध्य स्तर (कक्षा 6 से 8) में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम में विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित गतिविधियों के अलावा बजट, लागत, और वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य निर्धारण आदि की मूल बातें भी सिखाई जानी चाहिए। जनजातीय ज्ञान और सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों सहित भारतीय ज्ञान प्रणालियों को गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा-विज्ञान, साहित्य, खेल, शासन, राजनीति और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित गतिविधियों को शामिल किया जाना है। जनजातीय जातीय-औषधीय प्रथाओं, वन

प्रबंधन, पारंपरिक (जैविक) फसल की खेती, प्राकृतिक खेती आदि में विशिष्ट पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराने होंगे। हमारी समृद्ध भारतीय परंपराओं और कौशल के महत्व की आवश्यक समझ प्रदान करने के लिए आयुष चिकित्सा प्रणाली, योग, आर्ट्स, संगीत, योग सूत्र आदि जैसे विषयों में संस्कृति से संबंधित कार्यक्रमों व्यावसायिक शिक्षा द्वारा छात्रों तक पहुँचाना होगा। उदाहरण के लिए, महाभारत में केवल चिड़िया की आँख पर निशाना लगाने पर द्रोणाचार्य और अर्जुन की कहानी का वर्णन विद्यार्थियों को जीवन में कुछ हासिल करने के लिए लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना और अन्य सभी विकर्षणों से दूर रहने का ज्ञान देने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

माध्यमिक चरण (कक्षा 9 से 12) में सरकार समग्र शिक्षा-

स्कूली शिक्षा के लिए एक एकीकृत योजना के अंतर्गत में स्कूल शिक्षा के व्यावसायीकरण की योजना को कार्यान्वित कर रही है। यह योजना अर्थव्यवस्था और वैश्विक बाज़ार के विभिन्न क्षेत्रों के लिए शिक्षित, रोज़गार योग्य और प्रतिस्पर्धी मानव संसाधन तैयार करने के उद्देश्य से सामान्य अकादमिक शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत कर रही है । समग्र शिक्षा के अंतर्गत सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त 11,000 स्कूलों में कक्षा 9 से 12 तक के व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम में लगभग 13 लाख से अधिक विद्यार्थी नामांकित हैं। इसके तहत विद्यार्थियों में से 50% से अधिक लड़कियाँ हैं (दिसंबर 2021 तक), जो इंगित करता है कि व्यावसायिक शिक्षा में लिंग अंतर घट रहा है और लडकियाँ व्यावसायिक विषयों में रुचि ले रही हैं। एनईपी-2020 के अनुसार माध्यमिक चरण में अब बहुआयामी अध्ययन के चार साल शामिल होंगे और पाठ्यक्रम का लचीलापन विद्यार्थियों को विषयों के चुनने के लिए विकल्प प्रदान करेगा। विद्यार्थियों के पास कक्षा 10 के बाद अगले चरण में विशेष रूप से फिर से प्रवेश करने का विकल्प होगा ताकि वे स्वेच्छानुसार कक्षा 11-12 में उपलब्ध किसी भी अन्य पाठ्यक्रम को ले सकें, जिसमें विशेष स्कूल भी शामिल होंगे। इस स्तर पर विद्यार्थियों को अधिक परियोजना-आधारित शिक्षण, सामूहिक और सहयोगी शिक्षण के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं, जिसमें पोर्टफोलियो विकास पर ध्यान केंद्रित करना होगा। विद्यार्थियों को स्कूल में रहते हुए व्यवसाय चलाने से सम्बंधित उत्पाद बनाने की अनुमति भी दी जा सकती है, जो समय-समय पर समुदाय के लिए आयोजित मेलों/प्रदर्शनियों, बिक्री प्रतियोगिताओं, उत्पादन-सह-प्रशिक्षण केंद्रों, इनक्यूबेशन केंद्रों आदि के माध्यम से प्रदर्शित या विक्रय हो सकती है।

स्कूलों को प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के लिए संस्थागत विकास योजना (Institutional Development Plan; IDP) तैयार करनी चाहिए। आईडीपी को बुनियादी विकास ढाँचा, शैक्षणिक संरचना, मानव संसाधन की वृद्धि, प्रशासनिक और पाठ्यचर्या सुधार, प्रभावी संस्थागत

शासन, मूल्यांकन और परीक्षा सुधार, सामुदायिक विस्तार कार्यक्रम, विद्यार्थी विनिमय कार्यक्रम, हितधारक भागीदारी, कौशल केंद्रों के साथ साझेदारी, उद्योग-अकादमिक के बीच संपर्क, इनोवेशन और स्टार्ट-अप इन्क्यूबेशन सेंटर, एवं खुले और मिश्रित अधिगम को बढ़ावा देना आदि के संदर्भ में संस्थान को प्राप्त करने योग्य लक्ष्यों की पहचान करनी चाहिए और उन्हें प्रभावी ढंग से लागू करने के प्रयास करने चाहिए ।

स्कूल प्रभावशीलता का उद्देश्य स्कूल के भीतर उन कारकों को दर्शाता है जो विद्यार्थियों के सीखने के परिणामों को बढ़ाते हैं। एक समग्र तरीके से पूर्व निर्धारित शैक्षिक मानकों का प्रदर्शन, स्कूल की प्रभावशीलता एवं गुणवत्ता का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। इन पहलुओं की झलक स्कूल मानक और मूल्यांकन पर राष्ट्रीय कार्यक्रम (National Programme on School Standards and Evaluation; NPSSE) या शाला सिद्धि कार्यक्रम में दिखती है, जो व्यक्तिगत स्कूल और इसके प्रदर्शन का समग्र और निरंतर तरीके से मूल्यांकन करने के लिए संदर्भित करता है, जिससे स्कूल में क्रमिक तरीके से सुधार हो और सीखने के परिणामों के लिए स्कूल प्रदर्शन मूल्यांकन को संस्थागत बनाने के लिए एक गति प्रदान की जा सके। इसमें स्कूल के संसाधन, शिक्षण-अधिगम मूल्यांकन, शिक्षार्थी की प्रगति, शिक्षक प्रदर्शन, स्कूल नेतृत्व और प्रबंधन, समावेशन, स्वास्थ्य और सुरक्षा, और उत्पादक सामुदायिक भागीदारी जैसे डोमेन्स के लिए मानक निर्धारित किए गए हैं।

2.4. सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से अधिक निजी सहभागिता-

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की स्थापना 2008 में सरकार द्वारा कौशल विकास में निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के रूप में की गई थी। कुशल भारत मिशन के अंतर्गत भारत के प्रत्येक जिले में अत्याधुनिक मॉडल प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किये गए हैं। इन मॉडल प्रशिक्षण केंद्रों को प्रधानमंत्री कौशल केंद्र (पीएमकेके) के नाम से जाना जाता है। एनएसडीसी प्रति पीएमकेके अधिकतम 70 लाख रुपए तक के

सुरक्षित ऋण के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करता है। 812 आवंटित पीएमकेके में से 738 पीएमकेके स्थापित किये जा चुके हैं (मई 2020)।

क्षेत्र कौशल परिषदों (SSCs) को एनएसडीसी द्वारा स्वायत्त उद्योगनीत निकायों के रूप में स्थापित किया गया है। ये व्यावसायिक मानक और अर्हता निकाय सृजित करती हैं, क्षमता ढाँचे का विकास करती हैं, प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का संचालन करती हैं, कौशल अंतराल अध्ययन करती हैं और उनके द्वारा विकसित राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों से जुड़े पाठ्यक्रम पर प्रशिक्षुओं का आकलन और प्रमाणन करती हैं। वर्तमान में 38 क्षेत्र कौशल परिषदें चल रही हैं।

प्रधानमंत्री कौशल केंद्र और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण केंद्र विद्यार्थियों को रोज़गार के लिए तैयार करने के उद्देश्य से चलाये जाते हैं ताकि कुशल जनशक्ति की माँग और आपूर्ति के बीच बेमेल को कम किया जा सके। कौशल अंतर विश्लेषण और स्थानीय अवसरों की कौशल मैपिंग के आधार पर व्यावसायिक शिक्षा को उपलब्ध कराना होगा। इस ढाँचे की संरचना के लिये आवश्यक है शुरुआती चरण में विद्यार्थियों को बाज़ार और रोज़गार से संबंधित जानकारी प्रदान करायी जाये, और अधिक से अधिक निजी भागीदारी को सुनिश्चित किया जाये। विद्यार्थी को ऐसे अवसर प्रदान करने होंगे जिससे कि वह नियोक्ताओं के साथ खुद लिंक बनाये न कि सिर्फ स्कूल से ऐसी अपेक्षा रखें। निजी भागीदारी के सहयोग से डिजिटल फोटोग्राफी, ललित और प्रदर्शन कला, रंगमंच गतिविधियों, ग्रीन क्लबों, साहित्यिक गतिविधियों, एनीमेशन, डिजाइनिंग, खेल आदि के लिए कौशल के महत्व, कौशल की प्रक्रिया और व्यवसायों में शामिल विभिन्न कार्यों और कौशल के बारे में विद्यार्थियों के बीच जागरूकता पैदा विभिन्न क्लबों की स्थापना करने में उपयोगी होगी।

2.5. परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम और मूल्यांकन

पाठ्यचर्या सुधारों और निर्माण के बारे में एनईपी-2020 की सिफारिशों को लागू करने के लिए, चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क विकसित किए जा रहे हैं, जिनमें प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क, शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क और वयस्क शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क शामिल हैं। इस संबंध में शिक्षा मंत्रालय और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा संयुक्त रूप से एक व्यापक कवायद की जा रही है। राज्य स्तर पर, सभी राज्य / केंद्र शासित प्रदेश एनईपी-2020 के अनुसार पहचाने गए 25 क्षेत्रों / विषयों में राज्य फोकस समूहों द्वारा जिला स्तरीय परामर्श, मोबाइल ऐप सर्वेक्षण और स्थिति प्रपत्र के विकास की प्रक्रिया से गुजरकर राज्य पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क तैयार करेंगे। राज्य फोकस समूह पहचान किए गए क्षेत्रों/विषयों और चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क एवं 25 स्थिति प्रपत्रों के विकास के लिए इनपुट देंगे।

पीएसएस केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (PSS Central Institute of Vocational Education; PSS-CIVE) ने निम्नलिखित 19 क्षेत्रों में 152 कार्य भूमिकाओं (जॉब रोल) के लिए सीखने के परिणाम-आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए तैयार किये हैं: कृषि, परिधान, मेड-अप और होम फर्निशिंग, ऑटोमोटिव, बैंकिंग, वित्तीय सेवाएँ और बीमा, सौंदर्य और कल्याण, निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक्स और हार्डवेयर, खाद्य प्रसंस्करण, स्वास्थ्य देखभाल, सूचना प्रौद्योगिकी-आईटी सक्षम सेवाएँ, मीडिया और मनोरंजन, शारीरिक शिक्षा और खेल, नलसाजी, पावर, (31) निजी सुरक्षा, खुदरा, दूरसंचार, पर्यटन और आतिथ्य, और परिवहन, रसद और भंडारण। व्यावसायिक पाठ्यक्रम को दो भागों में विभाजित किया गया है: भाग-1 में निम्नलिखित 5 माड्यूल हैं (क) संचार कौशल, (ख) स्व-प्रबंधन कौशल, (ग) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी कौशल, (घ) उद्यमशीलता कौशल, और (ड) ग्रीन कौशल शामिल है। भाग-2 में व्यवसाय या कार्य भूमिका (जॉब रोल) के अनुसार व्यावसायिक कौशल पाठ्यक्रम शामिल हैं। व्यावसायिक शिक्षा के छेत्र में हरित कौशल और प्रथाओं को बढ़ावा देने और ग्रीन ट्रांजिशन का समर्थन करने के लिए यूरोपीय प्रशिक्षण फाउंडेशन ने पीएसएस सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ वोकेशनल एजुकेशन, भोपाल को ग्रीन स्किल्स अवार्ड- 2021 से सम्मानित किया है।

एनईपी-2020 के अनुसार आकलन 360 डिग्री, समग्र, नियमित, रचनात्मक एवं दक्षता आधारित होना चाहिए, जिससे बहु-आयामी रिपोर्ट कार्ड तैयार की जा सके और विद्यार्थियों का विषय के साथ-साथ उनकी विशिष्ट उपलब्धियों एवं दक्षता-आधारित प्रगति का विवरण दिया जा सके। इसमें शिक्षक द्वारा आकलन के अलावा स्व-आकलन एवं साथी या समूह द्वारा आकलन भी शामिल होगा। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा लाए गए स्ट्रक्चर्ड असेसमेंट फॉर ऐनालाइजिंग लर्निंग दिशानिर्देशों के माध्यम से अधिगम के परिणामों द्वारा चरणबद्ध तरीके से छात्रों का मूल्यांकन किया जायेगा और यह एक महत्वपूर्ण कदम है। स्कूलों में शिक्षार्थियों के कौशल मूल्यांकन के लिए बड़ी संख्या में मूल्यांकनकर्ताओं की आवश्यकता होगी। एनईपी-2020 की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए छात्रों के मूल्यांकन और मानदंड के दिशानिर्देश और मानक निर्धारित करने के लिए एक नया मूल्यांकन केंद्र, परख (प्रदर्शन, मूल्यांकन, समीक्षा और ज्ञान का विश्लेषण) भी स्थापित किया गया है। इसके लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद ने अपनी वेबसाइट पर एक वेब पोर्टल लॉन्च किया है। यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सुधार, प्रमाणन जवाबदेही एवं गुणवत्ता मानकों को आधार बनाने में मदद करेगा।

2.6. उद्योग विशिष्ट कौशलों में शिक्षकों, प्रशिक्षकों और प्रशिक्षण की क्षमता का निर्माण

वर्तमान में, 1.55 मिलियन सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी गैर-सहायता प्राप्त स्कूलों में 9.5 मिलियन शिक्षक हैं। DISE 2018-19 से लगभग 27 प्रतिशत शिक्षक शहरी स्कूलों में कार्यरत हैं और लगभग 73 प्रतिशत शिक्षक ग्रामीण स्कूलों में काम कर रहे हैं। व्यावसायिक शिक्षक का ज्ञान और कौशल विद्यार्थियों को सीखने और मूल्यांकन की प्रभावकारिता को निर्धारित करते हैं। इसके अलावा, व्यावसायिक शिक्षक को उद्योग में काम करने का अनुभव भी होना चाहिए जिससे वह विद्यार्थियों को काम-आधारित ज्ञान और कौशल प्रदान कर सके। कई राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा व्यावसायिक शिक्षकों की नियमित नियुक्ति नहीं की गई है, जिससे कई महवपूर्ण विषय क्षेत्रों में बड़ी संख्या में रिक्तियाँ हैं। संविदात्मक व्यावसायिक शिक्षक की नियुक्ति ने शिक्षक की प्रेरणा और प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

एनईपी-2020 शिक्षकों और प्रधानाचार्यों के पेशेवर विकास को जारी रखने के लिए एक रूपरेखा तैयार

करने का सुझाव देती है और योग्यता और उत्कृष्ट कार्य के आधार पर शिक्षकों की ऊर्ध्वाधर गतिशीलता (Vertical Mobility) पर जोर देती है। इसके लिए राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा और राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक तैयार करेगी। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद स्कूल शिक्षकों की भर्ती के लिए न्यूनतम शैक्षिक और व्यावसायिक अर्हताएँ निर्धारित करता है। नए सीखने के तरीकों और वेब-आधारित मुफ्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम, जैसे मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सिस और वर्चुअल लर्निंग शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए उपयोग किए जाने चाहिए। शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षित करने के कार्यक्रमों के अलावा पीएसएस केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल दूरस्थ-सह-संपर्क के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण में डिप्लोमा कार्यक्रम भी चला रहा है ।

एनसीईआरटी ने सीखने के अधिगम-परिणामों पर केंद्रित सुधार और शिक्षकों की क्षमता के निर्माण के लिए निष्ठा (National Initiative for School Heads and Teachers Holistic Advancement; NISHTHA) नामक एक एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। इसमें उच्च प्राथमिक (मध्य चरण) शिक्षकों के लिए सामान्य शिक्षा के साथ, पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और माध्यमिक शिक्षकों के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर मॉड्यूल उपलब्ध कराए हैं। ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण एवं बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई के लिए दीक्षा (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing; DIKSHA) नाम की एक वेबसाइट और एप लांच किया गया है। इसमें हाल ही में व्यावसायिक शिक्षा के लिए एक अलग से वेबपोर्टल बनाया गया है जिससे शिक्षकों और बच्चों को पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो सके और वह इसके द्वारा प्रशिक्षण भी ले सकें। इसी तरह स्वयं (Study Webs of Active-Learning for Young Aspiring Minds; SWAYAM) का उपयोग शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री ई-विद्यायोजना के अंतर्गत सरकार 1 से लेकर 12वीं तक के विद्यार्थियों को घर बैठे ही ऑनलाइन शिक्षा देने का काम करेगी। यह डिजिटल / ऑनलाइन / ऑन-एयर शिक्षा से संबंधित सभी प्रयासों को एकीकृत करती है। इसमें सभी राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों के लिए स्कूली शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण ई-सामग्री प्रदान करने के लिए दीक्षा, स्वयं, मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सिस, आईआईटी जॉइन्ट एंट्रेंस एग्जाम / नेशनल एलिजबिलिटी-कम-एंट्रेंस एग्जाम (NEET) की तैयारी और स्कूली विद्यार्थियों के लिए इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी प्रोफेसर असिस्टेड लर्निंग; सामुदायिक रेडियो और सीबीएसई शिक्षा वाणी पॉडकास्ट; और डिजिटल रूप से सुलभ सूचना प्रणाली (Digitally Accessible Information System; DAISY) पर विकसित दिव्यांगों के लिए पर सांकेतिक भाषा में अध्ययन सामग्री उपलब्ध की जा रही है। एक अलग चैनल जिस पर व्यावसायिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विशेषज्ञों के साथ वीडियो फिल्मों और लाइव इंटरैक्शन का प्रसारण भी किया जायेगा। इससे देशभर में करीब 25 करोड़ स्कूल जाने वाले बच्चों को फायदा होगा। वर्ष 2022-23 में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में कौशल को बढ़ावा देने हेतु एवं रचनात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने के लिए 75 कौशल ई-प्रयोगशालाएँ विकसित की जाएँगी।

2.7 ओपन और डिस्टेंस लर्निंग द्वारा विस्तार करने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों का उपयोग

समय, स्थान और सीखने की प्रक्रिया के संदर्भ में विद्यार्थियों को लचीली शिक्षा के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। कोविड-19 महामारी और नए सामान्य (New Normal) बनने के पश्चात डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाने में तेजी आई है एवं कामकाजी दुनिया में भी बदलाव आया है, जिसने शिक्षण-अधिगम के पारंपरिक तरीकों को शिक्षण-अधिगम के मिश्रित तरीकों में बदल दिया है, जिससे अब डिजिटल टेक्नोलॉजी और ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग की अधिक माँग हो रही है। इसको ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को अध्ययन करने के लिए विषयों की पसंद में वृद्धि की जाएगी एवं ज्यादा लचीलापन भी लाया जायेगा। क्रेडिट-आधारित फ्रेमवर्क सामान्य शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा में सामंजस्य प्रदान करेगा ।

आर्थिक रूप से वंचित समूहों (Socio-economically Disadvantaged Groups; SEDGs) पर विशेष जोर दिया जाना है और औपचारिक और गैर-औपचारिक शिक्षा को शामिल करते हुए सीखने के लिए कई मार्गों को स्कूल शिक्षा के दायरे में लाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय

मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) और राज्य मुक्त विद्यालयों (SOSs) द्वारा व्यावसायिक शिक्षा की जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे।

3. उच्च शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा की व्यापक योजना का निर्माण-

एनईपी-2020 में कहा गया है कि बहु-विषयक संस्थानों की स्थापना की जाएगी जिससे पेशेवर, व्यावसायिक और दूरस्थ शिक्षा को उच्च शिक्षा प्रणाली में एकीकृत किया जा सके। एनईपी-2020 का उद्देश्य है की 2035 तक सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को 50 प्रतिशत तक बढ़ाकर व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण सहित उच्च शिक्षा का विस्तार किया जाये। डिप्लोमा, उन्नत डिप्लोमा, बैचलर इन वोकेशनल स्टडीज, मास्टर्स इन वोकेशनल स्टडीज आदि सहित कई व्यावसायिक शिक्षा के कार्यक्रमों में वृद्धि करने की जरूरत है। एनईपी-2020 के अनुसार उच्चतर शिक्षा संस्थानों को समकालीन प्रासंगिकता के कार्यक्रमों को शुरू करने के लिए नए विभागों की स्थापना करनी चाहिए, जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजाइन थिंकिंग, ऑर्गेनिक लिविंग, ग्रीन एजुकेशन, मशीन लर्निंग, ब्लॉक चेन, ग्लोबल सिटीजनशिप एजुकेशन, आदि। अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट योजना द्वारा बनाई गई क्रेडिट संचय सुविधा का लाभ विद्यार्थियों द्वारा उठाया जा सकेगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अर्हता फ्रेमवर्क से अधिगम मार्गों में लचीलेपन और क्रेडिट के हस्तांतरण को बढ़ावा मिलेगा। पूर्व शिक्षा की मान्यता (Recognition of Prior Learning) और खुले और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को उच्च शिक्षा से एकीकृत करने के लिए भी परिकल्पना की गई है।

4.0 अग्रवर्ती विचार

एनईपी-2020 के अनुसार एक अच्छी शैक्षणिक संस्था वह है जिसमे प्रत्येक छात्र का स्वागत किया जाता है और उसकी देखभाल की जाती है, जहाँ सुरक्षित और प्रेरणादायक शिक्षण वातावरण मौजूद होता है, जहाँ सभी छात्रों को सीखने के लिए विविध प्रकार के अनुभव उपलब्ध कराए जाते हैं, और जहाँ सीखने के लिए अच्छे बुनयादी ढाँचे और उपयुक्त संसाधन उपलब्ध हैं। व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम श्रम बाजार में प्रवेश करने के लिए तकनीकी कौशल और योग्यता की माँग एवं आजीवन सीखने को बढ़ावा देने में मदद करती है। वयस्क शिक्षा पाठ्यक्रम, जिन्हें अक्सर निरंतर शिक्षा पाठ्यक्रमों के रूप में जाना जाता है को बड़े पैमाने पर उपलब्ध करने होंगे। फिनलैंड में वोकेशनल क्वालिफिकेशन एक्ट, जो 1994 में लागू हुआ था, सभी वयस्कों के लिए ओपन कौशल-आधारित परीक्षा का मौका देता है, भले ही उन्होंने अपने पेशेवर कौशल का अधिग्रहण कैसे भी किया हो। इसका उद्देश्य वयस्कों के शैक्षिक स्तर को बढ़ाना, शैक्षिक प्राप्ति में पीढ़ी के अंतर को कम करना और व्यावसायिक वयस्क शिक्षा के पूरे

क्षेत्र को सम्मिलित कर एक राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन प्रणाली स्थापित करना है। इसके तीन फायदे हैं- वयस्क आजीवन शिक्षार्थी बने रहेंगे, वे दूसरों को सही परवरिश, पालन-पोषण और जीवन के मूल्यों को समझा सकेंगे अथवा उन्हें राष्ट्र के एक सभ्य और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित कर सकेंगे। इस तरह के कदम असंगठित क्षेत्र में कार्यबल (वर्कफोर्स)को कुशल बनाने और उसके माध्यम से उत्पादकता और उत्पादन में वृद्धि एवं आय बढ़ाने में मदद करेंगे । विभिन्न क्षेत्रों में केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा योजनाओं और नई पहल, जैसे कि हरित और स्वच्छ ऊर्जा, स्वच्छ पानी, स्वच्छ पर्यावरण, परिशुद्ध खेती, ड्रोन प्रौद्योगिकी आदि के लिए व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को उपलब्ध कराने होंगे ।

एनईपी-2020 ऐसे बच्चों की पहचान करने के लिए कहती है जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया है अथवा स्कूल से बाहर हैं और यह उनकी औपचारिक शिक्षा प्रणाली में वापसी पर ठोस कदम उठाना चाहती है। स्कूल न जाने वाले बच्चों, जिनका कभी नामांकन नहीं हुआ, स्कूल छोड़ के जाने वाले बच्चे अथवा जो बच्चे जोखिम में हैं, उनको जीवन कौशल के साथ प्राथमिक, मध्य और माध्यमिक स्तरों पर त्वरित अधिगम के माध्यम से वैकल्पिक मार्ग और शिक्षा लेने के लिए दूसरा मौका प्रदान किया जाना चाहिए। इनके लिए अल्पकालिक कौशल-आधारित व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत करनी चाहिए। सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता और छात्रवृत्तियाँ प्रदान करने से बच्चे और युवा व्यावसायिक शिक्षा के प्रति आकर्षित होंगे और इसका तेजी से विस्तार होगा। केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 3.0 के अंतर्गत 'स्किल्स हब इनिशिएटिव' द्वारा स्कूल छोड़ चुके बच्चों और युवाओं एवं स्कूल न जाने वाले बच्चों और युवाओं को रोज़गारपरक शिक्षा से जोड़ने के लिये प्रावधान किया है। यह एक अच्छी पहल है और इसे बच्चों एवं वयस्कों के लाभ के लिए विस्तारित किया जाना चाहिए।

संदर्भ-

एमएचआरडी (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार https://www.education.gov.in/साइट्स/uploadfiles/mhrd/फाइलें/NEPFinalEnglish®.pdf। से 19 मई 2022 को लिया गया है।

एमएचआरडी (2021), सार्थक (Students and Teachers Holistic Advancement through Quality Education; SARTHAQ)- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए कार्यान्वयन योजना भाग-1, स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। https://www.education.gov.in/साइट्स/uploadfiles/mhrd/files/uploaddocument/SARTHAQ भाग-v updated.pdf से 20 मई 2022 को लिया गया है ।

NIEPA. शाला सिद्धि (National Programme on School Standards and Evaluation; NPSSE) National Institute of Educational Planning and Administration (NIEPA). https://shaalasiddhi.niepa.ac.in/shaalasiddhi/Account/ShaalaSiddhiLogin से 21 मई, 2022 को लिया गया है।

ओईसीडी (2020), एक नज़र में शिक्षा 2020, कंट्री नोटः फिनलैंड, https://gpseducation.oecd.org/Content/EAGCountryNotes/EAG2020CNFIN.pdf से 21 मई 2022 को लिया गया है ।

संयुक्त निदेशक (प्रभारी), पीएसएस केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, श्यामला हिल्स, भोपाल- 462 002, मध्यप्रदेश

तिरंगे का सफर

देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 26 जनवरी, 1950 को इर्विन स्टेडियम मे 21 तोपों की सलामी के साथ तिरंगे झंडे को फहरा कर भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया था। भारत में तिरंगे का मतलब है भारतीय राष्ट्रीय ध्वज। तिरंगा हमारे देश की आन, बान व शान का प्रतीक है। भारत की ताकत, समृद्धि, सभ्यता व उसकी संस्कृति को तिरंगे झंडे मे देखा जा सकता है। राष्ट्रीय ध्वज हमें देश की गरिमा व गौरव की रक्षा के लिए तत्पर रहने की प्रेरणा देता है।

वैसे तो तिरंगे का सफर बहुत लंबा व मज़ेदार रहा है। इस लंबे सफर में तिरंगे ने कई रंग-रूप बदले। अनेक पड़ाव पार करने वाला राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा आज हमारे देश की शान है। पहला राष्ट्रीय ध्वज 7 अगस्त, 1906 में ग्रीन पार्क कोलकाता में फहराया गया था। यह ध्वज लाल,पीले व हरे रंग की पट्टियों से बनाया गया था। बीच में पीले रंग पर वंदेमातरम लिखा था। नीचे लाल रंग पर एक तरफ चंद्र व दूसरी तरफ सूरज बना था। दूसरा राष्ट्रीय ध्वज 1907 में भीकाजी कामा ने कुछ क्रांतिकारियों के साथ पेरिस में फहराया था। इसमें सबसे ऊपर वाली पट्टी पर सात तारे सप्त ऋषि के रूप में अंकित थे। तीसरी प्रकार का ध्वज होमरूल आंदोलन में 1917 में डॉ. एनीबेसैंट और तिलक ने फहराया था। इस झंडे मे 5 लाल व 4 हरी पट्टियाँ तथा सात सितारे थे। एक कोने पर अर्धचंद्र भी बनाया गया था। वर्ष 1921 में भारतीय कांग्रेस कमेटी ने विजयवाड़ा में लाल व हरे रंग का एक चौथा झंडा तैयार किया। महात्मा गांधी के कहने पर इसके बीच में एक सफेद रंग की पट्टी को जोड़ा गया जिस पर प्रगति का प्रतीक चरखा भी बनाया गया। यह भारत की स्वशासन की माँग का प्रतीक बना व स्वराज ध्वज कहलाया। वर्ष 1931 में तिरंगे झंडे को कांग्रेस के कराची सम्मेलन में भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाने के लिए प्रस्ताव पास किया गया। इस झंडे मे केसरिया, सफेद व हरा, तीन रंग थे। प्रस्ताव में यह भी पास किया गया कि ये तीन रंग किसी समुदाय के प्रतीक नहीं होंगे। 22 जुलाई, 1947 को तिरंगे को आज़ाद भारत के राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया गया। 1947 से पहले राष्ट्रीय ध्वज का स्वरूप पाँच बार बदला गया। इसमें चरखे के स्थान पर अशोक चक्र को लगाया गया। इसके बाद इसे भारत गणराज्य का राष्ट्रीय ध्वज माना गया। राष्ट्रीय ध्वज के वर्तमान स्वरूप का डिज़ाइन आंध्रप्रदेश के 45 वर्षीय पिंगली वेंकैया ने बनाया था। सबसे बड़ा मानव राष्ट्रीय ध्वज 2014 में चैन्नई में पचास हजार स्वयं सेवकों ने अपने हाथों से बनाया था। यह अब तक का सबसे बड़ा मानव ध्वज था। भारत के राष्ट्रीय ध्वज से बिल्कुल मिलता जुलता ध्वज नाइजर देश का है जो केसरिया, सफेद व हरे रंग का बना है लेकिन अशोक-चक्र के स्थान पर केसरी रंग का गोल बिंदु है।

भारत में फ्लैग कोड ऑफ इंडिया के नाम से कानून बनाया गया है, जिसमें तिरंगे को फहराने के नियम निश्चित किए गए हैं। राष्ट्रीय ध्वज के प्रदर्शन के समय कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है। किसी भी सूरत में तिरंगा पानी व जमीन को नहीं छूना चाहिए। इसका उपयोग किसी वस्तु को ढकने, यूनीफार्म, पर्दे व सजावट के लिए नहीं किया जा सकता। यदि झंडे को खुले में फहराया जाता है तो फहराने का समय सूर्योदय के बाद व सूर्यास्त से पहले का है। शहीद के शव को तिरंगे में लपेटा जाता है तब केसरिया सिर की तरफ व हरा पैरों की तरफ रखा जाता है उस समय भी झंडे को जमीन पर नहीं रखा जाता और न ही शव के साथ जलाया जाता है। झंडे पर कोई आकृति बनाना व लिखना दंडनीय अपराध है। राष्ट्रीय ध्वज के समीप किसी दूसरे झंडे को बराबर या उससे ऊपर नहीं फहराया जा सकता। कोई भी नागरिक कभी भी राष्ट्रीय झंडे को अपने घर या ऑफिस के ऊपर फहरा सकता है, इसकी अनुमति 22 दिसंबर, 2002 में दी गई। तिरंगे को रात में फहराने की अनुमति वर्ष 2009 में दी गई। तिरंगे को बनाने के लिए ऊन, कोटन, सिल्क व खादी का ही उपयोग किया जाता है। प्लास्टिक का झंडा बनाने पर मनाही है। क्षतिग्रस्त व फटा हुआ झंडा नहीं फहराया जाता। शव के अंतिम संस्कार के बाद झंडे को गोपनीय तरीके से सम्मान के साथ वजन बाँधकर जल समाधि दी जाती है। किसी गाड़ी के पीछे, नाव तथा हवाई जहाज पर तिरंगा नहीं लगाया जा सकता। किसी मंच पर तिरंगा फहराते समय तिरंगा वक्ता के हमेशा दाहिनी तरफ होना चाहिये। आओ, सभी देशवासी राष्ट्र की सबसे बड़ी ताकत राष्ट्र ध्वज का सम्मान करें ।

प्रवक्ता धर्म सिंह गहली
राकवमा विद्यालय दुलोठ अहीर
जिला- महेंद्रगढ़, हरियाणा

गायन, वादन एवं नृत्य की त्रिवेणी अरमान

यदि किसी प्रतिभा को उचित समय पर मार्गदर्शन, मंच एवं प्रोत्साहन मिल जाए तो उसे निखरने में देर नहीं लगती। रेवाड़ी जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय (बाल) बावल के बहुमुखी प्रतिभा के छात्र अरमान को देखकर ऐसा कहा जा सकता है। लोक नृत्य में राज्य स्तर पर विजेता रह चुका अरमान गायन तथा वादन से भी जुड़ा है। इतना ही नहीं, वह पढ़ाई में भी अव्वल रहता है। आठवीं कक्षा में वह अपनी कक्षा में दूसरे स्थान पर रहा है। एनएमएमएस की परीक्षा में मात्र दो अंकों से रह गया था। इसके अलावा चित्रकला में उसकी विशेष रुचि है। अपने इन्हीं गुणों के चलते गायन, वादन एवं नृत्य की त्रिवेणी अरमान छोटी उम्र में ही बड़ी पहचान हासिल कर चुका है।

30 सितंबर, 2008 को खैरथल (राजस्थान) में जन्मा अरमान अब राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बावल में नौवीं कक्षा का छात्र है। एक कंपनी में सेवारत उसके माता-पिता जयवीर तथा इंदू के साथ पिछले कुछ वर्षों से बावल में ही रह रहा है। विद्यालय की संगीत प्राध्यापिका संजीता यादव ने इस छात्र में नृत्य की अतिरिक्त मौलिक खूबी देखी। उन्होंने अरमान को पहले विद्यालय स्तर तथा फिर शिक्षा विभाग की विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए मार्गदर्शन करते हुए निरंतर मंच प्रदान करवाए। हरियाणवी एकल लोक नृत्य में अरमान ने इस विशेष मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। बात चाहे शिक्षा विभाग के टैलेंट सर्च की हो या फिर कल्चरल फेस्ट की हो, वह सदा राज्य स्तर तक प्रथम स्थान पर ही रहा। इतना ही नहीं, जिला बाल कल्याण परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित उस बाल महोत्सव में उसने राज्य स्तर तक अवल रहकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया, जिसमें नब्बे प्रतिशत से अधिक प्रतिभागिता एवं पुरस्कार केवल प्राइवेट स्कूल ही लेते रहे हैं। पिछले दिनों हरियाणा प्रदेश के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय द्वारा पंचकूला में अरमान को इस विशेष उपलब्धि के लिए सम्मानित किया गया, जिसमें राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार अर्जित करने वाला सरकारी स्कूल का वह एकमात्र छात्र रहा।

विद्यालय की संगीत प्राध्यापिका संजीता यादव का मानना है कि विद्यालय के प्राचार्य प्रदीप कुमार जी बच्चों के चहुँमुखी विकास हेतु निरंतर समर्पित रहते हैं, तभी अरमान जैसी प्रतिभाओं को राज्य स्तर तक पहुँचाया जा सका है। जिला बाल कल्याण अधिकारी वीरेंद्र यादव का मानना है कि बाल भवन में जब भी कोई बड़ा फंक्शन होता है तो हमें प्रस्तुति के लिए अनायास अरमान याद आते हैं।

अरमान आजकल हारमोनियम तथा ढोलक वादन सीख रहा है। वह पढ़ाई के साथ कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी निरंतर निखर रहा है। कुल मिलाकर अरमान को संभावनाओं का एक बड़ा कलाकार कहा जा सकता है, जो आने वाले समय में अपने माता-पिता तथा गुरुजन का नाम रोशन करेगा- ऐसा विश्वास है।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक, रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
बावल (बाल), रेवाड़ी, हरियाणा

2022

अगस्त-सितंबर माह के त्यौहार व विशेष दिवस

7 अगस्त- राष्ट्रीय हथकरघा दिवस
9 अगस्त- मुहर्रम
11 अगस्त- रक्षाबंधन
12 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस
15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस
18 अगस्त- जन्माष्टमी
19 अगस्त- विश्व फोटोग्राफी दिवस
20 अगस्त- सद्भावना दिवस
21 अगस्त- विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस
29 अगस्त- राष्ट्रीय खेल दिवस
14 सितंबर- हिंदी दिवस
23 सितंबर- हरियाणा वीर एवं शहीदी दिवस
26 सितंबर- महाराजा अग्रसेन जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Employment perspective in NEP – 2022

National Education Policy 2022 has put forth a grand vision of according Vishvaguru status to India once again. One major dimension of this status is, obviously, a robust roadmap for providing desired skill sets to our youth, so that they can either enter into self-employment or groom their employability up to appropriate levels. Making our youth employable is an all pervasive concern which is reflected through this policy document in all major areas i.e. School Education, Higher Education, Vocational and Technical Education and Teacher Education. For the first time, it has been recommended that our young students should be introduced to the world of work right from class 6th. Curriculum frameworks at secondary and higher education level are to be modified in such a way that vocational aspects are well taken care of. This article specially focusses on employability aspects for the prospective teachers.

The first area which is going to open employment opportunities for prospective teachers is the Early Child Care and Education (ECCE). Although there are thousands of play schools still operating through private sector, but these schools are mostly situated in urban areas. In rural areas too, department of Women and Child Development runs Anganvadis to address the mandate of Early Child Care. But when NEP 2020 comes fully in force, all those who are working as teachers/ caregivers will be required to get appropriate qualifications framework to be employable in this area. Besides this, lakhs of new ECCE teachers will be required for the new ECCE centers. Therefore, all those who have got some diploma level qualification in primary education will be required to upgrade it in ECCE so that they can find a respectable place in the new domain which is coming up in a big way. Existing TEI's which have been seriously engaged in various other courses of teacher education also need to think of offering courses in ECCE to fulfill the huge demand that will be created through ECCE.

Clause 4.12 and 4.14 in NEP emphasise the need for hiring a large number of new teachers in regional languages. Obviously same will be obligatory for the private school sector also, resulting in a huge demand for the teachers of various regional languages. Besides this, policy speaks about creating teaching learning materials in bilingual modes, this will necessitate an army of those language teachers who will be proficient in at least two languages. In this way multilingualism is going to create enormous opportunities for prospective teachers.

NEP talks about a complete overhaul of recruitment process where demonstration of teaching skills and assessment of comfort in teaching through local languages will become an integral part of this process. This dimension will thrust upon the prospective teachers to revisit their existing skill sets in the light of new parameters.

NEP 2020 has made Indian Knowledge system an integral component of every subject/ discipline. This will necessitate a thorough relooking in to our existing undergraduate level and teacher education curricula. Already some

universities have announced diploma/ degree level programmes in Indian knowledge system. Therefore those who are currently pursuing their bachelor degree programme and wish to enter into teaching profession, should seriously think of adding some certificate / diploma in IKS in their qualification basket so that they are considered fit for employment as per NEP.

NEP lays a roadmap of key changes in assessment systems and patterns. A national level agency PARAKH is going to be established to kickstart the proposed changes. But the most significant imperative of these changes is that the system will need a huge number of teaching/ academic personnel who are grounded into the nuances of assessment and measurement. Generally, ability to either construct innovative test items or to review the constructed test items is in extremely short supply among practicing teachers at both the levels of education i.e., schools and higher education. This situation again presents an opportunity before TEI's and other educational agencies to upgrade the skills of existing teachers in assessment and measurement.

Clause 5.21 of NEP addresses the issue of special education and the requirement of special educators in large numbers. Policy envisions that hiring of special educators by each school will be desirable. But this is likely to be made mandatory at the cluster level. This again highlights an area where requirement of teachers will be generated by the education system. Prospective teachers for the next 5 to 10 years should seriously think of adding their skills in special education.

NEP has shown us an area where senior teachers, even the retired ones will be required in big numbers. This area is assessment and accreditation. Policy makes it compulsory for public as well as private schools to be assessed and accredited on regular basis. This will generate the requirement of such professionals who besides being an

educator are well grounded into the procedures and nuances of institutional assessment. Every state has been asked to create a State School Standards Authority (SSSA) for the said purpose. Therefore all those teachers who are in the mid of their careers and wish to enter into this domain should immediately think of upgrading their skills in the area of assessment and accreditation.

One important window that is going to be opened by NEP is CDP i.e., continuous professional development. Now at least 50 hours (One week) training for continuous Professional Development will be mandatory for all teachers including Govt. / Non-Govt. sectors. Presently there is structured arrangement of SCERT's and DIET's to address this requirement in relation to the teachers of Govt. schools. But we do not have any such structured system for non Govt. sector teachers. Therefore, credible organizations including SCERT's and well-meaning TEI's will have to open their gates for addressing CPD needs of lakhs of teachers. Again,mid-career teachers who have already proved themselves in their respective classrooms will be served with an offer of extending a helping hand in CPD.

NEP has categorically emphasized on the issues of governance and management in educational institutions from top to bottom. Something which is made loud and clear is that on one side academic community will be required to upgrade itself in leadership, administration and management, on the other side there will be requirement of a cadre which will have specialization in dealing with issues of educational Infrastructure, educational finances and maintenance of a supportive ecosystem for teaching and learning. A reflection on this scenario again underlines those areas where manpower with altogether new skills and attitudes will be required by the educational system with a huge scope of employability in the sector. All concerned need to take a call on this.

Dr. Rishi Goel
Director
State Institute of Advansed Studies in Teacher Education

Tell me a Story

Smt. Rupam Jha

Tell me a fact and I'll learn. Tell me the truth and I'll believe. But tell me a story and it will live in my heart forever." ***– Indian Proverb***

We all do fondly recall stories told to us by our grandmothers. Innocent minds would dwell on those stories long after the rendition of the story was over. Imagination being kinetic, the grandeur of kings fascinated us. Mythological tales instilled a feeling of perseverance and faith.Values of the good prevailing over the evil was instilled. Sociology says that the story telling is part of our Little Traditions and a window to our Great Traditions. Dance Drama, Samvaad have been an integral part of our Folk culture.

Society is dynamic and tectonic changes are taking place in society. But Audio books are back proving that acoustics has its charm. Podcast is now a popular method of receiving content and curriculum. So listen and remember is a learning methodology. A fact which is told in an interesting manner will always remain in the minds of the listener. So story telling method is an innovative way to teach. Subjects such as Social Studies can use this method of teaching.

Stories can also be created in the classroom with the use of the Story Board. Here all the facts are placed on display and can be recounted. This does become an entertaining way of learning. An original form of teaching, fostering emotional intelligence in the child so that the learner can gain insights into human behaviour. The teacher and the learner learns gestures and expressions and improves social skills. Retention is better for the student.

Oral traditions are able to recount events in a chronological manner. So Story Telling in teaching can be used to introduce a topic or to enhance a subject in an innovative manner. Here a teacher can tell the students a story and then get the students to enact a Role-Play on the basis of the story. Stories, not just oral but also digital, in video form with graphic description, over the podcast but all stories help in illustrating a concept. This enables the learner to visualise the concept.

An experiential form of learning, storytelling method creates a rapport between the instructor and the receiver of instructions. A binding power is in built in stories.NEP 2020 too advocates experiential learning for students. As a learning platform, it can be encouraged. A collateral benefit can be stress free learning and psychological impact too.

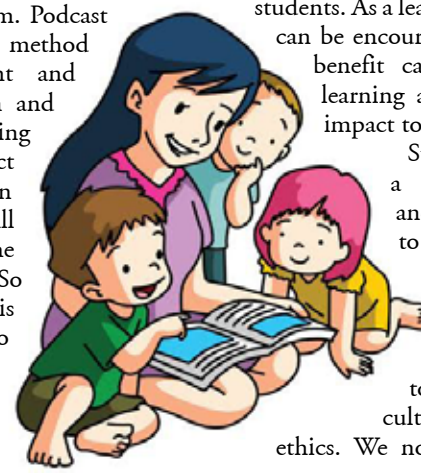

Story telling is a powerful tool and can be used to communicate as well as to educate. This technique may be used to teach values, cultural norms and ethics. We now talk of moral

values to be imparted by way of classroom instruction, and storytelling can be a medium to do so. Story telling is a narration of events in chronological order and it builds up knowledge this way.

There is alertness in a classroom where a story is being narrated but the ambience is relaxed so that the recipients can process the inputs step by step. This is an old method of teaching and learning where neither the teacher nor the learner feels the pressure of teaching and learning. So it becomes a smooth transfer of information to the recipient.

The Story telling method of teaching enhances the oral skills of the learner. As there is dramatics in it, the young learner learns to understand gestures, maintain eye contact and correct intonation of the voice. The collateral benefit is that the child learns how to face an audience, this going a long way in dispelling stage fright. Let the child soar new heights of thought and vision, this in turn becomes aspirational for the child. Here the educator goes by the philosophy of education that encourages the young learner to use the constructivism approach. The learner creates images of the story in his mind and hopes the same to happen to him.

Educators should be encouraged to incorporate this method of teaching-learning in their practise. It stands time-tested. Story telling method of teaching is innovative, maybe even out of the box but it is not new. Maybe what is left is to formally bring it into practise. As we explore new methods of teaching, here is one which has been practised.

NEP 2020 states the use of Story Telling Pedagogy as a standard teaching practise. Pedagogy being a teaching learning method which is child centred and child friendly and already in practise. Tales become stories and stories become real. Story Telling creates a cinematic effect in the minds of the learner.

Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

THE KITHCHEN CLINIC.....

Home remedies for all ailments!!!!

Today we will talk about Kitchen Clinic,
Where we have so many healings.
First we have Clove,
Which heals our tooth hole.
Then we have Tulsi as herb,
Which keeps us healthy and superb.
Now comes the turn of ginger and turmeric,
Which reduces inflammation and improve functioning.
Next in the line is mint,
Which gives us healthy hint.
If we eat coriander,
It reduces sugar.
Cumin is a leafy plant,
That work as antioxidant aunt.
Ajwain is common in the Indian food,
Which keeps our digestion cool.
The list is too long,
We cannot discuss it anymore.
This is our Indian kitchen,
Which is full of magical riddles.

Dr. Jyoti Arora
Subject Specialist
SCERT Haryana, Gurugram

The Gleam

His wheelchair gleams in the light of the room.
Like the epaulets and stars on his shoulders gleamed.
The boots polished till they gleamed like mirrors,
A young Lieutenant sent to face war's horrors.

The searchlight gleamed upon his bayonet,
As again and again he shoots and stabs blindly,
Streams of red blood gleam on white skin.
His dreams die but fallen the enemy lies.

Now a medal gleams on a mantel piece,
And dear old parent's eyes gleam with tears.
Yet the brave know no fear,
As the gleam of valour outlasts the tears.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Plantae: our Life

Looking for the green in the world of green
Beasts and birds are rarely seen
Tigers feeling blue, ants are keen
In the era of robotics it would be seen
Forest full of blocks, edifice
Oh! The dwellers have to sacrifice
Hear O hear their mournful cry
For man-made demise they sigh

Spirited deep rooted kind
Serving the generations: pined
Forcefully murdered for expansion
For raising malls and mansions
Patient Earth in ICU
Declining in health day by day
Alarming the globe, loudly say
Stop the felling of trees
Purify paint it green

Plant, plant, plant more trees
Happy home for doves and bees
Pumpkin, papaya, peanuts, peas,
Surely be free of disease

Care for plantae for years two
They'll care forever for you
Fair fantastic fragrant friends
Helping hands when the world offends

Fruits medicines grains
Nuts to strengthen the brains
Hilarious oxygen full of life
Don't be so mean to kill with knife

Let's adorn wreathe 'Her' green
In ravishing colours paint the screen
Hear Her music let Her sing
Let Her dance laugh and swing!!

Sonia
PGT English
GMSSSS Bahadurgarh, Jhajjar

My Kitchen Garden

With all the talk of saying no to pesticides and yes to organic food and given my love for experimenting, I decided to take the plunge. My foray into Kitchen Gardening actually began early in life where I had seen home grown vegetables being lovingly cultivated in my parental home. I can safely say that I was not a new comer in this field but yes the energy and enthusiasm was new. Also experimental was the mood.

Kitchen gardens are manageable areas of arable pieces of land, now found in pots, trays and glass jars. Roof tops serve well for certain vegetables. Conventionally the backyard served well as a kitchen garden.

Tomatoes, bringal and lady finger are a constant adding both colour and flavour. Green, leafy, full of medicinal value and a treat to the nostrils with its musk has been mint and coriander. Other popular leafy plants holding a place of pride is spinach and lettuce.

Legumes such as beans do well in the kitchen garden as does capsicum whether it is green pepper or bell pepper. Carrots as a shallot and the cauliflower opening up are all here. Gourds, so many of them, are climbers and need support but they do support our health.

Ginger, garlic, onions and potatoes

are root plants. My mood allowed me to cut out the eye of the potato and plant it in my kitchen garden, cut one onion into pieces and plant it in the soil. Flakes of garlic too went into the soil in the same way.

My urban living should not be a hindrance in my kitchen as when there is lack of arable land and space, I practise Hydroponics. Here water rich in minerals such as nitrogen, potassium and magnesium is used. I start, with a basic apparatus. A large tray, a PVC pipe, a small pump, coconut husk dividing the reservoir and the plant. The trickling water provides nutrients and oxygen and the unused water goes into the reservoir to be recycled. This becomes a step towards sustainability. My lettuce, tomatoes, basil, bell pepper and tomatoes come from here.

After growing wheat grass in a pot near the window sill, I decide to grow more Micro-Greens. A cost effective way to boost nutrients, it is fun to grow as well. The best results are found in radish, carrots, beetroot, celery, dill and mustard. A glass jar with some soil, dilute the soil and sprinkle seeds, cover it with a eco -friendly grow mat such as hemp, jute or coconut husk and place the jar on the kitchen window. Do water it daily and when the seeds sprout , remove the cover and allow the micro greens to grow. Cut and use in salads, soups and sandwiches. Micro greens may be had in cooked form too.

So what if I do not have a patch of land to grow vegetables, I live in the City after all. I will grow vertically and who says hanging baskets cannot have vegetables growing in them. On a shelf , pots or crates can be put with soil . But do remember that the pots become being laden with soil and moisture. Heat from the wall will be good for

the mini crop. Under a cool thatch strawberries and mushrooms may be grown.

About the Green House effect, I did read. So a Glass House is created and I can have my summer vegetables in winter as well. All this in my backyard. I have created a Thatch roof and the thatch is always kept moist. Beneath it grows my luscious strawberry and healthy mushrooms. But strawberries need sunlight whereas mushroom do not need it. Both are fast growing plants and need cool climes so winter months are best for it.

With so many vegetables, why should fruits be left behind. The humble lemon tree is quite sturdy , gives a good crop which has a host of health benefits. Papaya is yet another fruit tree which grows easily in my home , giving a good yield. Now my Mallika and Amrapali do give a me a taste of the King of fruits.

I have even tried growing a few stalks of sugarcane and maize. Some legumes of pulses in the hedges and all this because of my experimental mood. Growing something is creation and the sense of satisfaction is immense.

My Kitchen Garden tour is now complete and I do hope you enjoyed the hands on experience. Now time to create manure, definely Green manure made from dung . I will add some coco peat. My compost pit has all my kitchen wastes all recylced in the pit and ready to give back to nature. I do share my produce with friends.

Ms. Rupam Jha
Subject Specialist
SCERT Haryana, Gurugram

COUNSELLING AND GUIDANCE

The new 21st century skill to be initiated and utilized in Education

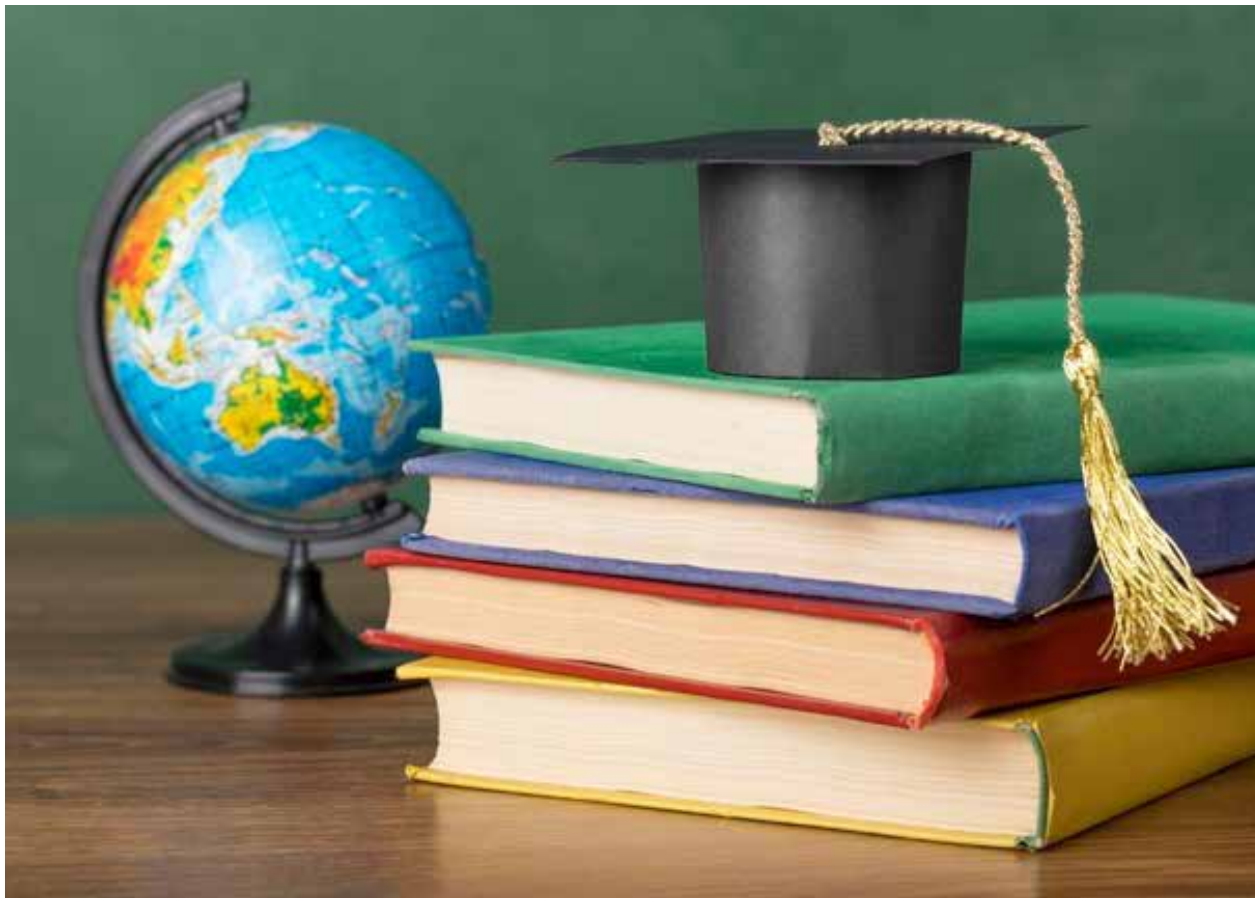

Deepak Kumar

We all know that man is a social animal. He cannot survive alone. He needs regular support and cooperation to overcome his problems and to lead a happy, healthy and fulfilling quality life.

There may emerge major psychological problems and issues if this support and cooperation is not provided.

In ancient times this support and cooperation was quite evident in the joint family setup. But now days due to fast moving and stressful life style and working conditions, we tend to lead such a life that lacks leisure time and sharing of feelings with each other. The environmental and technological changes have brought about lots of adjustment problems. Prosperity and materialism are slowly becoming equal to a hope for a better life and a means of searching for happiness. Ultimately, we are facing challenges and stress all alone and find it difficult to move on if somehow, we get stuck somewhere.

As far as the education system is concerned, today most societies characterize adolescence with immaturity and perceive the need for counselling and guidance to make adolescents responsible members of the community. Students lack key skills to decide and achieve their goals. Lack of proper understanding of children and adolescents needs, faulty child rearing practices, ignorance and lack of quality time are some major factors responsible that inhibit the holistic development of a child in all developmental stages. In such conditions counselling and guidance have become the most required service.

The Ministry of Education has recommended these services for all the students in National Education Policy (NEP) 2020 so that all the students can choose a career of their own choice. These services will assist and motivate them to identify and

explore their potential and hidden skills and creativity. It will help them identify the practical aspect of life and career in accordance with their aptitude. Besides, the students may seek professional help if they face any psychological problem at any point of time as and when required.

In the present educational state of affairs, there is a huge shortage of these services especially in rural government schools. It is not possible for the administration and the authorities to appoint a well-trained and qualified counsellor or psychologist in each and every school but the teachers may be trained to develop professional attitude, knowledge and skills to tackle day to day problems of students. Some key counselling skills like Non-Judgmental Attitude, Unconditional Positive Regards of the Child, Respect of individuality, Genuine Concern, Confidentiality, Resourcefulness and professionalism may be demonstrated during these training programs.

To achieve the sole objective of Education i.e. Holistic Development, Counselling and guidance services must be initiated without any further delay.

Lecturer in Psychology
DIET Hussainpur, Rewari

The Match

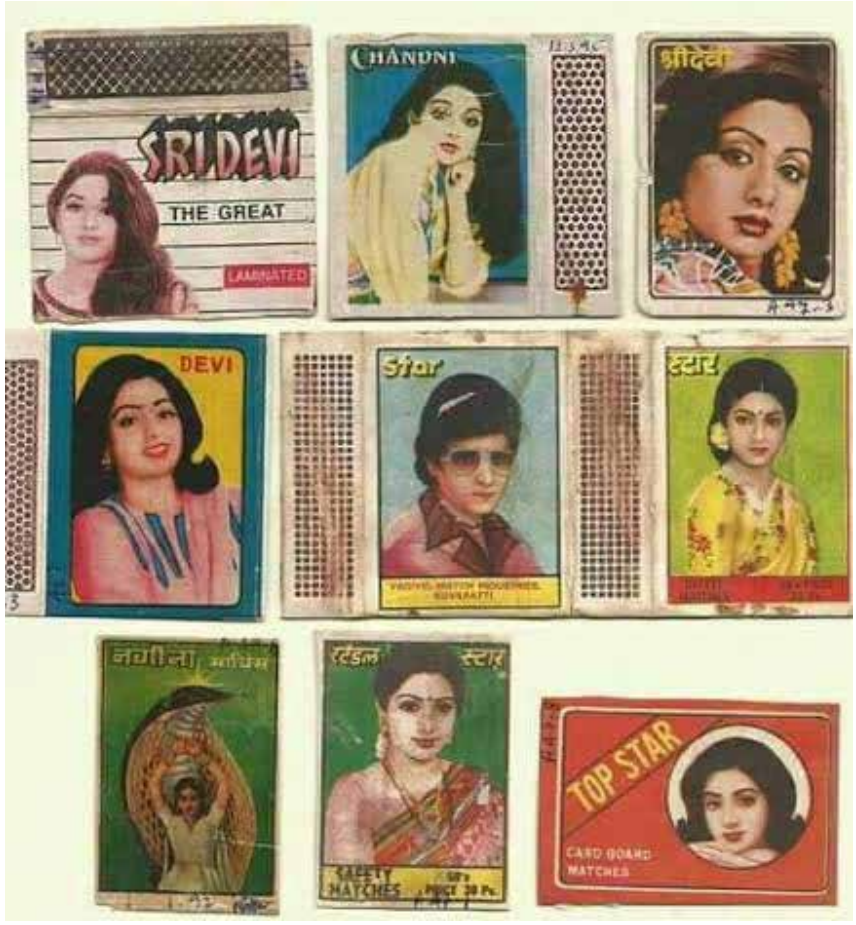

Dr. Deviyani Singh

Once a Matchbox and Lighter had a terrible fight.

"You're so full of gas", ignited the Matchbox.

"Oh, you old fashioned stick in the box. No wonder you don't like me." The Lighter flicked back.

"Well, it's because you're a show off, always trying to raise your flame higher than required with that ugly hissing sound."

"Oh, and what about you? Have you realized how any times you fail? Your head is so full of toxic powder you light and fizzle off too fast before you can be of any use."

"At least I don't overheat and burn my human's hands like you." The matchbox was

really getting heated up now as the Lighter was rubbing him on the wrong side.

"And what about those pale weak little stick fellas of yours whose backs keep snapping in between. What use are they to anyone?"

"It's ok, some brave little soldiers die in every fight." The Matchbox said in defence.

"Ohh touchy, are we? Box indeed! More like a coffin,I think. All your match heads keep falling off, rolling like heads chopped off by a guillotine and they can never light up again."

"Ok, so you really think you're superior? Just come into the kitchen for a moment."

The Lighter followed the Matchbox who went and asked the Gas Lighter's opinion. He was hung up in a peaceful slumber in his stand. He yawned and drawled,

"Well sometimes when I don't light up the gas like expected, it's always the Matchbox that's used instead of a Lighter that would burn human hands."

"There you go, got your answer? You are no good except for lighting cancerous cigarettes!" Scoffed the Matchbox.

"Oh no that's not true, Maaji uses me to light the puja Agarbati and Diyas many times."

"Maybe so occasionally, but you know whenever there is an important Havan in the house a Matchbox is preferred any day. I mean can you even imagine Panditji using a Lighter!" The Matchbox rattled with laughter.

"All the young ones prefer me though, especially on birthdays, no one has the patience to use a short-flamed Matchbox like you to light the pretty birthday candles"

"So, what, I know Maaji prefers me, especially in the good old days when I had so many lovely actresses' pics on my cover. I don't suppose you will ever have that old world charm like me, you flashy thing."

"Well flashy all right, in case you didn't know I'm also a collector's item and status symbol unlike you. Ever hear of Zippo lighters? My very classy cousins."

"Who cares about classy, I'm more popular as even the poor can afford me. Your cousins, they just lie around in drawers and are taken out only for show."

"Hah! So, what. Do you know why no one takes you camping? Just add a little moisture to the air and you are gone for good. I'm more reliable even in rain. I'm waterproof and can save the day with a warm fire."

"Yes, that all maybe true, but I'm eco-friendly and bio degradable. When I die and I'm thrown away I will merge with Mother Earth because I'm made of wood. But you're just a little piece of discarded florescent plastic or rusted metal that will pollute the Earth for ever more.

And thus ended their little argument from flames to dust.

deviyanisingh@gmail.com

Prison of the Mind

I'm locked in a Castle of astral realms,
Of secret crypts where no sunlight streams.
The mighty prison walls veil all the screams,
That emanate from dungeons of distraught dreams.

It matters not if moss and ivy creep over the walls in eerie green,
The stony brook babbles over cobbles to become a stream.
No Bastille can break my self esteem,
No prison can contain me if I dare to dream.

My mind battles to break free,
Of invisible walls that surround me.
Then over my life I reign supreme,
And in my Castle I'm still a Queen.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Courses After +2

When a student goes to 11th grade, he starts thinking of the right courses after 12th standard, whether they should choose the Science Stream, Arts Stream or Commerce Stream.

Choosing the right Courses after completing 12th standard is very crucial as it is going to determine the career of the student in the future.

This is a very important and challenging decision to be made by the students and parents while choosing the correct stream for their career.

Above all, they get confused about What to do after 12th?

The selected stream can either make him/her reach to the Top of the world or else it will destroy the whole career if it is not determined correctly.

Career choice – is one of the most important milestones in a student's life which involves self-analysis, critical thinking and final decision making.

The choice of the career is guided and influenced by views of your parents, friends, relatives, teachers and the media.

Today with a wide variety of choice and an increasing competition, you need to plan your career wisely and at the earliest.

You should know your abilities, interests, aptitudes, and personality before choosing a stream, a training course or a career after you completed 12th standard.

Besides these, you should gather information regarding different courses after 12th standard, career options, the eligibility criteria, the premier institutions/universities, and other criteria of selection and the market demands.

Different Courses after 12th Standard:

Here we have listed most successful career and job oriented courses after completing 12th which can easily be opted.This article also gives you the course details and career options mentioned in our List.The career is broadly classified into following streams:

1. Arts

2. Commerce
3. Engineering
4. Management
5. Medical
6. Science

1.) Arts & Humanities Stream:

When we talk about Courses after 12th in the stream of Arts & Humanities contains a broad range of Career oriented courses.

This field has the variability of job and business centrical courses such as a movie, media, animation, cultural arts, choreography, painting, photography, and cooking.

These are some of the most effective career options in arts and science for the students after 12th. Humanities subjects study how these concepts have affected human culture and society. However, there's heaps of crossover between the 2 areas still, like social sciences like anthropology and subjects like law and fashionable languages are generally additionally considered to be humanities.

1.1.) Law Courses:

Law courses is the only degree course provided in India in legal education as it is the fundamental part of our constitution. It is one of the most popular courses among the large number of students

1.2.) Animation & Multimedia:

Animation Courses after 12th offers a broad range of career-centric courses in 3D animation, VFX, multimedia, graphic & web designing, gaming, and media & entertainment

1.3.) Fashion Technology:

In the emerging modern world, the fashion has become a part of our daily life. The trend in fashion is changing with the improvement in human culture. Various industries have been established with the adverse growth of fashion technology. There is a high demand for fashion experts; not only in India but also in abroad.

1.4.) Visual Arts:

The visual arts are art forms such as ceramics, drawing, painting, sculpture, printmaking, design, crafts, photography, video, filmmaking, literature and architecture. Many artistic disciplines (performing arts, conceptual art, textile arts) involve aspects of the visual arts as well as arts of other types.

1.5.) Literary Arts:

Literary art is a branch of fine arts. It is famous for those students who are creative, imaginative and can convert their imagination and thoughts into textual form.

1.6.) Aviation & Hospitality Management:

The students who are interested in writing can choose the career in literary arts.

Aviation is one of the most exciting career fields among the girls. Anyone who wishes to fly in the sky and serve the people with the smile, this job can fulfill their dream. Aviation and hospitality management cover the ground and air courses of air hostess and flight steward. It involves the hospitality, customer handling, travel & tourism, and aircraft basic training.

1.7.) Hotel Management & Catering:

Bachelor of Science in Hospitality & Catering Management also known as BSc. HCM is a study of Hotel.

This degree is also known as BHM (Bachelor of Hospitality Management) or (Bachelor of Hotel Management) which is the very popular academic degree in all over the world.

1.8.) Film and Mass Communication:

Other best courses after 12th standard lie in the field of digital media communications such as Journalism and Mass Communications, Public Relations and Corporate Communications.

It also includes various career opportunities in movie, television, and Digital Video Production, the advertising & Marketing Communications and Communication for Development (C4D), etc. It is a full-time, post-graduate diploma course of 10 months duration. Completing this course can help you get placed in Digital Marketing jobs related industry.

1.9.) Languages:

Due to Globalization of business and corporates, lots of MNCs need people who know different international languages. Therefor this is also a good option which helps students to have excellent career opportunities. Students who are struggling with what to do after 12th can make use of this opportunity for their career.

1.10.) Bachelor of Arts:

Students who have passed class 12th in arts keeps Bachelor of Arts (BA) as one of the career options to take admission in as it provides a diverse number of choices to select from.

2.) Commerce Stream:

Commerce is the most important branch of education system which deals with Business, legal, finance, Banking, technological and political aspects.

The Bachelor of Commerce program prepares you for a career in accounting, banking, financial management, information systems, and management. Compulsory courses after 12th in the degree build a solid foundation of business skills that you will apply to many decisions and issues in the contemporary business environment. There are various courses after 12th in Commerce like BBA,BMS,BAF,BBS,B.com etc. Here we will discuss some professional courses which are having high demand in the job oriented market.

2.1.) B.Com:

The Bachelor of Commerce (B.Com) is a degree course done by a large number of students after their class 12th. The B.Com degree gives you the complete overview of overall business scenario, this includes buying and selling of goods and also helps in understanding the underlining principles of accounts and economics.

2.2.) BBA:

The Bachelor of Business Administration (BBA or B.B.A.) is a bachelor's degree in commerce and business administration. The degree is conferred after four years of full-time study in one or more areas of business concentrations.

2.3.) CA:

Chartered accountancy was established in 1854 in Britain. It is the core activity of the firm. A CA is the member of ICAI (Indian Chartered Accountants Institute) and deals with the financial management and carries out the financial audits. A CA works as a private advisor for a organization.

2.4.) B.M.S:

Bachelor of Management Studies or BMS is an undergraduate program for management study offered by many universities throughout the world. The course allows you to obtain the knowledge and skills needed to assume leadership positions in a wide range of organizations.

2.5.) B.B.S:

The Bachelor of Business Studies (BBS) is a three years undergraduate degree course which facilitates the integration of academic knowledge and practical work experience.

2.6.) CS:

Company Secretary deals with the legal activities of any business. It is a corporate professional course. The role of a company secretary is to keep the records, advice, tax returns and evaluate the legal aspects of the organization.

3.) Engineering and Technology Stream:

Another common course after 12th is the Engineering, which is the application of mathematics and scientific, economic, social, and

practical knowledge. This helps to invent, innovate, design, build, maintain, research, and improve structures, machines, tools, systems, components, materials, processes, solutions, and organizations. It is the best-growing career option after 12th for the students of Science with Maths. Below is the list of few best courses after 12th in Engineering stream.

3.1.) Computer Science and Engineering:

Computer science is the study of the theory, experimentation, and engineering that form the basis for the design and use of computers. An alternate more succinct definition of computer science is the study of automating algorithmic processes that scale.

3.2.) Civil Engineering:

Civil engineering is a professional engineering discipline that deals with the design, construction, and maintenance of the physical and naturally built environment, including works like roads, bridges, canals, dams, and buildings.

3.3.) Mechanical Engineering:

Mechanical engineering is the discipline that applies the principles of engineering, physics, and materials science for the design, analysis, manufacturing, and maintenance of of mechanical systems. It is the branch of engineering that involves the design, production, and operation of machinery.

3.4.) Electrical and Electronics Engineering:

Electrical engineering is the very popular field of engineering. It provides the knowledge of distribution and utilization of energy that runs our world. It is the field of great scientist "Thomas Alva Edison". Electrical engineering is a field of engineering that generally deals with the study and application of electricity, electronics, and electromagnetism.

3.5.) Electronics and Communication Engineering:

Electronics & Communication Engineering is one of the fastest growing disciplines of engineering. ECE is an interface of information technology and chip level hardware. It provides the knowledge of electronics devices and software application. All telecom and software industries are the work fields for the ECE engineers.

3.6.) Biotechnology:

Biotechnology is the use of living systems and organisms to develop or make products, or any technological application that uses biological systems, living organisms, or derivatives thereof to make or modify products or processes for specific use.

3.7.) Aeronautical Engineering:

Aerospace engineering is the primary field of engineering concerned with the development of aircraft and spacecraft. It has two major and overlapping branches: aeronautical engineering and astronautical engineering.

3.8.) Agricultural Engineering:

It is the branch of engineering that deals with the design of farm machinery, the location and planning of farm structures, farm drainage, soil management, and erosion control, water supply and irrigation, rural electrification and the processing of agricultural products.

3.9.) Petroleum Engineering:

Petroleum Engineering is a field of engineering concerned with the activities related to the production of hydrocarbons which can be either crude oil or natural gas. It is a well-paid engineering course after 12th. Petroleum engineers can work with the drilling plant, rigs, oil industries, petroleum refineries, and related organizations.

3.10.) Food Technology:

Food Technology is the application of food science to the selection, preservation, processing, packaging, distribution, and use of safe food.

3.11.) Textile Engineering:

Textile Engineering deals with the principles of control and design of fiber, apparel process, and textile products. It is one of the top positioned engineering branches.

3.12.) Chemical Engineering:

It is the branch of engineering that applies physical sciences (physics and chemistry), life sciences (microbiology and biochemistry), together with applied mathematics and economics to produce, transform, transport, and properly use chemicals, materials, and energy.

https://www.careerspark.org/post/top-50-courses-after-12th-career-salary-and-job-opportunities

Amazing Facts

1. **The popular chocolate bar "Three Musketeers" got its name because when it was first introduced in 1932 there were three individual bars. The flavours were strawberry, chocolate, and vanilla.**
2. In Denmark, people eat about 36 pounds of candy a year. The highest consumption of candy of any country.
3. John Van Wormer invented paper milk cartons after dropping a bottle of milk one morning. The bottle broke spilling the milk everywhere. That annoyance was enough for Van Wormer to come up with the idea.
4. The long fibres that are found in bananas are excellent in making paper. The long fibres that are found in the banana plant can make the banana fibre paper approximately 3000 times stronger than regular paper.
5. The state of Tennessee was known as Franklin before 1796.
6. Over 90% of poison exposures occur in homes.
7. Honolulu, Hawaii boasts the only royal palace in the United States of America.
8. Seven asteroids were especially named for the Challenger astronauts who were killed in the 1986 failed launch of the space shuttle.
9. The production of toilet paper in China began in 1391, which was used for the Emperors.
10. The reason firehouses have circular stairways is from the days of yore when the engines were pulled by horses. The horses were stabled on the ground floor and figured out how to walk up straight staircases.
11. The cigarette lighter was invented before the match.
12. It would take approximately twenty-four trees that are on average six to eight inches in diameter to produce one ton of newsprint for the Sunday edition of the New York Times.
13. The tuatara lizard of New Zealand has three eyes, two in the center of its head and one on the top of its head.
14. The loss of eyelashes is referred to as madarosis.
15. Every photograph of the first American atomic bomb detonation was taken by Harold Edgerton.
16. In 1864, A Quebec farmer found a frog inside a hailstone.
17. Actor Sylvester Stallone once had a job as a lion cage cleaner.
18. In the marriage ceremony of the Ancient Inca Indians of Peru, the couple was considered officially wed when they took off their sandals and handed them to each other.
19. Maine is the only state whose name is just one syllable.
20. Some birds have been know to put ants into their feathers because the ants squirt formic acid, which kills parasites.
21. On average, 42,000 balls are used and 650 matches are played at the annual Wimbledon tennis tournament.
22. The WD in WD-40 stands for Water Displacer.
23. Lachanophobia is the fear of vegetables.
24. Lake Baikal, in Siberia, is the deepest lake in the world.
25. India has the most post offices in the world.
26. Men are able to read fine print better than women can.
27. Spiders usually have eight eyes, but still, they cannot see that well.
28. One ragweed plant can release as many as a million grains of pollen in one day.
29. The Central African raffia palm is known to have the longest leaves. The leaves can measure up to 82.5 feet long.

https://greatfacts.com/

1. The Aquino, Arroyo and Cojuangco families have in recent times ruled what country? **The Philippines**
2. (As at 2012, and here translated into English) it is illegal to use the slogan 'One People, one Empire, one Leader' in what country? **Germany**
3. As at 2012 what is the oldest age of a British monarch on taking the throne: 38; 52; 64; or 85?64 Bonus point - who was it? **William IV**
4. In the human body the hypophysis is better known as what gland?**Pituitary gland**
5. The Bedouin people are so named because they originated in: Forest; Desert; Grasslands; or Lakelands?**Desert**
6. What English word from French meaning literally 'cold blood' refers to (a person's) composure under pressure?**Sangfroid**
7. The deeply inaccessible lakes Vostok, Whillans, and Ellsworth are in the: Amazon rainforest; Russian tundra; Australian outback; or South Pole?**South Pole**
8. Redolent means: Unnecessary; Continuous; Glowing; or Odorous?**Odorous**
9. Near Field Communication technology (NFC) is a set of standards for: Hot-air ballooning; Smartphones; Border control; or Satnav?**Smartphones**
10. UK road signs for tourist destinations and places of interest are normally a white icon on what colour background?**Brown**
11. The 1805 Battle of Austerlitz was a major victory for which commander?**Napoleon**
12. What 'white-tail' species grew in such numbers in US Washington DC parklands as to prompt radical control measures in 2012: Rats; Snakes; Cats; Rabbits; Beetles; Deer; Eagles; Goats; Weasels; Squirrels; or Porcupines?**Deer**
13. What nationality (at 2012, and at founding) are the corporations Samsung, Hyundai and LG?**South Korean**
14. Spell the word (meaning gently, quietly, hardly noticeably): Subtly; Subtley; Subtlely; or Subtely?**Subtly**
15. What film won five Oscars in 2012 including Best Actor, Original Score and Costume Design?**The Artist**
16. In Feb 2012 British cruise ships Adonia and Star Princess were refused entry to Ushuaia port in the southern tip of which country?**Argentina**
17. Moody's, Fitch, and Standard and Poor's are leaders in what market: Care homes; Outdooor clothing; Credit ratings; or Cider?**Credit ratings**
18. What 'discriminatory' personal title did the French government decree in Feb 2012 should be removed from official forms?**Mademoiselle**
19. Brent Crude is the common trading classification for oil sourced from the bed of what sea?**North Sea**
20. Violent government attacks on pro-democracy protests including besiegement of Homs city occurred in which country, 2011-12?**Syria**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-426-general-knowledge/

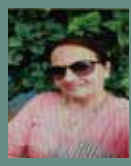

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

सौभाग्य से 'शिक्षा सारथी' का जुलाई 2022 का अंक पढ़ने को मिला। शीर्षक पढ़ते ही अंदर के आलेख पढ़ने को मन मचलने लगा। पंचकूला में संपन्न हुए खेलो इंडिया यूथ गेम्स के बारे में पढ़कर अपने राज्य और शिक्षा विभाग पर गर्व महसूस हुआ। डॉ.प्रदीप राठौर जी के संपादकीय आलेख बहुत ज्ञानवर्धक लगे। खेलो इंडिया के श्रेष्ठ प्रदर्शन से प्रभावित होकर पूरे भारत में हरियाणा की खेल नीति और पुरस्कार स्वरूप दी जाने वाली राशि की प्रशंसा हुई। इसके लिए माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी बधाई के पात्र हैं। अंक पढ़कर जानकारी हुई कि प्रदेश में अब 1100 खेल नर्सरियाँ खोली जाएँगी, जो नवोदित खिलाड़ियों के सपनों को पंख लगाने का काम करेंगी। सरकारी स्कूलों के बच्चों ने भी खेलो इंडिया में धाकड़ प्रदर्शन किया। सत्यवीर नाहड़िया के लिखे दोनों आलेख हमेशा की तरह ज्ञानवर्धक थे। डॉ.ओमप्रकाश कादयान का आलेख पढ़कर तारादेवी स्काउट प्रशिक्षण केंद्र में कैंपिंग करने को मन मयूर नाचने लगा। खेल-खेल में विज्ञान हमेशा की तरह वैज्ञानिक जानकारी से ओतप्रोत था। पवन कुमार स्वामी के लिखे आलेख 'विज्ञान अध्यापक कमल शर्माः सच्चे शिक्षा सारथी' को पढ़कर लगा कि इस प्रकार की शख्सियत हमारे जीवन में प्रेरणास्रोत का काम करती हैं। 'बाल सारथी' बहुत रोचक और ज्ञानवर्धक लगी। आर्टिकल, 'पर्सनेलिटी डिवेल्पमैंट' भी बहुत ही अच्छा लगा। एक अच्छे शिक्षक की परिभाषा को मुखरित करता, संयुक्त निदेशक श्री दिलबाग सिंह का आलेख, शिक्षक का महत्त्व पढ़कर हमें अपने पेशे पर गर्व महसूस हुआ। खेलो इंडिया यूथ गेम्स की बधाइयों से सराबोर संपूर्ण अंक के लिए संपादक मंडल को बधाई।

नीलम देवी प्रवक्ता संस्कृत
रावमावि गिगनाऊ, लोहारू, भिवानी, हरियाणा

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का जुलाई-2022 अंक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। खेलों पर केंद्रित इस अंक को पढ़कर स्कूली स्तर के विद्यार्थियों को खेलों से जोड़ने व उन्हें प्रोत्साहित करने वाली खेल-नीति की जानकारी मिली। यह जानकर हर्ष हुआ कि अनेक साधारण परिवारों से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों ने 'खेलो इंडिया यूथ गेम्स' में बेहतरीन प्रदर्शन कर विभाग व प्रदेश का नाम रोशन किया। डॉ.प्रदीप राठौर का संपादकीय हमेशा प्रेरणाओं से भरा रहता है। डॉ.ओमप्रकाश कादयान ने अपने लेख में तारादेवी स्काउट शिविर जैसा शब्द चित्र अंकित किया उसे पढ़कर ही हमें इस पर्वतीय स्थल पर घूमने जैसी अनुभूति हो गई। अनुराधा वर्मा का लेख 'अधिगम को प्रभावी एवं रुचिकर बनाता डिजिटल बोर्ड' तथा दर्शन लाल बवेजा का लेख 'खेल-खेल में विज्ञान' भी बहुत पसंद आए। मेरी कविता 'मंज़िल दूर नहीं' को भी पत्रिका में स्थान दिया गया, इसके लिए धन्यवाद। कुल मिलाकर एक सफल अंक के लिए संपादक मंडल को बधाई।

सुरेश राणा
हिंदी प्राध्यापक
रावमा विद्यालय कमालपुर
जिला-कैथल, हरियाणा

गुरुवर

मन है आज मेरा बहुत हर्षित पुलकित,
गुरु के चरणों में हैं पुष्प श्रद्धा के अर्पित।

आपसे ही महकता है यह सारा संसार,
गुरुवर आप ही हैं इस सृष्टि के आधार।

हे प्रिय! गुरुवर आपके उपदेश और वचन,
करते हैं इस सारे जग- संसार को चमन।

आपकी महत्ता का मैं क्या बखान करूँ?
आपके गौरव का कैसे मैं गुणगान करूँ?

माता-पिता से पहले आपका स्थान आता है,
आपके आगे ईश्वर भी नतमस्तक हो जाता है।

डरती है मेरी कलम आपके लिये लिखने में,
कि कोई भूल न हो जाये शब्दों को गढ़ने में।

हे गुरुवर! नवनीत करता है बार-बार वंदन,
आपके चरण स्पर्श से मैं हो जाता हूँ सम चंदन।

नवनीत कुमार शुक्ल (स0 अ0)
प्राथमिक विद्यालय भैरवाँ द्वितीय,
शि0क्षे0- हसवा, जनपद- फतेहपुर (उप्र)

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

झण्डा ऊँचा रहे हमारा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

सदा शक्ति सरसाने वाला
प्रेम सुधा बरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला
मातृभूमि का तन-मन सारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

स्वतंत्रता के भीषण रण में
रख कर जोश बढ़े क्षण-क्षण में
काँपे शत्रु देखकर मन में
मिट जाये भय संकट सारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

इस झँडे के नीचे निर्भय
लें स्वराज यह अविचल निश्चय
बोलें भारत माता की जय
स्वतंत्रता है ध्येय हमारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

आओ प्यारे वीरो आओ
देश धर्म पर बलि-बलि जाओ
एक साथ सब मिल कर गाओ
प्यारा भारत देश हमारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

इसकी शान न जाने पाए
चाहे जान भले ही जाए
विश्व विजय कर के दिखलाएँ
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा
झण्डा ऊँचा रहे हमारा

श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

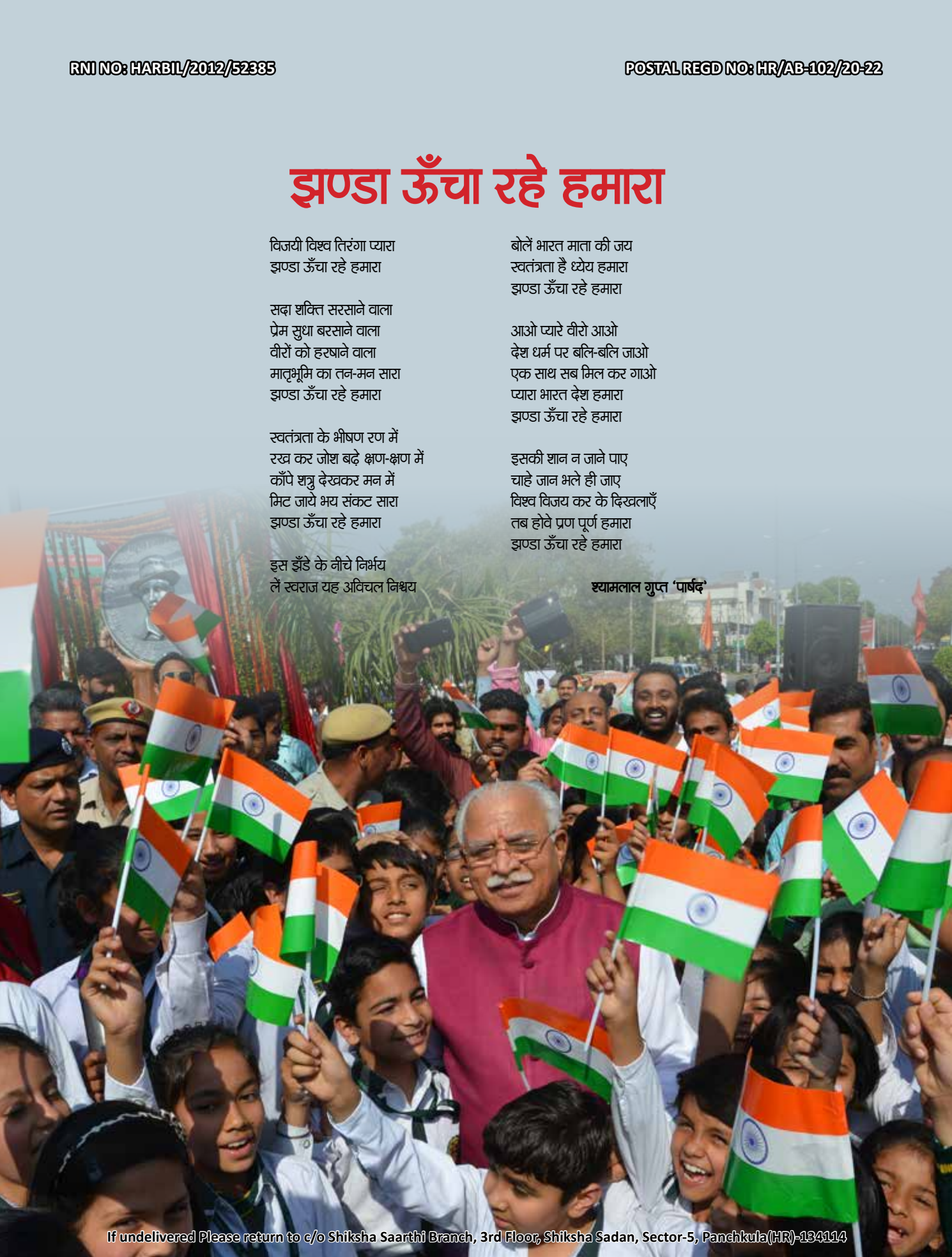

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114